हमको ऐसी घाटी में कहां छोड़कर चल दिए, जहां न आदमी है और न आदमी का वच्चा और न कोई मूनिस व ग़मख़्वार। हाजरा बराबर यह कहती जाती थीं, मगर इब्राहीम ख़ामोश चले जा रहे थे। आख़िर हाजरा ने मालूम किया क्या तेरे अल्लाह ने तुझको यह हुक्म दिया है? तब हज़रत इब्राहीम ने फ़रमायाः हां! अल्लाह के हुक्म से है।

हाजरा ने जब यह सुना तो कहने लगीं, अगर यह अल्लाह का हुक्म है तो बेशक वह हम को ज़ाया और बर्बाद नहीं करेगा और फिर वापस लौट आईं। इब्राहीम ﷺ चलते-चलते जब एक टीले पर ऐसी जगह पहुंचे कि उनके घर वाले निगाह से ओझल हो गए, तो उस ओर जहां काबा है, रुख़ किया और हाथ उठाकर यह दुआ मांगी–

तर्जुमा–'ऐ हम सबके परवरदिगार! (तू देख रहा है कि) एक ऐसे मैदान में जहां खेती का नाम व निशान नहीं, मैंने अपनी कुछ औलाद तेरे मोहतरम घर के पास लाकर बसाई है कि नमाज़ क़ायम रखें (ताकि यह मोहतरम घर एक ख़ुदा की इबादत करने वालों से ख़ाली न रहे) पस तू (अपने फ़ज़्ल व करम से) ऐसा कर कि लोगों के दिल उनकी तरफ़ मायल हो जाएं और उनके लिए ज़मीन की पैदावार से रिज़्क़ का सामान मुहैया कर दे, ताकि तेरे शुक्रगुज़ार हों।

(इब्राहीम 14 : 37)

'हाजरा कुछ दिनों तक मशक से पानी और खुरजी से खजूरें खातीं और इस्माईल को दूध पिलाती रहीं, लेकिन वह वक़्त भी आ गया कि पानी रहा न खजूरें, तब वह सख़्त परेशान हुईं। चूंकि वह भूखी-प्यासी थीं, इसलिए दूध भी न उतरता था और बच्चा भी भूखा-प्यासा रहने लगा, जब हालत बिगड़ने लगी और बच्चा बेताब होने लगा, तो हाजरा इस्माईल को छोड़कर दूर जा बैठीं, ताकि इस हालते ज़ार में उसको अपनी आंख से न देखें। कुछ सोचकर क़रीब की पहाड़ी सफ़ा पर चढ़ीं कि शायद कोई अल्लाह का बन्दा नज़र आ जाए या पानी नज़र आ जाए, मगर कुछ नज़र न आया। फिर बच्चे की मुहब्बत में दौड़कर घाटी मे आ गईं, इसके बाद दूसरी ओर की पहाड़ी मर्वः पर चढ़ गई और वहां भी जब कुछ नज़र न आया, तो फिर तेज़ी से लौट कर घाटी में बच्चे के पास आ गईं और इस तरह सात बार किया। नबी अकरम

Copyright OfflineDeeniApp

ﷺ ने उस जगह पहुंच कर फ़रमाया कि यही वह 'सफ़ा और मर्वः के बीच की सई' है जो हज में लोग करते हैं। आख़िर में वह मरवः पर थीं तो कानों में एक आवाज़ आई, चौंकीं और दिल में कहने लगीं कि कोई पुकारता है, कान लगाया, तो फिर आवाज़ आई। हाजरा कहने लगीं, अगर तुम मदद कर सकते हो, तो सामने आओ, तुम्हारी आवाज़ सुनी गई, देखा तो अल्लाह का फ़रिश्ता (जिब्रील) है। फ़रिश्ते ने अपना पैर (या एड़) उस जगह मारा, जहां ज़मज़म है, उस जगह पानी उबलने लगा। हाजरा ने यह देखा तो पानी के चारों ओर बाड़ बनाने लगीं, मगर पानी बराबर उबलता रहा। उस जगह पहुंच कर नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया, अल्लाह तआ़ला उम्मे इस्माईल पर रहम करे, अगर वह ज़मज़म को इस तरह न रोकतीं और उसके चारों तरफ़ बाड़ न लगातीं, तो आज वह ज़बरदस्त चश्मा होता। हाजरा ने पानी पिया और फिर इस्माईल को दूध पिलाया। फ़रिश्ते ने हाजरा से कहा, ख़ौफ़ और ग़म न कर, अल्लाह तआ़ला तुझको और इस बच्चे को ज़ाया न करेगा। यह मुक़ाम 'बैतुल्लाह' है, जिसकी तामीर इस बच्चे (इस्माईल) और इसके बाप इब्राहीम की क़िस्मत में मुक़द्दर हो चुकी है। इसलिए अल्लाह तआ़ला इस ख़ानदान को हलाक नहीं करेगा। बैतुल्लाह की यह जगह क़रीब की ज़मीन से नुमायां की, मगर पानी का सैलाब दाहिने-बाएं उस हिस्से को बराबर करता जा रहा था।

इसी दौरान बनी जुरहम का एक क़बीला इस घाटी के क़रीब आ ठहरा, देखा तो थोड़े से फ़ासले पर परिंदे उड़ रहे हैं। जुरहम ने कहा, यह पानी की निशानी है, जहां ज़रूर पानी मौजूद है। जुरहम ने भी क़ियाम की इजाज़त मांगी। हाजरा ने फ़रमाया, क़ियाम कर सकते हो, लेकिन पानी में मिल्कियत के हिस्सेदार नहीं हो सकते। जुरहम ने यह बात ख़ुशी से मंजूर कर ली। और वहीं मुक़ीम हो गए।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि हाजरा भी आपसी उन्स व मुहब्बत और साथ के लिए यह चाहती थीं कि कोई आकर यहां ठहरे, इसलिए उन्होंने ख़ुशी के साथ बनी जुरहम को क़ियाम की इजाज़त दे दी। जुरहम ने आदमी भेजकर अपने बाक़ी ख़ानदान वालों को भी बुला लिया और यहां मकान बनाकर रहने-सहने लगे। जहां ने इस्माईल भी रहते और खेलते और उनसे

Copyright OfflineDeeniApp

उनकी ज़ुबान सीखते। जब इस्माईल बड़े हो गए तो उनका तरीक़ा और अन्दाज़ और उनकी ख़ूबसूरती बनी जुरहम को बहुत भाई और उन्होंने अपने ख़ानदान की लड़की से उनकी शादी कर दी। इसके कुछ दिनों बाद हाजरा का इंतिक़ाल हो गया।'

यह लम्बी रिवायत बुख़ारी 'किताबुर्रोया और किताबुल अंबिया' में दो जगह नक़ल की गई है और दोनों से यही साबित होता है कि इस्माईल बंगर घाटी और बिन खेती की धरती मक्का में दूध पीते बच्चे की हालत में पहुंचे थे, लेकिन इब्राहीम ﷺ अगरचे हाजरा और इस्माईल को मक्का के बयाबान और सेहरा में छोड़ आए थे, लेकिन बाप थे, नबी और पैग़म्बर थे, बीवी और बेटे को कैसे भूल सकते थे और उनकी देख-भाल से कैसे बे-परवा हो सकते थे, वे बराबर इस बिना पानी के और हरियाली के मैदानी इलाक़े में आते रहते और अपने ख़ानदान की निगरानी करते कहते थे, जैसा कि इसी हदीस के आख़िरी हिस्से से ज़ाहिर होता है, जिसका ज़िक्र आगे आता है—

बहरहाल अगरचे क़ुरआन की किसी आयत से यह साबित नहीं होता कि इस्माईल (मक्का की) धरती पर किस सन में पहुंचाए गए, मगर ऊपर की रिवायतें कहती हैं कि यह ज़माना हज़रत इस्माईल के दूध पीने का ज़माना था और यही सही है।

नेक बीवी का किरदार

ऊपर ज़िक्र की गई हदीस में हज़रत इस्माईल की बीवियों के बारे में इस तरह बयान हुआ है—

'इब्राहीम बराबर अपने बाल-बच्चों को देखने आते रहते थे। एक बार तशरीफ़ लाए, तो इस्माईल घर पर न थे, उनकी बीवी से मालूम किया तो उन्होंने जवाब दिया कि रोज़ी की खोज में बाहर गए हैं। इब्राहीम ने मालूम किया, गुज़रान की क्या हालत है? वह कहने लगी, सख़्त मुसीबत और परेशानी में हैं और बड़े दुख और तक्लीफ़ में। इब्राहीम ने यह सुनकर फ़रमाया, इस्माईल से मेरा सलाम कह देना और कहना कि अपने दरवाज़े की चौखट तब्दील कर दो।

Copyright OfflineDeeniApp

इस्माईल ﷺ वापस आए तो इब्राहीम ﷺ के नूरे नुबूवत के असरात पाए, पूछा : कोई आदमी यहां आया था? बीवी ने सारा क़िस्सा सुनाया और पैग़ाम भी। इस्माईल ने फ़रमाया कि वह मेरे बाप इब्राहीम थे और उनका मश्विरा है कि तुझको तलाक़ दे दूं, इसलिए मैं तुझको जुदा करता हूं।

इस्माईल ने फिर दूसरी शादी कर ली। एक बार इब्राहीम फिर इस्माईल की ग़ैर-मौजूदगी में आए और उसी तरह उनकी बीवी से सवाल किए। बीवी ने कहा, अल्लाह का शुक्र व एहसान है, अच्छी तरह गुज़र रही है। मालूम हुआ, खाने को क्या मिलता है? इस्माईल की बीवी ने जवाब दिया, गोश्त। इब्राहीम ने पूछा और पीने को? उसने जवाब दिया, पानी। तब हज़रत इब्राहीम ने दुआ मांगी, अल्लाह! इनके गोश्त और पानी में बरकत अ़ता फ़रमा। और चलते हुए यह पैग़ाम दे गए कि अपने दरवाज़े की चौखट को मज़बूत रखना।

हज़रत इस्माईल ﷺ आए तो उनकी बीवी ने तमाम वाक़िया दोहराया और पैग़ाम भी सुनाया, इस्माईल ने फ़रमाया कि यह मेरे बाप इब्राहीम ﷺ थे और उनका पैग़ाम यह है कि तू मेरी ज़िंदगी भर जीवन-साथी रहे।'

ख़त्ना

तौरात के बयान के मुताबिक़ जब इब्राहीम की उम्र निन्नान्वे साल हुई और हज़रत इस्माईल ﷺ की तेरह साल, तो अल्लाह तआ़ला का हुक्म आया कि ख़त्ना करो। इब्राहीम ने हुक्म की तामील में पहले अपनी की और इसके बाद इस्माईल ﷺ और तमाम ख़ानाज़ादों (घरवालों) और ग़ुलामों की ख़त्ना कराई। यही ख़त्ने की रस्म आज भी इब्राहीमी मिल्लत का शिआ़र है और सुन्नते इ़ब्राहीमी के नाम से मशहूर है।

ज़िब्हे अज़ीम

अल्लाह के मुक़र्रब बन्दों को इम्तिहान व आज़माइश की सख़्त-से-सख़्त मंज़िलों से गुज़रना पड़ता है। पहली मंज़िल वह थी जब उनको आग में डाला गया, तो उस वक़्त उन्होंने जिस सब्र और अल्लाह के फ़ैसले पर राज़ी होने का सबूत दिया, वह उन्हीं का हिस्सा था। इसके बाद जब इस्माईल को और

Copyright OfflineDeeniApp

हाजरा को फ़ारान के बयाबान में छोड़ आने का हुक्म मिला, तो वह भी मामूली इम्तिहान न था। अब एक तीसरे इम्तिहान की तैयारी है जो पहले दोनों से भी ज़्यादा हिला देने वाला और जान लेने वाला इम्तिहान है, यही कि हज़रत इब्राहीम तीन रात बराबर ख़्वाब देखते हैं कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ इब्राहीम! तू हमारी राह में अपने इकलौते बेटे की क़ुरबानी दे।

नबियों का ख़्वाब 'सच्चा ख़्वाब' और वह्य इलाही होता है, इसलिए इब्राहीम रज़ा व तस्लीम बनकर तैयार हो गए कि अल्लाह के हुक्म की जल्द से जल्द तामील करें, चूंकि यह मामला अकेली अपनी ज़ात से मुताल्लिक़ न था, बल्कि इस आज़माइश का दूसरा हिस्सा वह 'बेटा' था, जिसकी क़ुरबानी का हुक्म दिया गया था, इसलिए बाप ने अपने बेटे को अपना ख़्वाब और अल्लाह का हुक्म सुनाया, बेटा इब्राहीम जैसे नबी और रसूल का बेटा था, तुरन्त हुक्म के आगे सर झुका दिया और कहने लगा, अगर अल्लाह की यही मर्ज़ी है, तो इन्शाअल्लाह आप मुझको सब्र करने वाला पाएंगे।

इस वात-चीत के बाद बाप-बेटे अपनी क़ुरबानी पेश करने के लिए जंगल रवाना हो गए। वाप ने बेटे की मर्ज़ी पाकर ज़िब्ह किए जाने वाले जानवर की तरह हाथ-पैर बांधे, छुरी को तेज़ किया और बेटे को पेशानी के बल पछाड़ कर ज़िब्ह करने को तैयार हो गए, फ़ौरन अल्लाह की वह्य इब्राहीम पर नाज़िल हुई, ऐ इब्राहीम! तूने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। बेशक यह बहुत सख़्त और कठिन आज़माइश थी। अव लड़के को छोड़ और तेरे पास जो यह मेंढा खड़ा है, उसको वेटे के बदले में ज़िब्ह कर, हम नेकों को इसी तरह नवाज़ा करते हैं। इब्राहीम ने पीछे मुड़कर देखा तो झाड़ी के क़रीब एक मेंढा खड़ा है। हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए उस मेंढे को ज़िब्ह क़िया।

यह वह 'क़ुरवानी' है जो अल्लाह की वारगाह में ऐसी मक़्बूल हुई कि यादगार के तौर पर हमेशा के लिए मिल्लते इब्राहीमी का शिआ़र क़रार पाई और आज ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ को तमाम इस्लामी दुनिया में यह 'शिआर' उसी तरह मनाया जाता है मगर इस पूरे वाक़िए से यह नहीं साबित हुआ कि इब्राहीम की औलाद में से 'ज़बीह' कौन है—इस्माईल या इस्हाक़? क़ुरआन ने अगरचे 'ज़बीह' का नाम लिया, मगर जिस तरह इस वाक़िए का

Copyright OfflineDeeniApp

तज़्किरा किया है, उससे बग़ैर किसी शक व शुबहे के यह ज़ाहिर होता है कि क़ुरआनी नस्स इस्माईल को ज़बीह बताती है और यही वाक़िया और हक़ीक़त है। सूरः अस-साफ़्फ़ात की आयतें 100 से 113 में इस वाक़िए को बयान किया गया है।

काबा की बुनियाद

हज़रत इब्राहीम ﷺ अगरचे फ़लस्तीन में ठहरे थे, मगर बराबर मक्का में हाजरा और इस्माईल को देखने आते रहते थे। इसी बीच इब्राहीम को अल्लाह का हुक्म हुआ कि 'अल्लाह के काबे' की तामीर करो। हज़रत ﷺ ने हज़रत इस्माईल ﷺ से ज़िक्र किया और दोनों बाब-बेटों ने अल्लाह के घर की तामीर शुरू कर दी।

एक रिवायत के मुताबिक़ बैतुल्लाह की सबसे पहली बुनियाद हज़रत आदम के हाथों रखी गई और अल्लाह के फ़रिश्तों ने उनको वह जगह बता दी थी, जहां काबे की तामीर होनी थी, मगर हज़ारों साल के हादसों ने उ:र्सा हुआ उसको बे-निशान कर दिया था, अलबत्ता अब भी वह एक टीला या उभरी हुई ज़मीन की शक्ल में मौजूद था। यही वह जगह है, जिसको अल्लाह की वह्य ने इब्राहीम ﷺ को बताया और उन्होंने इस्माईल की मदद से उसको खोदना शुरू किया तो पिछली तामीर की बुनियादें नज़र आने लगीं। इन्हीं बुनियादों पर बैतुल्लाह की तामीर की गई, अलबत्ता क़ुरआन पाक में पिछली हालत का कोई तज़्किरा नहीं है।

दूसरी तरफ़ यह हक़ीक़त है कि इस तामीर से पहले तमाम कायनात और दुनिया के कोने-कोने में बुतों और सितारों की पूजा के लिए हैकल और मन्दिर मौजूद थे, पर इन सबके उलट सिर्फ़ एक ख़ुदा की परस्तिश और उसकी यकताई के इक़रार में सरे नियाज़ झुकाने के लिए दुनिया के बुतकदों में पहला घर जो ख़ुदा का घर कहलाया, वह यही बैतुल्लाह है।

वह दुनिया में घर सबसे पहला ख़ुदा का
ख़लील एक मेमार था, जिस बिना का।

Copyright OfflineDeeniApp

अज़ल से मशीयत ने था जिसको ताका,
कि उस घर से उगलेगा चश्मा हुदा का।

तर्जुमा–*बेशक सबसे पहला वह घर जो लोगों के लिए (ख़ुदा की याद के लिए) बनाया गया, अलबत्ता वह है जो मक्का में है, वह है सर से पैर तक बरकत और दुनिया वालों के लिए हिदायतों (का सर चश्मा)।*

(आले इमरान 3-97)

इसी तामीर को यह शरफ़ हासिल है कि इब्राहीम-जैसा जलीलुल क़द्र पैग़म्बर उसका मेमार है और इस्माईल जैसा नबी व ज़बीह उसका मज़दूर, बाप-बेटे बराबर उसकी तामीर में लगे हुए हैं और जब उसकी दीवारें ऊपर उठती हैं और बुज़ुर्ग बाप का हाथ ऊपर तामीर करने से माज़ूर हो जाता है, तो क़ुदरत की हिदायत के मुताबिक़ एक पत्थर को बाड़ बनाया जाता है, जिसको इस्माईल अपने हाथ से सहारा देते और इब्राहीम उस पर तामीर करते जाते हैं। यही वह यादगार है जो 'मक़ामे इब्राहीम' से जाना जाता है। जब तामीर इस हद पर पहुंची, जहां आज हजरे अस्वद नसब है तो जिब्रील अमीन ने उनकी रहनुमाई की और हजरे अस्वद को उनके सामने एक पहाड़ी से महफ़ूज़ निकाल कर दिया, जिसको जन्नत का लाया हुआ पत्थर कहा जाता है, ताकि वह नसब कर दिया जाए।

अल्लाह का घर तामीर हो गया तो अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम को बताया कि यह मिल्लते इब्राहीमी के लिए (क़िबला) और हमारे सामने झुकने का निशान है, इसलिए यह तौहीद का मर्कज़ क़रार दिया जाता है। तब इब्राहीम व इस्माईल ने दुआ़ मांगी कि अल्लाह तआ़ला उनको और उनकी ज़ुर्रियत (आल औलाद) को नमाज़ और जक़ात क़ायम करने की हिदायत दे और इस्तिक़ामत बख़्शे और उनके लिए फलों, मेवों और रिज़्क़ में बरकत दे और दुनिया के कोने-कोने में बसने वाले गिरोह में से हिदायत पाए हुए गिरोह को इस तरफ़ मुतवज्जह करे कि वे दूर-दूर से आएं और हज के मनासिक अदा करें और हिदायत व रुश्द के इस मर्कज़ में जमा होकर अपनी ज़िंदगी की सआ़दतों से दामन भरें।

क़ुरआन अज़ीज़ ने बैतुल्लाह की तामीर, तामीर के वक़्त इब्राहीम व

Copyright OfflineDeeniApp

इस्माईल की मुनाजात, नमाज़ क़ायम करने और हज की रस्मों को अदा करने के लिए शौक़ व तमन्ना के इज़्हार और बैतुल्लाह के तौहीद का मर्कज़ होने के एलान का जगह-जगह ज़िक्र किया है और नए-नए उस्लूब और तर्ज़े अदा से उसकी अ़ज़्मत और जलालत व जबरूत को सूरः आलेइमरान 3:79, अल-बक़रः 2 : 125'129 और अल-हज्ज 22 : 26-33, 36 : 37 में वाज़ेह फ़रमाया है।

हज़रत इस्माईल की औलाद

तौरात के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल के बारह बेटे थे जो बारह सरदार कहलाए और अरब के मुस्तक़िल क़बीलों के जद्दे क़बीला बने और एक लड़की थी, जिसका नाम बश्शामा या महल्लात था। उनके बेटे नाबित की नस्ल अस्हाबुल-हिज्र कहलाई। (नाबितीन के आसार पट्टा (जॉर्डन) में मौजूद हैं) और क़ीदार की नस्ल अस्हाबुर्रस्स के नाम से मशहूर हुई।

कुरआन में हज़रत इस्माईल ؑ का तज़्किरा

हज़रत इस्माईल का ज़िक्र कुरआन मजीद में कई बार हुआ है। सूरः मरयम में उनके नाम के साथ उनके औसाफ़े जमीला का भी ज़िक्र किया गया है।

तर्जुमा–और याद कर किताब में इस्माईल ؑ का ज़िक्र था, वह वायदे का सच्चा था और था नबी और हुक्म करता था अपने अह्ल को नमाज़ का और ज़कात का और था अपने परवरदिगार के नज़दीक पसन्दीदा।

(मरयम 19 : 54)

हज़रत इस्माईल ؑ की वफ़ात

हज़रत इस्माईल ؑ की उम्र जब एक सौ छत्तीस साल की हुई, तो उनका इंतिक़ाल हो गया, तौरात के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल ؑ की वफ़ात फ़लस्तीन में हुई और फ़लस्तीन ही में उनकी क़ब्र बनी। अरब तारीख़ के माहिरों के मुताबिक़ वह और उनकी वालिदा हाजरा बैतुल्लाह के क़रीब हरम के अन्दर दफ़न हैं।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम

पैदाइश

हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र सौ साल हुई तो अल्लाह तआ़ला ने उनको बशारत सुनाई कि सारा के पेट से भी तेरे एक बेटा होगा, उसका नाम इस्हाक़ रखना और क़ुरआन में है–

तर्जुमा–'पस हमने उसको इस्हाक़ की और उसके बाद (उसके बेटे) याक़ूब की बशारत दी। सारा कहने लगी, क्या मैं निगोड़ी बुढ़िया जनूंगी और जबकि यह इब्राहीम मेरा शौहर भी बूढ़ा है, वाक़ई यह तो बहुत अजीब बात है। फ़रिश्तों ने कहा, क्या तू अल्लाह की हुक्म पर ताज्जुब करती है? ऐ अह्ले बैत! तुम पर अल्लाह की बरकत व रहमत हो। बेशक अल्लाह तआ़ला हर तरह हम्द के क़ाबिल है और है बहुत बुज़ुर्ग।' (हूद 11 : 71-73)

तर्जुमा–'इब्राहीम ने कहा, क्या तूम मुझको इस बुढ़ापा आ जाने पर भी बशारत देते हो, यह कैसी बशारत दे रहे हो? फ़रिश्तों ने कहा, हम तुझको हक़ बात की बशारत दे रहे हैं, पस तू नाउम्मीद होने वालों में से न हो। इब्राहीम ने कहा और नहीं नाउम्मीद होते अपने परवरदिगार की रहमत से, मगर गुमराह।'

(अल-हिज्र 15 : 54 : 56)

ख़त्ना

हज़रत इस्हाक़ अलैहिस्सलाम जब आठ दिन के हुए तो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उनकी ख़त्ना करा दी।

इस्हाक़ की शादी

तौरात के एतबार से हज़रत इस्हाक़ की शादी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के भतीजे की बेटी से हुई और उससे उनके यहां दो बेटे ईसू और याक़ूब पैदा हुए। ईसू की शादी हज़रत इस्माईल की साहबज़ादी बश्शामा या महल्लात से हुई और हज़रत याक़ूब अपने मामूं के यहां ब्याहे गए।

Maktab-e-Asha'af
Copyright OfflineDeeniApp

इस्हाक़ का ज़िक्र क़ुरआन में

क़ुरआन पाक में हज़रत इस्हाक़ ﷺ का ज़िक्र सूरः अंबिया, सूरः मरयम, सूरः हूद और सूरः साफ़्फ़ात में आया है।

हज़रत लूत عليه السلام

हज़रत लूत व इब्राहीम عليه السلام

हज़रत लूत हज़रत इब्राहीम के भतीजे हैं और उनका बचपन हज़रत इब्राहीम ही की निगरानी में गुज़रा और उनकी नश्वनुमा हज़रत इब्राहीम ही की तर्बियत में हुई।

मिस्र से वापसी

हज़रत लूत और उनकी बीवी हज़रत इब्राहीम ﷺ की हिजरतों में हमेशा उनके साथ रहे हैं और जब हज़रत इब्राहीम मिस्र में थे, तो उस वक़्त भी यह हम सफ़र थे। मिस्र से वापसी पर हज़रत इब्राहीम फ़लस्तीन में आबाद हुए और हज़रत लूत ने शर्क़े उर्दुन के इलाक़े में सुकूनत अख़्तियार की। इस इलाक़े में दो मशहूर बस्तियां सदूम और आमूरा थीं।

क़ौमे लूत

हज़रत लूत ﷺ ने जब शर्क़े उर्दुन (ट्रांस जॉर्डन) के इलाक़े में सदूम में आकर क़ियाम किया तो देखा कि यहां बाशिंदे फ़वाहिश और मासियतों में इतने पड़े हुए हैं कि दुनिया में कोई बुराई ऐसी न थी जो उनमें मौजूद न हो। दूसरे ऐबों और फ़हश कामों के अलावा यह क़ौम एक ख़बीस अ़मल में मुब्तला थी, यानी अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए वे औरतों के बजाए अमरद लड़कों से इख़्तिलात करते थे। दुनिया की क़ौमों में उस वक़्त तक इस अ़मल का क़तई रिवाज न था। यही बदबख़्त क़ौम है जिसने इस नापाक अ़मल की ईजाद की और इससे भी ज़्यादा शरारत, ख़बासत और

Copyright OfflineDeeniApp

बेहयाई यह थी कि वे अपनी बदकिरदारी को ऐब नहीं समझते थे और ऐलानिया फ़ख़ व मुबाहात के साथ उसको करते रहते थे।

तर्जुमा–'और (याद करो) लूत का वाक़िया जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम ऐसे फ़हश काम में लगे हुए हो जिसको दुनिया में तुमसे पहले किसी ने नहीं किया, यह कि बेशक तुम औरतों के बजाए अपनी शहवत को मर्दों से पूरी करते हो, यक़ीनन तुम हद से गुज़रने वाले हो।'

(अल-आराफ़ 7 : 80-81)

हज़रत लूत और तब्लीग़े हक़

इन हालात में हज़रत लूत ने उनको उनकी बेहयाइयों और ख़बासतों पर मलामत की और शराफ़त और तहारत की ज़िंदगी की रग़बत दिलाई और नर्मी के साथ जो मुम्किन तरीक़े हो सकते थे, उनसे उनको समझाया और पिछली क़ौम की बदआमालियों के नतीजे बताकर इबरत दिलाई, मगर उन पर बिल्कुल असर न हुआ, बल्कि कहने लगे–

तर्जुमा–*'लूत की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि कहने लगे इन (लूत और उसके ख़ानदान) को अपने शहर से निकाल दो। ये बेशक बहुत ही पाक लोग हैं।* (आराफ़ 7 : 72)

'बेशक ये पाक लोग हैं', क़ौमे लूत का यह मज़ाक़िया जुम्ला था, गोया हज़रत लूत ﷺ और उनके ख़ानदान पर तंज़ करते और उनका ठठ्ठा उड़ाते थे कि बड़े पाकबाज़ हैं, इनका हमारी बस्ती में क्या काम या मेहरबान नसीहत करने वाले की मेहरबान नसीहत से ग़ैज़ व ग़ज़ब में आकर कहते थे कि अगर हम नापाक और बेहया हैं और वे बड़े पाकबाज़ हैं, तो इनका हमारी बस्ती से क्या वास्ता, इनको यहां से निकलो।

हज़रत लूत ﷺ ने फिर एक बार भरी महफ़िल में उनको नसीहत की और फ़रमाया, 'तुमको इतना भी एहसास नहीं रहा है कि यह समझ सको कि मर्दों के साथ बेहयाई का ताल्लुक़, लूट-मार और इसी क़िस्म की बद-अख़्लाक़ियां बहुत बुरे आमाल हैं, तुम यह सब कुछ करते हो और भरी महफ़िलों और मज्लिसों में करते हो और शर्मिंदा होने के बजाए बाद में उनका ज़िक्र इस तरह

Copyright OfflineDeeniApp

करते हो कि गोया ये कारे नुमायां हैं जो तुमने अंजाम दिए हैं।

तर्जुमा–*'क्या तुम वही नहीं हो कि तुम मर्दों से बदअ़मली करते हो, लोगों की राह मारते हो और अपनी मज्लिसों में और घर वालों के सामने फ़हश काम करते हो।'* (अल-अंकबूत 29/29)

क़ौम ने इस नसीहत को सुना तो ग़म व ग़ुस्से से तिलमिला उठी और कहने लगी, लूत! बस ये नसीहतें और इबरतें ख़त्म कर और अगर हमारे उन आमाल से तेरा ख़ुदा नाराज़ है तो वह अ़ज़ाब लाकर दिखा, जिसका ज़िक्र करके बार-बार हमको डराता है और अगर तू वाक़ई अपने क़ौल में सच्चा है तो हमारा और तेरा फ़ैसला अब हो जाना ही ज़रूरी है।

तर्जुमा–*'पस उस (लूत) की क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि वे कहने लगे, तू हमारे पास अल्लाह का अ़ज़ाब ले आ, अगर तू सच्चा है।'* (अल-अंकबूत 29/29)

हज़रत इब्राहीम ﷺ और अल्लाह के फ़रिश्ते

इधर यह हो रहा था और दूसरी तरफ़ हज़रत इब्राहीम ﷺ के साथ यह वाक़िया पेश आया कि हज़रत इब्राहीम जंगल में सैर कर रहे थे। उन्होंने देखा कि तीन लोग खड़े हैं। हज़रत इब्राहीम बड़े मुतवाज़ेअ़ और मेहमान नवाज़ थे और हमेशा उनका दस्तरख़्वान मेहमानों के लिए फैला रहता था, इसलिए इन तीनों को देखकर वह बहुत ख़ुश हुए और उनको अपने घर ले गए और बछड़ा ज़िब्ह करके तिक्के बनाए और भून कर मेहमानों के सामने पेश किए, मगर उन्होंने खाने से इंकार किया। यह देखकर हज़रत इब्राहीम ने समझा कि ये कोई दुश्मन हैं जो दस्तूर के मुताबिक़ खाने से इंकार कर रहे हैं और कुछ डरे कि ये आख़िर कौन हैं?

मेहमानों ने जब हज़रत इब्राहीम ﷺ की बेचैनी देखी तो उनसे हँस कर कहा कि आप घबराएं नहीं! हम अल्लाह के फ़रिश्ते हैं और क़ौमे लूत की तबाही के लिए भेजे गए हैं, इसलिए सदूम जा रहे हैं।

जब हज़रत इब्राहीम ﷺ को इत्मीनान हो गया कि ये दुश्मन नहीं हैं, बल्कि अल्लाह के फ़रिश्ते हैं, तो अब उनके दिल की रिक़्क़त, हमदर्दी का

Copyright OfflineDeeniApp

जज़्बा और मुहब्बत व शफ़क़त की फ़रावानी ग़ालिब आई और उन्होंने क़ौमे लूत की ओर से झगड़ना शुरू कर दिया और फ़रमाने लगे कि तुम उस क़ौम को कैसे बर्बाद करने जा रहे हो, जिसमें लूत-जैसा अल्लाह का बरगज़ीदा नबी मौजूद है और वह मेरा भतीजा भी है और मिल्लते हनीफ़ का पैरो भी?

फ़रिश्ते ने कहा, हम यह सब कुछ जानते हैं, मगर अल्लाह का यह फ़ैसला है कि क़ौमे लूत अपनी सरकशी, बदअ़मली, बेहयाई और फ़ह्श बातों पर इसरार की वजह से ज़रूर हलाक की जाएगी और लूत और उसका ख़ानदान इस अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा, अलबत्ता लूत की बीवी क़ौम की हिदायत और उनकी बद-आ़मालियों और बदअ़क़ीदगियों में शिरकत की वजह से क़ौमे लूत ही के साथ अ़ज़ाब पाएगी।

ग़रज़ हज़रत लूत के हक़ पहुंचाने, भलाइयों का हुक्म देने और बुराइयों से मना करने का क़ौम पर मुतलक़ कुछ असर न हुआ और वह अपनी बद-अख़्लाक़ियों पर वैसे ही जमी रही। हज़रत लूत ﷺ ने यहां तक ग़ैरत दिलाई कि तुम इस बात को नहीं सोचते कि मैं रात-दिन जो इस्लाम और सीधे रास्ते की दावत और पैग़ाम के लिए तुम्हारे साथ हैरान व परेशान हूं, क्या कभी मैंने इस कोशिश का कोई मुआवज़ा तलब किया, क्या कोई उजरत मांगी, किसी नज़्र व नियाज़ का तलबगार हुआ। मेरी नज़रों में तो तुम्हारी दीनी व दुन्यवी फ़लाह व सआ़दत इस के सिवा और कुछ भी नहीं है, मगर तुम हो कि ज़रा भी तवज्जोह नहीं करते।

मगर उनके अंधेरे दिलों पर इस कहने का तनिक भर भी असर न हुआ और वे हज़रत लूत ﷺ को 'निकाल देने' और पत्थर मार-मार कर हलाक कर देने की धमकियां देते रहे। जब नौबत यहां तक पहुंची और उनकी बुरी क़िस्मत ने किसी तरह अख़्लाक़ी ज़िंदगी पर आमादा न होने दिया, तब उनको भी वही पेश आया जो अल्लाह के बनाए हुए क़ानूने जज़ा का यक़ीनी और हतमी फ़ैसला है, यानी बद किरदारियों और इसरार की सज़ा बर्बादी या हलाकत। ग़रज़ अल्लाह के फ़रिश्ते हज़रत इब्राहीम के पास से रवाना होकर सदूम पहुंचे और लूत के यहां मेहमान हुए। ये अपनी शक्ल व सूरत में हसीन व ख़ूबसूरत और उम्र में नवजवान लड़कों की शक्ल व सूरत के थे। हज़रत

Copyright OfflineDeenApp

लूत ने उन मेहमानों को देखा तो घबरा गए और डरे कि बदबख़्त क़ौम मेरे इन मेहमानों के साथ क्या मामला करेगी, क्योंकि अभी तक उनको यह नहीं बताया गया था कि ये अल्लाह के पाक फ़रिश्ते हैं।

अभी हज़रत लूत ﷺ इस हैस-बैस में थे कि क़ौम को ख़बर लग गई और लूत के मकान पर चढ़ आए और मुतालबा करने लगे कि तुम इसको हमारे हवाले करो। हज़रत लूत ﷺ ने बहुत समझाया और कहा, क्या तुम में कोई भी 'सलीमुल फ़ितरत इंसान' (रजुलुर्रशीद) नहीं है कि वह इंसानियत को बरते और हक़ को समझे? तुम क्यों इस लानत में गिरफ़्तार हो और नफ़्सानी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए फ़ितरी तरीक़ा छोड़कर और हलाल तरीक़ों से औरतों को जीवन-साथी बनाने की जगह इस मलऊन बेहयाई पर उतर आए हो? ऐ काश! मैं 'रुक्ने शदीद' की ज़बरदस्त हिमायत कर सकता!

हज़रत लूत की इस परेशानी को देखकर फ़रिश्तों ने कहा, आप हमारी ज़ाहिरी शक्लों को देखकर घबराइए नहीं, हम अ़ज़ाब के फ़रिश्ते हैं और अल्लाह के क़ानून 'जज़ा-ए-अ़मल' का फ़ैसला इनके हक़ में अटल है, वह अब इनके सर से टलने वाला नहीं। आप और आप का ख़ानदान अ़ज़ाब से बचा रहेगा, मगर आपकी बीवी बेहयाओं के साथ रहेगी और तुम्हारा साथ न देगी।

आख़िर अ़ज़ाबे इलाही का वक़्त आ पहुंचा, रात शुरू हुई तो फ़रिश्तों के इशारे पर हज़रत लूत ﷺ अपने ख़ानदान समेत दूसरी ओर से निकल कर सदूम से रुख़्सत हो गए और बीवी ने उनका साथ देने से इंकार कर दिया और रास्ते से ही लौट कर सदूम वापस आ गई, रात का आख़िर आया तो पहले तो एक हौलनाक चीख़ ने सदूम वालों को तह व बाला कर दिया और फिर आबादी का तख़्ता ऊपर उठाकर उलट दिया गया और ऊपर से पत्थरों की वारिश ने उनका नाम व निशान तक मिटा दिया और वही हुआ जो पिछली क़ौम की नाफ़रमानी और सरकशी का अंजाम हो चुका है।

हज़रत इब्राहीम मुजद्दिदे अंबिया (नवियों के मुजद्दिद)

इन लगातार वाक़िआ़त से बहुत-से सबक़ हासिल होने के अलावा एक

Copyright OfflineDeeniApp

सबसे अहम बात यह ज़ाहिर होती है कि हज़रत इब्राहीम ﷺ की शख़्सियत नुबूवत व रिसालत के मंसब में भी ख़ास इम्तियाज़ी शान रखती है। यों तो अल्लाह का हर एक पैग़म्बर तौहीद की दावत देने वाला और शिर्क का दुश्मन है और इसलिए तमाम अंबिया ﷺ की तालीमात में ये बातें मुश्तरक क़द्र की हैसियत रखती हैं, बल्कि रूहानी दावत व इर्शाद की बुनियाद सिर्फ़ इन्हीं दो मस्अलों पर क़ायम है मगर यह ख़ुसूसियत हज़रत इब्राहीम ही के हिस्से में आई थी कि इस दुनिया में वह पहली हस्ती हैं, जिन्हें अज़ीमत के रास्ते में सख़्त से सख़्त आज़माइशों और कड़ी से कड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ा और वे इन मुसीबतों के मुक़ाबले में कामरान व कामयाब साबित हुए।

ग़ौर कीजिए बुढ़ापे और यास (मायूसी) की उम्र में हज़ारों दुआओं और लाखों आरज़ूओं के बाद एक बच्चा पैदा हुआ और अभी बच्चा दूध ही पी रहा है कि अल्लाह का हुक्म आता है—

'इसको और इसकी मां को अपने घर से जुदा करो और एक लक़ व दक़ बयाबान और बिन खेती की ज़मीन में 'जहां न पानी है, न सब्ज़ा' इन दोनों को छोड़ आओ।'

फिर क्या हुआ? क्या इब्राहीम ने एक लम्हा भी ताम्मुल किया? और इर्शाद की तामील में किसी क़िस्म का कोई उज़्र सामने आया? नहीं, हरगिज़ नहीं, बल्कि बे-चून व चूरा उन दोनों को मक्का की सरज़मीन पर छोड़ आए और इसके बाद जब वह बड़ा होता है और मां-बाप की आंखों का नूर और दिल का सुरूर बनता है, तो अब इब्राहीम को अल्लाह का हुक्म मिलता है कि उसको हमारे नाम पर क़ुरबान करो और अपनी फ़िदाकारी और इताअ़त शआ़री का सबूत दो। इस नाज़ुक वक़्त में एक फ़रमांबरदार से फ़रमांबरदार हस्ती के ईमान व यक़ीन की कश्ती किस तरह भंवर में आ जाती है, इसका अन्दाज़ा ख़ुद करो और फिर इब्राहीम की ओर देखो कि न अल्लाह की वह्य की जो 'ख़्वाब और सपने की शक्ल में' दिखाई गई थी, उन्होंने कोई तावील की, न इसके लिए हीला-बहाना सोचा और उसको टालने के लिए कोई फ़िक्र व तरद्दुद किया, सुबह उठे और अपने बेटे को लिया और इशदि इलाही की तामील में वह कुछ किया जो उनके इंसानी हाथ कर सकते थे और इस तरह

Copyright OfflineDeeniApp

अक़्ल को हैरान कर देने वाली वफ़ाकेशी का सबूत दिया।

और तीसरी बड़ी आज़माइश का वह वक़्त था कि जब बाप, क़ौम और वक़्त के बादशाह, सबने मुत्तफ़िक़ होकर यह फ़ैसला कर लिया कि इब्राहीम या अपने हक़ के पैग़ाम से बाज़ आ जाए, वरना तो उसको धधकती आग में डालकर ख़ाकस्तर कर दिया जाए, तब ज़ालिमों का यह फ़ैसला और इत्तिहाद क्या इब्राहीम के क़दम डगमगा सका? नहीं! बल्कि वह एक अ़ज़्म का पहाड़ बनकर उसी तरह अपनी जगह खड़ा रहा और हक़ का पैग़ाम और अल्लाह की रुश्द व हिदायत को उसी अ़ज़्म व सबात के साथ सुनाता रहा, जिस तरह शुरू से करता रहा, फिर दुश्मनों ने जो कुछ कहा था, आख़िर कर दिखाया और उसको धधकती आग में झोंक दिया, मगर इब्राहीम के सुकून व इत्मीनान में ज़रा भी कोई फ़र्क़ न आया, अलबत्ता दुश्मनों की दुश्मनी और उनके तमाम मक्र व फ़रेब को इब्राहीम के अल्लाह ने बेकार कर दिया और ख़ाक में मिला दिया और आग के शोले उसके लिए 'बरदंव-व सलामा' (ठंडक और सलामती) बन गए। इस तरह इब्राहीम अपने सबसे ताक़तवर निगहबान के साए में सआ़दत व हिदायत के फ़ैज़ान से ख़ुदा के बन्दों को बराबर मुनव्वर व रोशन करता रहा और हक़ की इशाअ़त और अल्लाह की दावत तेज़ तर हो गई।

इन तमाम सख़्त इम्तिहानों और आज़माइशों और फिर उनमें सबात क़दमी और इस्तिक़ामत के अलावा इब्राहीम की दूसरी इम्तियाज़ी ख़ुसूसियत यह थी कि उन्होंने शिर्क और तौहीद की मुतज़ाद ज़िंदगी के लिए एक ऐसा इम्तियाज़ क़ायम कर दिया जो उन्हीं जैसे जलीलुलक़द्र पैग़म्बर के शायाने शान था यानी उन्होंने अस्नाम-परस्ती (बुतपरस्ती) और कवाकिब-परस्ती (तारा परस्ती) की तर्दीद व तज़्लील और उनकी ख़राबियों का इज़्हार करते हुए तस्रीह फ़रमाई—

तर्जुमा—*'विला शुवहा मैंने अपना रुख़ उसी ज़ात की तरफ़ झुका दिया है जो आसमानों और ज़मीनों का पैदा करने वाला है, ख़ालिस होकर और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूं।* (अल-अनआम 6 : 79)

इब्राहीम ﷺ के इस इर्शाद का मतलब यह है कि अल्लाह के तसव्वुर की दो राहें हैं—एक सही और दूसरी ग़लत। ग़लत राह यह है कि यह अ़क़ीदा

Copyright OfflineDeeniApp

क़ायम कर लिया जाए कि अल्लाह को राज़ी करने, उसको ख़ुश रखने और उसकी इबादत व परस्तिश के लिए ज़रूरी है कि बुतों और सितारों की पूजा की जाए, क्योंकि जब ये रूहें हमसे ख़ुश हो जाएंगी, तो अल्लाह को हमसे राज़ी कर देंगी। इस अ़क़ीदे का नाम 'शिर्क और साबईयत' है, क्योंकि इस अ़क़ीदे के मुताबिक़ माबूद और पूजा करने की वे तमाम इम्तियाज़ी बातें जो सिर्फ़ 'ज़ाते वाहिद' के लिए मख़्सूस रहनी चाहिए थी, दूसरों के लिए भी मुश्तरक हो जाती हैं और यही शिर्क की हक़ीक़त है।

इसके मुक़ाबले में सही राह यह है कि इस इल्म व यक़ीन को अ़क़ीदा बनाया जाए कि अल्लाह तआ़ला की रज़ामंदी और ख़ुशनूदी का तरीक़ा इसके अलावा दूसरा नहीं कि ख़ुद उसी की परस्तिश की जाए, उसी को हाजतरवा और मुश्किल कुशा समझा जाए, नफ़ा व नुक़्सान, सेहत व मरज़, ग़रीबी व ख़ुशहाली, रोज़ी का देना-लेना और मौत और ज़िंदगी, ग़रज़ तमाम मामलों में उसी को और सिर्फ़ उसी को मालिक व मुख़्तारे मुतलक़ मान लिया जाए और उसकी रज़ा व अ़द्मे रज़ा की मारफ़त के लिए उसके भेजे हुए सच्चे पैग़म्बरों और रसूलों की ही हिदायत व रुश्द पर अ़मल किया जाए, गोया दूसरे लफ़्ज़ों में यों कह दिया जाए कि अल्लाह को राज़ी रखने और उससे क़ुर्बत हासिल करने के लिए देवी-देवताओं को ज़रिया बनाने की ज़रूरत नहीं, बल्कि सिर्फ़ उस ज़ाते वाहिद की उबूदियत व बन्दगी और ज़िंदगी का सरमाया बनाया जाए, इसी अ़क़ीदे का नाम 'इस्लाम' और 'हनीफ़' है।

इसलिए यह पहला दिन था कि हज़रत इब्राहीम ﷺ ने पहली राह को 'शिर्क और साबइयत' और दूसरी राह को 'इस्लाम व हनीफ़' का नाम देकर दोनों राहों के दर्मियान मुस्तक़िल इम्तियाज़ क़ायम कर दिया और यह इम्तियाज़ ऐसा मक़्बूल हुआ कि आने वाली तमाम पैग़म्बराना तालीम व दावत की बुनियाद व असास इसी नाम से याद की गई, यहां तक कि ख़ातमुल अंबिया मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ के आख़िरी पैग़ाम का नाम भी 'मिल्लते हनीफ़' और उसके पैरू का नाम 'मुस्लिम' क़रार पाया।

तर्जुमा–*'और पैरवी करो मिल्लते इब्राहीम की जो हनीफ़ था।'*

(अन-निसा 125)

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा– *'उस इब्राहीम ने तुम्हारा नाम पहले ही से मुसलमान रखा और उस कुरआन में भी (यही नाम पसन्द रहा)।* (अल-हज्ज 22/78)

यही वजह है कि सूरः 'इब्राहीम' की यह ख़ुसूसियत है कि उसमें नबियों के आने और उनके हालात और ख़ास-ख़ास बातें और नतीजों को मजमूई तौर पर पेश किया गया है और बताया गया है कि पैग़म्बरों की रुश्द व हिदायत की दावत के मानने वालों और न मानने वालों के दर्मियान क्या फ़र्क़ है? और यह कि ख़ैर व शर, इताअ़त व बग़ावत और तस्लीम व इंकार में क्या ग़ैर-अल्लाह की ख़ुश्नूदी को भी कोई मक़ाम हासिल है या सिर्फ़ अल्लाह की रिज़ा का न होना ही असल ईमान है?

पस इन मज्मूई इब्राहीमी ख़ुसूसियतों के पेशे नज़र बेशक यह कहना सही है कि नबियों और रसूलों की मुक़द्दस ज़िंदगी में इब्राहीम का मक़ाम 'नबियों और रसूलों के मुजद्दिद' का मक़ाम है।

इन वाक़ियात से मुताल्लिक़ कुछ नसीहतें

1. जब इंसान किसी अ़क़ीदे को इल्म व यक़ीन की रोशनी में क़ायम कर लेता है और वह उसके दिल में बैठ जाता है, उसकी रूह में पैवस्ता हो जाता है और उसके सीने में पत्थर की लकीर बन जाता है, तो उसका फ़िक्र व ख़्याल, उसका सोच-विचार और उसका इस्तिग़राक़ (लग जाना) इस बारे में इस दर्जा ज़बरदस्त और साबित व रासिख़ हो जाता है कि काय़नात का कोई हादसा और दुनिया की कोई सख़्त-से-सख़्त मुसीबत भी उसको अपनी-अपनी जगह से नहीं हटा सकती। वह उसके लिए आग में बेख़तर कूद पड़ता, समुद्र में बे-झिझक छलांग मार देता और सूली के तख़्ते पर बे-ख़ौफ़ जान दे देता है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के अ़ज़्म व सबात की मिसाल उसके लिए रोशन और ज़िंदा मिसाल है।

2. हक़ की हिमायत के लिए ऐसी दलीलें और सबूत पेश करने चाहिएं, जो दुश्मन और बातिल परस्त के क़ल्ब की तह में उतर जाएं और वह ज़ुबान से चाहे इक़रारे हक़ न करे, लेकिन उसका ज़मीर और उसका क़ल्ब हक़ के

Copyright OfflineDeeniApp

इक़रार पर मजबूर हो जाए, बल्कि कभी-कभी ज़ुबान बेअख़्तियार हक़ के एलान से बाज़ न रह सके। क़ुरआन की आयत *'वजादिल हुम बिल्लती हि-य अहसनु'* इसी हक़ीक़त का एलान करती है।

3. पैग़म्बरों और रसूलों की राह यही है। वे लड़ाई-झगड़े की मंतक़ियाना राहों पर नहीं चलते, उनकी दलीलों की बुनियाद महसूसात व मुशाहदात पर होती है, या सादा विज्दानियात या अक़लियात पर, हज़रत इब्राहीम ﷺ का अस्नाम-परस्ती व कवाकिब परस्ती के बारे में जमहूर से मुनाज़रा और नमरूद का मुनाज़रा इसकी वाज़ेह मिसाल है।

4. किसी सही बात को साबित करने के लिए दलील में मुख़ालफ़त के बातिल अक़ीदे को फ़र्ज़ी तौर पर तस्लीम कर लेना झूठ या उस बातिल अक़ीदे का इक़रार नहीं है, बल्कि उसको 'झगड़े को ख़त्म करने के लिए 'बातिल को मान लेना' या 'मआरीज़' कहा जाता है और इस्तदलाल का यह तरीक़ा मुख़ालिफ़ को अपनी ग़लती के एतराफ़ पर मजबूर कर देता है।

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने जम्हूर के साथ मुनाज़रे में दलील का यही पहलू अख़्तियार किया था, जिसने सनमपरस्तों को मजबूर कर दिया कि वे इक़रार कर लें कि बेशक बुत किसी हाल में भी न सुनते हैं और न जवाब दे सकते हैं।

5. अगर एक मुसलमान के मां-बाप मुश्रिक हों और किसी तरह शिर्क से बाज़ न आते हों तो उनकी मुश्रिकाना ज़िंदगी से बेज़ार और अलग रहते हुए भी उनके साथ दुन्यवी मामले और आख़िरत की नसीहतों में इज़्ज़त व हुर्मत का मामला करना चाहिए और सख़्ती और दुरुश्ती को काम में न लाना चाहिए। हज़रत इब्राहीम ﷺ का तर्ज़े अमल आज़र के साथ और नबी ﷺ का तर्ज़े अमल अबू तालिब के साथ इस मसअले के लिए क़तई और यक़ीनी गवाही है।

6. अगर मोमिन का दिल सही अक़ीदों पर इत्मीनाने क़ल्ब और ज़ुबान व क़ल्ब की मुताबक़त के साथ ईमान रखता है, मगर ऐनी और हक़ीक़ी मुशाहदा व महसूस के लिए या उसको हुक्कुल यक़ीन के दर्जे तक हासिल

Copyright OfflineDeeniApp

करने के लिए किसी ईमानी या एतक़ादी मस्अले में भी सवाल व जुस्तजू की राह अख़्तियार करता और तमानियते क़ल्ब का तालिब होता है, तो यह जुस्तजू रैब व कुफ़्र नहीं है, बल्कि ऐन ईमान है। हज़रत इब्राहीम ﷺ के जवाब *'व ला किल्लि यत-मइन-न क़ल्बी'* से इसी हक़ीक़त का इंकिशाफ़ होता है।

7. दस्तरख़्वान की वुसअ़त अगर रिया व नुमूद से पाक हो और फ़ितरी तक़ाज़े के पेशेनज़र मेहमान-नवाज़ी में वुस्अते क़ल्ब और बड़ी हौसलगी पाई जाती हो तो अख़्लाक़े करीमाना में बहुत फ़ज़ीलत शुमार होती है और 'सख़ा-ए-नफ़्स' और 'करम' के नाम से मौसूम है।

कुछ किताबों में हज़रत इब्राहीम ﷺ की मेहमान-नवाज़ी के सिलसिले में एक अ़जीब वाक़िया नक़ल किया जाता है। कहते हैं कि एक बार दस्तूर के मुताबिक़ हज़रत इब्राहीम ﷺ किसी मेहमान के इन्तिज़ार में जंगल में खड़े थे, क्योंकि बग़ैर मेहमान के उनका न दस्तरख़्वान बिछता था, न वह खाना खाते थे। सामने से एक बहुत बूढ़ा आदमी नज़र पड़ा, जिसकी कमर भी झुक गई थी और वह लकड़ी के सहारे मुश्किल से चल रहा था, इब्राहीम आगे बढ़े और मसर्रत के साथ उसको सहारा देते हुए घर लाए, दस्तरख़्वान बिछा और खाना चुना गया। जब सब फ़ारिग़ हो गए, तो हज़रत इब्राहीम ﷺ ने फ़रमाया, उस पाक ज़ात का शुक्र अदा करो, जिसने हम सबको ये नेमतें अ़ता फ़रमाईं। बूढ़े ने ग़ुस्से में कहा, मैं नहीं जानता कि तेरा एक ख़ुदा कौन है, मैं तो अपने माबूद (बुत) का शुक्र अदा करता हूं जो मेरे घर में रखा है।

यह जवाब हज़रत इब्राहीम ﷺ को बहुत शाक़ गुज़रा और उसको फ़ौरन घर से रुख़्सत कर दिया, लेकिन कुछ देर न हुई थी कि इब्राहीम के दिल में अपने इस अंदाज़ से तक्लीफ़ हुई। उन्होंने सोचा कि जिस एक अल्लाह का शुक्र मैं उससे अदा कराना चाहता था, उसकी शान तो यह है कि उस बूढ़े की इस लम्बी उम्र में वह बराबर अपनी नेमतों से उसको नवाज़ता रहा और उसकी पुतपरस्ती, कुफ़्र और शिर्क से नाराज़ होकर एक वक़्त भी उस पर रिज़्क़ का दरवाज़ा बन्द न किया, फिर तुझको क्या हक़ था कि अगर उसने तेरी बात

Copyright OfflineDeeniApp

न मानी और हक़ के कलिमे को क़ुबूल न किया, तो ख़फ़ा होकर उसको घर से निकाल दिया।

यह वाक़िया अपनी तारीख़ी हैसियत में क़ुबूल करने के क़ाबिल हो या न हो, लेकिन इस हक़ीक़त का ज़रूर एलान करता है, कि हज़रत इब्राहीम के अख़्लाक़े करीमाना की वह बुलन्दी, जो 'हक़ीक़ी मिस्ले आला' तक पहुंची हुई थी एक कहावत थी और सबकी ज़ुबान पर थी बेशक उनका यह फ़िक्र, हक़ के पैग़ाम और इस्लाम की दावत के लिए बेहतरीन उस्वा है।

8. अल्लाह जिन हस्तियों को अपना हक़ पहुंचाने के लिए चुन लेता है, उनके दिल व दिमाग़ को अपने नूर से इस दर्जा रोशन कर देता है कि उनके सामने हक़ और सच्चाई के इश्क़ के सिवा दूसरी कोई चीज़ बाक़ी ही नहीं रहती और इसलिए उनमें शुरू ही से यह इस्तेदाद दी हुई होती है कि वे बचपने ही से अपने साथियों में मुम्ताज़ और नुमायां नज़र आने लगते हैं और हक़ के रास्ते में आज़माइश और इम्तिहान को ख़ुशी से सहते और सब्र व रिज़ा का बेहतरीन नमूना पेश करते रहते हैं। इज़रत इस्माईल ﷺ का वाक़िया इसकी गवाही के लिए इंसाफ़ का गवाह और हज़ारों सबक़ और बड़प्पन की वजह बनता है।

9. हज़रत लूत ﷺ अगरचे हज़रत इब्राहीम ﷺ के भतीजे और उनके पैरू थे, मगर नबी भी बनाए जा चुके थे और अल्लाह के एलची बना लिए गए थे, इसलिए सदूम और आमूरा में हर क़िस्म की मुसीबतों और वतन से दूर दुश्मनों के घेरे रहने की तक्लीफ़ों के बावजूद उन्होंने सब्र व इस्तिक़ामत (जमाव) से काम लिया और अपने बुज़ुर्ग चाचा और ख़ानदान की मदद लेने के बजाए सिर्फ़ अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल ही पर भरोसा रखते हुए उसके हुक्मों के सामने रज़ा व तस्लीम का सबूत दिया। यह मक़ाम 'अल्लाह से क़ुर्ब रखने वालों और नबियों का मक़ाम' है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम

नाम और ख़ानदान

हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम हज़रत इसहाक़ के दूसरे बेटे और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पोते हैं। इबरानी भाषा में हज़रत याक़ूब का नाम इसराईल है। यह 'इसरा' (अब्द, ग़ुलाम) और ईल (अल्लाह) दो शब्दों में बना है और अरबी में इसका तर्जुमा अ़ब्दुल्लाह किया जाता है। इसी वजह से हज़रत इब्राहीम के बेटे हज़रत इस्हाक़ से जुड़ा ख़ानदान जो हज़रत याक़ूब यानी इसराईल की नस्ल से है, बनी इसराईल कहलाता है।

हज़रत याक़ूब का ज़िक्र क़ुरआन में

क़ुरआन में हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम का नाम दस जगह आया है। सूरः यूसुफ़ में जगह-जगह ज़मीरों और औसाफ़ के लिहाज़ से, कुछ दूसरी सूरतों में औसाफ़ के एतबार से उनका तज़्किरा मौजूद है, असल में क़ुरआन पाक हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के जलीलुल-क़द्र नबी, साहिबे सब्र व अ़ज़ीमत और हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के बुज़ुर्ग बाप होने की तरफ़ तवज्जोह दिलाता है। हज़रत याक़ूब अल्लाह के बरगज़ीदा पैग़म्बर थे और कन्आ़नियों के लिए भेजे गए थे। उन्होंने वर्षों इस ख़िदमत को अंजाम दिया। उनके बारह लड़के थे। ख़ुद उनका और उनकी औलाद का ज़िक्र, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से जुड़ा हुआ है, इसलिए तफ़्सीलात हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़िक्र में मौजूद हैं, जो आगे आता है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम

ख़ानदान

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के बेटे और हज़रत इब्राहीम के पड़पोते हैं। उनको यह शरफ़ हासिल है कि वह ख़ुद नबी, उनके वालिद नबी, उनके दादा नबी और परदादा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम अबुल अंबिया (नबियों के बाप) हैं। क़ुरआन में इनका ज़िक्र छब्बीस बार आया है और इनको यह भी फ़ख्र हासिल है कि इनके नाम पर एक सूरः (सूरः यूसुफ़) क़ुरआन में मौजूद है जो सबक़ और नसीहत का बेनज़ीर ज़ख़ीरा है, इसीलिए क़ुरआन अज़ीज़ में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वाक़िए को 'अहसनुल क़सस' कहा गया है।

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब और यूसुफ़ के भाई

शुरू ज़िंदगी ही से हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की दिमाग़ी और फ़ितरी इस्तेदाद दूसरे भाइयों के मुक़ाबले में बिल्कुल जुदा और नुमायां थी। साथ ही हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पेशानी का चमकता हुआ नूरे नुबूवत पहचानते और अल्लाह की वह्य के ज़रिए इसकी इत्तिला पा चुके थे। इन वज्हों से वे अपनी तमाम औलाद में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से बेहद मुहब्बत रखते थे और यह मुहव्वत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाइयों से बेहद शाक़ और नाक़ाबिले बरदाश्त थी और वे हर वक़्त इस फ़िक्र में लगे रहते थे कि या तो हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम के दिल से इस मुहव्वत को निकाल डालें और या फिर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ही को अपने रास्ते से हटा दें, ताकि क़िस्सा पाक हो जाए। इन भाइयों के हसद भरे ख़्यालात को ज़बरदस्त ठेस उस वक़्त लगी, जब यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने एक ख़्वाब देखा कि ग्यारह सितारे और सूरज व चांद उनके सामने सज्दा कर रहे हैं। हज़रत याक़ूब अलैहिस्सलाम ने यह ख़्वाब सुना तो सख़्ती के साथ उनको मना कर दिया कि अपना यह ख़्वाब किसी के सामने न दोहराना, ऐसा न हो कि उनको सुनकर तेरे भाई बुरी तरह पेश आएं, क्योंकि शैतान इंसान के पीछे लगा है

Maktab-e-Ashraf
Copyright OfflineDeeniApp

और तेरा ख़्वाब अपनी ताबीर में बहुत साफ़ और वाज़ेह है, लेकिन हसद की भड़कती हुई आग ने एक दिन यूसुफ़ के भाइयों को उनके ख़िलाफ़ साज़िश करने मजबूर कर ही दिया–

तर्जुमा–*'उनमें से एक ने कहा, यूसुफ़ को क़त्ल न करो और उसको गुमनाम कुएं में डाल दो कि उठा ले जाए उसको कोई मुसाफ़िर, अगर तुमको करना ही है।'* (यूसुफ़ 12 : 3)

इस मश्विरे के बाद सब जमा होकर हज़रत याक़ूब की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे–

तर्जुमा–*'(ऐ बाप!) क्या बात है कि तुझको यूसुफ़ के बारे में हम पर एतमाद नहीं है, हालांकि हम उसके ख़ैरख़्वाह हैं।'* (यूसुफ़ 12 : 12)

हज़रत याक़ूब समझ गए कि उनके दिलों में खोट है।

तर्जुमा–*'याक़ूब ने कहा, मुझे इससे रंज और दुख़ पहुंचता है कि तुम इसको (अपने साथ) ले जाओ और मुझे यह डर है कि उसको भेड़िया खा जाए और तुम ग़ाफ़िल रहो।'* (यूसुफ़ 12 : 13)

यूसुफ़ के भाई ने यह सुनकर एक जुबान होकर कहा–

तर्जुमा–*'अगर खा गया इसको भेड़िया, जबकि हम सब ताक़तवर हैं, तो बेशक इस शक्ल में तो हमने सब कुछ गंवा दिया।'* (यूसुफ़ 12 : 14)

कनआ़न का कुंवां

ग़रज़ यूसुफ़ ﷺ के भाई यूसुफ़ को सैर कराने के बहाने ले गए और मश्विरे के मुताबिक़ उसको एक ऐसे कुएं में डाल दिया, जिसमें पानी न था और मुद्दत से सूखा पड़ा था और वापसी में उसकी क़मीज़ को किसी जानवर के खून में तर करके रोते हुए हज़रत याक़ूब के पास आए और कहने लगे, 'ऐ बाप! अगरचे हम अपनी सच्चाई का कितना ही यक़ीन दिलाएं, मगर तुमको हरगिज़ यक़ीन न आएगा कि हम दौड़ में एक दूसरे से आगे निकलने में लगे हुए थे कि अचानक यूसुफ़ को भेड़िया उठाकर ले गया। हज़रत याक़ूब ने यूसुफ़ के लिबास को देखा तो ख़ून से लथपथ था, मगर किसी एक जगह से भी फटा हुआ न था और न चाक दामां था, फ़ौरन हक़ीक़त भांप गए मगर

Copyright OfflineDeeniApp

भड़कने, तान व तश्नीअ़ करने और नफ़रत व हक़ारत का तरीक़ा अपनाने के बजाए पैग़म्बराना इल्म व फ़रासत के साथ यह बता दिया कि हक़ीक़त छिपाने की कोशिश के बावजूद तुम उसे छिपा न सके।

तर्जुमा– *'(हज़रत याक़ूब ﷺ) ने कहा, यह हरगिज़ नहीं, बल्कि बना दी है तुम्हारे नफ़्सों ने तुम्हारे लिए एक बात, अब सब्र ही बेहतर है और जो बात तुम ज़ाहिर करते हो, उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूं।'*

(यूसुफ़ 12 : 18)

यूसुफ़ और ग़ुलामी

इधर ये बातें हो रही थीं, उधर हिजाज़ी इस्माईलियों का एक क़ाफ़िला शाम से मिस्र को ज़ा रहा था। कुंवां देखकर उन्होंने पानी के लिए डोल डाला। यूसुफ़ को देखकर जोश से शोर मचाया–

तर्जुमा– *'बशारत हो एक ग़ुलाम हाथ आया।'* (यूसुफ़ 12-19)

ग़रज़ इस तरह हज़रत यूसुफ़ ﷺ को इस्माईली ताजिरों के क़ाफ़िले ने अपना ग़ुलाम बना लिया और तिजारत के माल के साथ उनको भी मिस्र ले गए और बाज़ार में रिवाज के मुताबिक़ बेचने के लिए पेश कर दिया। उस वक़्त शाही ख़ानदान का एक रईस और मिस्री फ़ौजों का अफ़सर फ़ोतीफ़ार बाज़ार से गुज़र रहा था। उसने उनको ख़रीद लिया और अपने घर लाकर बीवी से कहा–

तर्जुमा– *'(देखो) इसको इ़ज़्ज़त से रखो, कुछ अजब नहीं कि यह हमको फ़ायदा बख़्शे या हम इसको अपना बेटा बना लें।* (यूसुफ़ 12-21)

फ़ोतीफ़ार ने हज़रत यूसुफ़ को औलाद की तरह इ़ज़्ज़त व एहतराम से रखा और अपने तमाम मामले और दूसरी ज़िम्मेदारियां उनके सुपुर्द कर दीं। यह सब कुछ अल्लाह की मंशा के मुताबिक़ हो रहा था।

तर्जुमा– *'और इसी तरह जगह दी हमने यूसुफ़ को उस मुल्क में और इस वास्ते कि उसको सिखाएं बातों का नतीजा और मतलब निकालना और अल्लाह ताक़तवर रहता है अपने काम में, लेकिन अक्सर आदमी ऐसे हैं जो नहीं जानते।'*

(यूसुफ़ 12-21)

Copyright OfflineDeeniApp

अज़ीज़े मिस्र की बीवी और यूसुफ़

कुएं में डाले जाने और गुलामी के बाद अब हज़रत यूसुफ़ की एक और आज़माइश शुरू हुई, वह यह कि हज़रत यूसुफ़ ﷺ की जवानी का आलम था। हुस्न और ख़ूबसूरती का कोई ऐसा पहलू न था जो उनके अन्दर मौजूद न हो। अज़ीज़े मिस्र की बीवी दिल पर क़ाबू न रख सकी और यूसुफ़ पर परवानावार निसार होने लगी, मगर नुबूवत के लिए मुंतख़ब आदमी से भला यह कैसे मुम्किन था कि अ़ज़ीज़ की बीवी के नापाक इरादों को पूरा करे। क़ुरआन में पेश आने वाले वाक़िए का ज़िक्र इस तरह से है—

तर्जुमा—*'और फुसलाया यूसुफ़ को उस औरत ने, जिसके घर में वह रहते थे, उसके नफ़्स के मामले में और दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी, आ मेरे पास आ।' यूसुफ़ ने कहा, 'ख़ुदा की पनाह'।* (यूसुफ़ 12 : 23)

बहरहाल हज़रत यूसुफ़ दरवाज़े की तरफ़ भागे तो अ़ज़ीज़ की बीवी ने पीछा किया और दरवाज़ा किसी तरह खुल गया। सामने अ़ज़ीज़े मिस्र और औरत का चचेरा भाई खड़े थे। अज़ीज़े मिस्र की बीवी बोली—

तर्जुमा—'कहने लगी उस शख़्स की सज़ा क्या है जो तेरे अह्ल के साथ बुराई का इरादा रखता हो, मगर यह कि क़ैद कर दिया जाए या दर्दनाक अ़ज़ाब में मुब्तला किया जाए। यूसुफ़ ने कहा, इसी ने मुझको मेरे नफ़्स के बारे में फुसलाया था और फ़ैसला किया औरत के ही घराने के एक आदमी ने कि अगर यूसुफ़ का पैरहन सामने से चाक है तो औरत सच्ची है और यूसुफ़ झूठा है और अगर पीछे से चाक है तो औरत झूठी है और यूसुफ़ सच्चा है। पस जब उसकी क़मीज़ को देखा गया तो पीछे से चाक था, कहा, बेशक ऐ औरत! यह तेरे मक्र व फ़रेब से है। बेशक तुम्हारा मक्र बहुत बड़ा है। यूसुफ़! तू इस मामले से दरगुज़र कर और ऐ औरत! तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग, तू बेशक ख़ताकार है। (यूसूफ़ 12 : 25-29)

अज़ीज़े मिस्र ने अगरचे फ़ज़ीहत और रुस्वाई से बचने के लिए इस मामले को यहीं पर ख़त्म कर दिया, मगर बात छिपी न रह सकी। क़ुरआन मजीद में आता है—

तर्जुमा—'और (जब इस मामले का चर्चा फैला) तो शहर की कुछ औरतें

Copyright OfflineDeeniApp

कहने लगीं, देखो अज़ीज़ की बीवी अपने ग़ुलाम पर डोरे डालने लगी कि उसे रिझा ले, वह उसकी चाहत में दिल हार गई हमारे ख़्याल में तो वह खुली बदचलनी में पड़ गई। पस जब अज़ीज़ की बीवी ने इन औरतों के मक्र को सुना, तो उनको बुला भेजा और उनके लिए मस्नदें तैयार कीं और (दस्तूर के मुताबिक़) हर एक को एक-एक छुरी पेश कर दी, फिर यूसुफ़ से कहा, इन सबके सामने निकल आओ। जब यूसुफ़ को इन औरतों ने देखा तो उसकी बड़ाई की क़ायल हो गईं, उन्होंने अपने हाथ काट लिए और (बे-अख़्तियार) पुकार उठी, यह तो इंसान नहीं, ज़रूर एक फ़रिश्ता है, बड़े रुत्बे वाला फ़रिश्ता। (अज़ीज़ की बीवी) बोली : तुमने देखा, यह है वह आदमी जिसके बारे में तुमने मुझे ताने दिए। (यूसुफ़ 12 : 30 से 33 तक)

अज़ीज़ की बीवी ने यह भी कहा कि बेशक मैंने उसका दिल अनपे क़ाबू में लेना चाहा था, मगर वह बे-क़ाबू न हुआ, मगर मैं कहे देती हूं कि अगर इसने मेरा कहा न माना तो यह होकर रहेगा कि वह क़ैद किया जाए और बेइज़्ज़ती में पड़े।

हज़रत यूसुफ़ ने जब यह सुना और फिर अज़ीज़े मिस्र की बीवी के अलावा और सब औरतों के चरित्र अपने बारे में देखे तो अल्लाह के हुज़ूर में हाथ फैलाकर दुआ की और कहने लगे—

तर्जुमा—'यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे पालनहार! जिस बात की तरफ़ यह मुझको बुलाती है, मुझे उसके मुक़ाबले में क़ैदख़ाने में रहना ज़्यादा पसन्द है और अगर तूने उनके मक्र को मुझसे न हटा दिया और मेरी मदद न की, तो मैं कहीं उनकी ओर झुक न जाऊं और नादानों में से हो जाऊं। पस उसके रब ने उसकी दुआ क़ुबूल की और उससे उनका मक्र हटा दिया। बेशक वह सुनने वाला, जानने वाला है।'

(यूसुफ़ 12 : 33-34)

अब अज़ीज़े मिस्र ने यूसुफ़ की तमाम निशानियां देखने और समझने के बाद अपनी बीवी की फ़ज़ीहत व रुसवाई होती देखकर यह तै कर ही लिया कि यूसुफ़ को एक मुद्दत के लिए क़ैदख़ाने में बन्द कर दिया जाए, ताकि यह मामला लोगों के दिलों से निकल जाए, ये चर्चे बन्द हो जाएं, इस तरह हज़रत यूसुफ़ ﷺ को जेल जाना पड़ा।

Copyright OfflineDeeniApp

यूसुफ़ ﷺ जेल में

तौरात में है कि यूसुफ़ के इल्मी और अ़मली जौहर क़ैदख़ाने में भी न छिप सके और क़ैदख़ाने का दारोग़ा उनके हलक़ा-ए-इरादत में दाख़िल हो गया और जेल का तमाम इन्तिज़ाम व इन्सिराम उनके सुपुर्द कर दिया और वह क़ैदख़ाने के बिल्कुल मुख़्तार हो गए।

क़ैदख़ाने में दावत व तब्लीग़

एक अच्छा इत्तिफ़ाक़ देखिए कि हज़रत यूसुफ़ ﷺ के साथ दो नवजवान और क़ैदख़ाने में दाख़िल हुए। उनमें से एक शाही साक़ी था और दूसरा था शाही बावर्चीख़ाने का दारोग़ा। एक दिन दोनों नवजवान हज़रत यूसुफ़ ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उनमें से साक़ी ने कहा कि मैंने यह ख़्वाब देखा है कि मैं शराब बनाने के लिए अंगूर निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा, मैंने यह देखा है कि मेरे सर पर रोटियों का ख़्वान है और परिंदे उसे खा रहे हैं।

यह सुनकर हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने फ़रमाया : बेशक अल्लाह तआ़ला ने जो बातें मुझे तालीम फ़रमाई हैं, उनमें से एक इल्म यह भी अ़ता फ़रमाया है। मैं इससे पहले कि तुम्हारा मुक़र्ररा खाना तुम तक पहुंचे, तुम्हारे ख़्वाबों की ताबीर बता दूंगा, मगर तुमसे एक बात कहता हूं, ज़रा इस पर भी ग़ौर करो और समझो-बूझो।

तर्जुमा–'ऐ मज्लिस के साथियो! (तुमने इस पर भी ग़ौर किया कि) जुदा-जुदा माबूदों का होना बेहतर है या एक अल्लाह का जो अकेला और सब पर ग़ालिब है। तुम इसके सिवा जिन हस्तियों की बन्दगी करते हो, उनकी हक़ीक़त इससे ज़्यादा क्या है कि सिर्फ़ कुछ नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं। हुकूमत तो अल्लाह ही के लिए है। उसका फ़रमान यह है कि सिर्फ़ उसकी बन्दगी करो और किसी की न करो, यही सीधा दीन है, मगर अक्सर आदमी ऐसे हैं जो नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 39-40)

रुश्द व हिदायत के इस पैग़ाम के बाद हज़रत यूसुफ़ उनके ख़्वाबों की

Copyright OfflineDeeniApp

ताबीर की तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाने लगे—

'दोस्तो! जिसने देखा है कि वह अंगूर निचोड़ रहा है, वह फिर आज़ाद होकर बादशाह के साथी की ख़िदमत अंजाम देगा और जिसने रोटियों वाला ख़्वाब देखा है, उसको सूली दी जाएगी और परिंदे उसके सर को नोच-नोच कर खाएंगे।'

हज़रत यूसुफ़ जब ख़्वाब की ताबीर से फ़ारिग़ हो गए तो साक़ी से, यह समझकर कि वह नजात पा जाएगा, फ़रमाने लगे, 'अपने बादशाह से मेरा ज़िक्र करना।' साक़ी को जब रिहा किया गया तो उसको अपनी मश्ग़ूलियतों में कुछ भी याद न रहा और कुछ साल तक और यूसुफ़ को जेल में रहना पड़ा।

फ़िरऔन का ख़्वाब

हज़रत यूसुफ़ अभी जेल ही में थे कि वक़्त के फ़िरऔन ने एक ख़्वाब देखा कि सात मोटी गाएं हैं और सात दुबली गाएं, दुबली गाएं मोटी गायों को निगल गईं और सात सरसब्ज़ व शादाब बालियां हैं और सात सूखी बालियों ने हरी बालियों को खा लिया। बाशाह सुबह उठा और फ़ौरन दरबार के मुशीरों से अपना ख़्वाब कहा। दरबारी इस ख़्वाब को सुनकर तरद्दुद में पड़ गए। इस बीच साक़ी को अपना ख़्वाब और हज़रत यूसुफ़ की दी हुई ताबीर का वाक़िया याद आ गया। उसने बादशाह की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि अगर कुछ मोहलत दीजिए तो मैं उसकी ताबीर ला सकता हूं। बादशाह की इजाज़त से वह क़ैदख़ाना पहुंचा और हज़रत यूसुफ़ को बादशाह का ख़्वाब सुनाया और कहा कि आप इसको हल कीजिए। हज़रत यूसुफ़ ने उसी वक़्त ख़्वाब की ताबीर दी और सही तदबीर भी बतला दी जैसा कि क़ुरआन में ज़िक्र किया गया है—

तर्जुमा—'कहा, तुम खेती करोगे सात बरस जम कर, सो जो काटो उसको छोड़ दो उसके बाली में, मगर थोड़ा-सा जो तुम खाओ, फिर आएंगे इसके बाद सात वर्ष सख़्ती के, खा जाएंगे जो रखा तुमने उसके वास्ते मगर थोड़ा तो रोक रखोगे बीज के वास्ते, फिर आएगा, एक वर्ष उसके पीछे उसमें वर्षा होगी लोगों पर और उसमें रस निचोड़ेंगे।'

(यूसुफ़ 12 : 47-49)

Copyright OfflineDeeniApp

साक़ी ने यह सब मामला बादशाह के सामने जा सुनाया। बादशाह ने ख़्वाब की ताबीर का मामला देखकर कहा कि ऐसे आदमी को मेरे पास लाओ। जब बादशाह का दूत हज़रत यूसुफ़ के पास पहुंचा तो हज़रत यूसुफ़ ने क़ैदख़ाने से बाहर आने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि इस तरह तो मैं जाने को तैयार नहीं हूं, तुम अपने आक़ा के पास जाओ और उससे कहो कि वह यह जांच करे कि इन औरतों का मामला क्या था, जिन्होंने हाथ काट लिए थे? पहले यह बात साफ़ हो जाए कि उन्होंने कैसी कुछ मक्कारियां की थीं और मेरा परवरदिगार तो उनकी मक्कारियों को ख़ूब जानता है।

ग़रज़ बादशाह ने जब यह सुना तो उन औरतों को बुलवाया और उनसे कहा कि साफ़-साफ़ और सही-सही बताओ कि इस मामले की सही हक़ीक़त क्या है, जबकि तुमने यूसुफ़ पर डोरे डाले थे, ताकि तुम उसको अपनी तरफ़ मायल कर लो? वह एक ज़ुबान होकर बोलीं–

तर्जुमा–'बोलीं : माशाअल्लाह! हमने इसमें बुराई की कोई बात नहीं पाई? (यूसुफ़ 12-51)

मज्मा में अ़ज़ीज़ की बीवी भी थी और अब वह इश्क़ व मुहब्बत की भट्टी में ख़ाम न थी, कुन्दन थी और ज़िल्लत व रुस्वाई के डर से आगे निकल चुकी थी। उसने जब यह देखा कि यूसुफ़ की ख़्वाहिश है कि हक़ीक़ते हाल सामने आ जाए तो बे-अख़्तियार बोल उठी–

तर्जुमा–*'जो हक़ीक़त थी, वह अब ज़ाहिर हो गई, हां! वह मैं ही थी, जिसने यूसुफ़ पर डोरे डाले कि अपना दिल हार बैठे। बेशक वह (अपने बयान में) बिल्कुल सच्चा है।'* (यूसुफ़ 12 : 51)

इस तरह अब वह वक़्त आ गया कि तोहमत लगाने वालों की ज़ुबान से ही साफ़ हो जाए, चुनांचे वाज़ेह और ज़ाहिर हो गया यानी शाही दरबार में मुजिरमों ने जुर्म का एतराफ़ करके यह बता दिया कि यूसुफ़ का दामन हर क़िस्म की आलूदगियों से पाक है। फ़िरऔन पर जब हक़ीक़त वाज़ेह हो गई तो उसके दिल में हज़रत यूसुफ़ की अ़ज़्मत व जलालत का सिक्का बैठ गया, वह कहने लगा–

तर्जुमा–'उसको (जल्द) मेरे पास लाओ कि मैं उसको ख़ास अपने कामों

Copyright OfflineDeeniApp

के लिए मुक़र्रर करो।

(यूसुफ़ 12 - 53)

फ़िरऔन के इस हुक्म की तामील में हज़रत यूसुफ़ ﷺ बादशाह के दरबार में तशरीफ़ लाए, तो फ़िरऔन ने कहा–

तर्जुमा–'बेशक आज के दिन तू हमारी निगाहों में बड़े इक़्तिदार वाला और अमानतदार है।'

(यूसुफ़ 12 : 54)

और उनसे मालूम किया कि मेरे ख़्वाब में अकाल का ज़िक्र है, उसके बारे में मुझको क्या-क्या उपाय करने चाहिए। हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया–

तर्जुमा–'अपने राज्य के ख़ज़ानों पर आप मुझे मुख़्तार (अख़्तियार वाला) कर दीजिए, मैं हिफ़ाज़त कर सकता हूं और मैं इस काम का जानने वाला हूं।'

(यूसुफ़ 12 : 55)

चुनांचे बादशाह नें ऐसा ही किया और हज़रत यूसुफ़ को अपने पूरे राज्य का मुकम्मल ज़िम्मेदार बना दिया और शाही ख़ज़ाने की कुंजियां उनके हवाले करके मुख़्तारे आ़म कर दिया। इसीलिए अल्लाह तआ़ला ने अ़ज़ीज़ के कारोबार का मुख़्तार बनाकर यूसुफ़ के लिए यह फ़रमाया था कि हमने उसको *'तम्कीन फ़िल अर्ज़ि'* (ज़मीन का पूरा मालिक व मुख़्तार) अ़ता कर दी। सूरः यूसुफ़ में 'तम्कीन फ़िल अर्ज़ि' की ख़ुशख़बरी दो बार सुनाई गई है। ग़रज़ हज़रत यूसुफ़ ने मिस्र राज्य के मुख़्तारे कुल होने के बाद ख़्वाब से मुताल्लिक़ वे तमाम तदबीरें शुरू कर दीं जो चौदह साल के अन्दर फ़ायदेमंद हो सकें और पब्लिक अकाल के दिनों में भी भूख और परेशानहाली से बची रह सके।

अकाल और याक़ूब ﷺ का ख़ानदान

ग़रज़ जब अकाल का ज़माना शुरू हुआ तो मिस्र और उसके आस-पास के इलाक़े में सख़्त अकाल पड़ा और कनआ़न में हज़रत याक़ूब ने साहबज़ादों से कहा कि मिस्र में अ़ज़ीज़े मिस्र ने एलान किया है कि उसके पास ग़ल्ला हिफ़ाज़त से रखा हुआ है, तुम सब जाओ और ग़ल्ला ख़रीद कर लाओ। चुनांचे बाप के हुक्म के मुताबिक़ यह कनआ़नी क़ाफ़िला मिस्र के अ़ज़ीज़ से ग़ल्ला लेने के लिए मिस्र रवाना हुआ–

तर्जुमा–*'और यूसुफ़ के भाई (ग़ल्ला ख़रीदने मिस्र) आए। वे जब यूसुफ़*

Copyright OfflineDeeniApp

के पास पहुच ता उसन फ़ारन उनको पहचान लिया और वे यूसुफ़ को न पहचान सके।'

(यूसुफ़ 12 : 58)

तौरात का बयान है कि यूसुफ़ के भाइयों पर जासूसी का इलज़ाम लगाया गया और इस तरह उनको यूसुफ़ के सामने हाज़िर होकर आमने-सामने बात करने का मौक़ा मिला और उन्होंने अपने बाप (हज़रत याक़ूब), सगे भाई (बिनयमीन) और घर के हालात को ख़ूब कुरेद-कुरेद कर पूछा और–

तर्जुमा–*'और जब यूसुफ़ ने उनका सामान मुहैया कर दिया तो कहा, अब आना तो अपने सौतेले भाई बिन यमीन को भी साथ लाना। तुमने अच्छी तरह देख लिया है कि मैं तुम्हें (ग़ल्ला) पूरी तौल देता हूं और बाहर से आने वालों के लिए बेहतर मेहमान नवाज़ हूं, लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो फिर याद रखो, न तुम्हारे लिए मेरे पास ख़रीद व फ़रोख़्त होगी, न तुम मेरे पास जगह पाओगे।'*

(यूसुफ़ 12 - 59-60)

फिर यूसुफ़ के भाई जब हज़रत यूसुफ़ से रुख़्सत होने आए, तो उन्होंने अपने नौकरों को हुक्म दिया कि ख़ामोशी के साथ उनके कजावों में उनकी वह पूंजी भी रख दो जो उन्होंने ग़ल्ले की क़ीमत के नाम से दी है, ताकि जब घर जाकर उसको देखें, तो अजब नहीं कि फिर दोबारा आएं।

जब यह क़ाफ़िला कनआन वापस पहुंचा तो उन्होंने अपने तमाम हालात अपने बाप याक़ूब को सुनाए और उनसे कहा कि मिस्र के वाली (ज़िम्मेदार मालिक) ने साफ़-साफ़ हमसे कह दिया है कि उस वक़्त तक यहां न आना और न ग़ल्ले की ख़रीद का ध्यान करना, जब तक कि अपने सौतेले भाई बिन यमीन को साथ न लाओ, इसलिए अब आपको चाहिए कि उनको हमारे साथ कर दें, हम उसके हर तरह के निगहबान और हिफ़ाज़त करने वाले हैं। इस मौक़े पर हज़रत याक़ूब ने कहा–

तर्जुमा–*कहा, क्या मैं तुम पर (बिन यमीन) के बारे में ऐसा ही एतमाद करूं जैसा कि इससे पहले उसके भाई (यूसुफ़) के बारे में कर चुका हूं, सो अल्लाह ही बेहतरीन हिफ़ाज़त करने वाला है और वह ही सबसे बढ़कर रहम करने वाला है।*

(यूसुफ़ 12 : 64)

इस बात-चीत से फ़ारिग़ होने के बाद अब उन्होंने अपना सामान खोलना

Copyright OfflineDeeniApp

शुरू किया, तो देखा, उनकी पूजा उन्हीं को वापस कर दी गई है। यह देखकर वे कहने लगे, ऐ बाप! इससे ज़्यादा और क्या हमको चाहिए? अब हमें इजाज़त दें कि हम दोबारा उसके पास जाएं और घर वालों के लिए रसद लाएं और बिन यमीन को भी हमारे साथ भेज दे, हम उसकी पूरी हिफ़ाज़त करेंगे।

हज़रत याक़ूब ने फ़रमाया कि मैं बिन यमीन को हरगिज़ तुम्हारे साथ नहीं भेजूंगा, जब तक तुम अल्लाह के नाम पर मुझसे अ़ह्द न करो। ग़रज़ अ़ह्द व पैमान के बाद यूसुफ़ के भाइयों का क़ाफ़िला दोबारा मिस्र को रवाना हुआ और इस बार बिनयमीन भी साथ था। हज़रत याक़ूब ने उनको रुख़्सत करते वक़्त नसीहतें फ़रमाईं– .

तर्जुमा–*फिर जब ये मिस्र में उसी तरह दाख़िल हुए जिस तरह उनके बाप ने उनको हुक्म दिया, तो यह (एहतियात) उनको अल्लाह की मशीयत के मुक़ाबले में कुछ काम न आई, मगर यह एक ख़्याल था याक़ूब के जी में जो उसने पूरा कर लिया और बेशक वह इल्म वाला था और हमने ही उसको यह इल्म सिखाया था, लेकिन अक्सर लोग नहीं समझते।'* (यूसुफ़ 12 : 68)

इस बीच यह सूरत पेश आई कि जब यूसुफ़ के भाई कनआ़न से रवाना हुए, तो रास्ते में बिनयमीन को तंग करना शुरू कर दिया। कभी उसको बाप की मुहब्बत का ताना देते और कभी इस बात पर हसद करते कि अज़ीज़े मिस्र ने ख़ास तौर पर उसको क्यों बुलाया है और जब ये लोग मंज़िले मक़्सूद पर पहुंचे तो–

तर्जुमा–*'और जब ये सब यूसुफ़ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई (बिन यमीन) को अपने पास बिठा लिया और उससे (धीरे से) कहा, मैं तेरा भाई (यूसुफ़) हूं पस जो बदसुलूकी ये तेरे साथ करते आए हैं, तू उस पर ग़मगीन न हो।'*

(यूसुफ़ 12 : 69)

कनआ़नी क़ाफ़िला कुछ दिनों के क़ियाम के बाद जब रुख़्सत होने लगा तो यूसुफ़ ﷺ ने हुक्म दिया कि उनके ऊंटों को इस क़दर लाद दो, जितना ये ले जा सकें। हज़रत यूसुफ़ ﷺ की यह ख़्वाहिश थी कि किसी तरह अपने प्यारे भाई बिनयमीन को अपने पास रोक लें, लेकिन मिस्र की हुकूमत के क़ानून के मुताबिक़ किसी ग़ैर-मिस्री को बग़ैर किसी माक़ूल वजह के रोक लेना

Copyright OfflineDeeniApp

सख़्त मना था और हज़रत यूसुफ़ उस वक़्त हक़ीक़त खोलना नहीं चाहते थे, इसलिए जब क़ाफ़िला रवाना होने लगा तो किसी को इत्तिला किए बग़ैर शाही पैमाने को बिन यमीन की ख़ुरजी में रख दिया, (ताकि भाई के पास एक निशानी रहे।)

तर्जुमा–*'उस (यूसुफ़ ने अपने भाई बिन यमीन) के कजावे में कटोरा रख दिया।'* (यूसुफ़ 12 : 70)

कनआ़न के इस क़ाफ़िले ने अभी थोड़ा ही फ़ासला तै किया होगा कि यूसुफ़ के कारिंदों ने शाही बरतनों की देख-भाल की, तो उसमें प्याला न मिला, समझे कि शाही महल में कन्आ़नियों के सिवा दूसरा कोई नहीं आया, इसलिए उन्होंने ही चोरी की है, फ़ौरन दौड़े और चिल्लाए।

तर्जुमा–'फिर पुकारा पुकारने वाले ने, ऐ क़ाफ़िले वालो! तुम तो अलबत्ता चोर हो। वे कहने लगे उनकी ओर मुंह करके तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई? वे कारिन्दे बोले, हम नहीं पाते बादशाह (यूसुंफ़) का पैमाना (कटोरा) और जो कोई उसको लाए उसको मिले एक ऊंट का बोझ (ग़ल्ला) और मैं हूं उसका ज़ामिन। वे बोले, ख़ुदा की क़सम! तुमको मालूम है कि हम शरारत करने को नहीं आए मिस्र के मुल्क में और न हम कभी चोर थे। वे (कारिंदे) बोले, फिर क्या सज़ा है उसकी अगर तुम निकले झूठे। कहने लगे, उसकी सज़ा यह है कि जिनके सामानों में हाथ आए, वही उसके बदले में जाए। हम यही सज़ा देते हैं ज़ालिमों को।' (यूसुफ़ 12 : 71-75)

इस मरहले के बाद यह मामला अ़ज़ीज़े मिस्र के सामने पेश हुआ और उनकी तलाशी ली गई तो बिनयमीन के कजावे में वह प्याला मौजूद था।

तर्जुमा–'फिर यूसुफ़ ने उनकी ख़ुर्जियां देखनी शुरू कीं। आख़िर में वह बरतन निकाला अपने भाई की ख़ुरजी से।' (यूसुफ़ 12 : 76)

इसके बाद अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है–

तर्जुमा–'यों ख़ुफ़िया तदबीर कर दी हमने यूसुफ़ के लिए। वह हरगिज़ न ले सकता था अपने भाई यमीन को उस बादशाह (मिस्र) के तरीक़े के मुताबिक़, मगर यह कि अल्लाह तआ़ला ही चाहे। (यूसुफ़ 12 : 76)

इस तरह बिन यमीन को मिस्र में रोक लिया गया और यूसुफ़ के भाइयों

Copyright OfflineDeeniApp

ने जब यह रंग देखा तो बाप का अ़ह्द व पैमान याद आ गया और ख़ुशामद भरे अ़र्ज़-मारूज़ करके अ़ज़ीज़े मिस्र को बिनयमीन की वापसी की तर्ग़ीब दिलाई। यह तरीक़ा भी कामियाब न हो सका तो आपस में मश्विरे से यह तै पाया कि वालिद बुज़ुर्गवार को सही सूरत बतला दी जाए और कहा कि वे इस वाक़िए की तस्दीक़ दूसरे क़ाफ़िले वालों से भी कर लें। इस मश्विरे के मुताबिक़ यूसुफ़ के भाई कनआ़न वापस आए और हज़रत याक़ूब से बिना कुछ घटाए-बढ़ाए सारा वाक़िया कह सुनाया। हज़रत याक़ूब यूसुफ़ के मामले में उनकी सदाक़त का तजुर्बा कर चुके थे, इसलिए फ़रमाया : 'तुम्हारे जी ने एक बात बना ली है, वाकिया यों नहीं है—बिन यमीन और चोरी? यह नहीं हो सकता, ख़ैर अब सब्र के सिवा कोई चारा नहीं, ऐसा सब्र कि बेहतर से बेहतर हो। अल्लाह तआ़ला के लिए नामुम्किन तो नहीं कि एक दिन इन गुम लोगों को फिर जमा कर दे और एक साथ इन दोनों को मुझसे मिला दे। बेशक वह दाना है और हिक्मत वाला है और उनकी ओर से रुख़ फेर लिया और फ़रमाने लगे—

'आह! यूसुफ़ की जुदाई का ग़म!'

हज़रत याक़ूब عليه السلام की आंखें ग़म की ज़्यादती की वजह से रोते-रोते सफ़ेद पड़ गई थीं और सीना ग़म की जलन से जल रहा था, मगर सब्र के साथ अल्लाह पर तकिया किए बैठे थे।

बेटे यह हाल देखकर कहने लगे—

'ख़ुदा की क़सम! तुम हमेशा इसी तरह यूसुफ़ की याद में घुलते रहोगे या इसी ग़म में जान दे दोगे!'

हज़रत याक़ूब ने यह सुनकर फ़रमाया, 'मैं कुछ तुम्हारा शिकवा तो नहीं करता और न तुमको सताता हूं—

तर्जुमा—'बल्कि मैं तो अपनी हाजत और ग़म अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ करता हूं। मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 86)

बहरहाल हज़रत याक़ूब ने अपने बेटों से फ़रमाया : देखो, एक बार फिर मिस्र जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की

Copyright OfflineDeeniApp

रहमत से नाउम्मीद और मायूस न हो, इसलिए कि अल्लाह की रहमत से ना उम्मीदी काफ़िरों का शेवा है।'

यूसुफ़ के भाइयों ने तीसरी बार फिर मिस्र का इरादा किया और शाही दरबार में पहुंच कर अपनी परेशानी बयान की और ख़ुसूसी लुत्फ़ व करम की दरख़्वास्त भी की। हज़रत यूसुफ़ ने परेशानी का हाल सुना तो दिल भर आया और आपसे ज़ब्त न हो सका कि ख़ुद को छिपाएं और राज़ ज़ाहिर न होने दें। आख़िर फ़रमाने लगे—

तर्जुमा—'क्यों जी, तुम जानते हो कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या मामला किया, जबकि तुम जिहालत में डूबे हुए थे?'

(यूसुफ़ 12 : 89)

भाइयों ने यह उम्मीद के ख़िलाफ़ सुनकर कहा—

तर्जुमा—'क्या तू वाक़ई यूसुफ़ ही है?' (यूसुफ़ 12-87)

हज़रत यूसुफ़ ने जवाब दिया—

तर्जुमा—'हां, मैं यूसुफ़ हूं और यह (बिनयमीन) मेरा मांजाया भाई है। अल्लाह ने हम पर एहसान किया और जो आदमी भी बुराइयों से बचे और (मुसीबतों में) साबित क़दम रहे, तो अल्लाह नेक लोगों का अज्र बर्बाद नहीं करता।'

(यूसुफ़ 12-90)

यूसुफ़ के भाई यह सुनकर कहने लगे—

तर्जुमा—'ख़ुदा की क़सम, इसमें शक नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने तुझको हम पर बरतरी व बुलन्दी बख़्शी और बेशक हम पूरी तरह क़ुसूरवार थे।'

(यूसुफ़ 12 : 91)

हज़रत यूसुफ़ ने अपने सौतले भाइयों की ख़स्ताहाली और पशेमानी को देखा तो पैग़म्बराना रहमत और अ़फ़्व व दरगुज़र के साथ फ़ौरन फ़रमाया—

तर्जुमा—आज के दिन मेरी ओर से तुम पर कोई फटकार नहीं। अल्लाह तुम्हारा क़ुसूर बख़्शे और वह तमाम रहम करने वालों से बढ़कर रहम करने वाला है।

(यूसुफ़ 12-92)

हज़रत यूसुफ़ ने यह भी फ़रमाया—

तर्जुमा—'अब तुम कनआ़न वापस जाओ और मेरा पैरहन लेते जाओ, यह

Copyright OfflineDeeniApp

वालिद की आंखों पर डाल देना, इन्शाअल्लाह यूसुफ़ की ख़ुश्बू उनकी आंखों को रोशन कर देगी और तमाम ख़ानदान को मिस्र ले आओ।'

(यूसुफ़ 12-93)

इधर यूसुफ़ के भाइयों का क़ाफ़िला कनआ़न को यूसुफ़ का पैरहन लेकर चला, तो उधर हज़रत याक़ूब को वह्य इलाही ने यूसुफ़ की ख़ुश्बू से महका दिया। फ़रमाने लगे, ऐ याक़ूब के ख़ानदान! अगर तुम यह न समझो कि बुढ़ापे में उसकी अ़क़्ल मारी गई है, तो मैं यक़ीन के साथ कहता हूं कि मुझको यूसुफ़ की महक आ रही है। वे सब कहने लगे, 'ख़ुदा की क़सम! तुम तो अपने उसी पुराने ख़ब्त में पड़े हो, यानी इस क़दर मुद्दत गुज़र जाने के बाद भी, जबकि यूसुफ़ का नाम व निशान भी बाक़ी नहीं रहा, तुम्हें यूसुफ़ ही की रट लगी हुई है।'

कनआ़न का क़ाफ़िला वापस पहुंचा, तो वही हुआ जिसकी ओर हज़रत यूसुफ़ ने इशारा किया था—

तर्जुमा—'फिर जब बशारत देने वाला आ पहुंचा, तो उसने यूसुफ़ के पैरहन को याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, पस उसकी आंखें रोशन हो गईं। याक़ूब ने कहा, क्या मैं तुमसे न कहता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूं, जो तुम नहीं जानते।' (यूसुफ़ 12 : 96)

यूसुफ़ के भाइयों के लिए यह वक़्त बहुत कठिन था, शर्म व नदामत में डूबे हुए, सर झुकाये हुए बोले, ऐ बाप! आप अल्लाह की जनाब में हमारे गुनाहों की मग़्फ़िरत के लिए दुआ़ फ़रमाइए, बेशक हम ख़ताकार और क़ुसूरवार हैं।

हज़रत याक़ूब ﷺ ने फ़रमाया—

तर्जुमा—'बहुत जल्द मैं अपने रब से तुम्हारी मग़्फ़िरत की दुआ़ करूंगा, बेशक वह बड़ा बख़्शने वाला, रहम करने वाला है।' (यूसुफ़ 12 : 98)

याक़ूब का ख़ानदान मिस्र में

ग़रज़ हज़रत याक़ूब ﷺ अपने सब ख़ानदान को लेकर मिस्र रवाना हो गए। तौरात के मुताबिक़ मिस्र आने वाले सत्तर लोग थे। जब हज़रत यूसुफ़ ﷺ को इत्तिला हुई कि उनके वालिद ख़ानदान समेत शहर के क़रीब पहुंच

Copyright OfflineDeeniApp

गए तो वह फ़ौरन इस्तिक़बाल के लिए बाहर निकले। हज़रत याक़ूब ने एक लम्बी मुद्दत के बाद बेटे को देखा तो सीने से चिमटा लिया। हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने वालिद से अ़र्ज़ किया कि अब आप इ़ज़्ज़त व एहतराम और अम्न व हिफ़ाज़त के साथ शहर में तशरीफ़ ले चलें। हज़रत यूसुफ़ ने वालिद माजिद और तमाम ख़ानदान को शाही सवारियों में बिठा कर शहर और शाही महल में उतारा। इसके बाद एक दरबार सजाया गया। हज़रत यूसुफ़ ﷺ के वालिद को शाही तख़्त पर जगह दी गई। इसके बाद ख़ुद हज़रत यूसुफ़ शाही तख़्त पर बैठे। उस वक़्त दरबारी 'हुकूमत के दस्तूर के मुताबिक़' तख़्त के सामने ताज़ीम के लिए सज्दे में गिर पड़े। (ताज़ीम का यह तरीक़ा शायद पिछले नबियों में जायज़ रहा हो। नबी अकरम ﷺ ने इस क़िस्म की ताज़ीम को अपनी उम्मत के लिए हराम क़रार दिया है और उसको ज़ाते इलाही ही के लिए मख़्सूस बनाया है) यूसुफ़ ﷺ के तमाम ख़ानदान वालों ने भी यही अ़मल किया। यह देखकर हज़रत यूसुफ़ ﷺ को अपने बचपन का ज़म'ना याद आ गया और अपने वालिद से कहने लगे–

तर्जुमा–'और यूसुफ़ (ﷺ) ने कहा, ऐ बाप! यह है ताबीर उस ख़्वाब की जो मुद्दत हुई, मैंने देखा था, मेरे परवरदिगार ने उसे सच्चा साबित कर दिया।' (यूसुफ़ 12 : 100)

ऊपर के वाक़ियात के अच्छे ख़ात्मे से मुतास्सिर होकर यूसुफ़ बे-अख़्तियार हो गए और अल्लाह की जनाब में इस तरह दुआ़ की–

तर्जुमा–ऐ परवदिगार! तूने मुझे हुकूमत अ़ता फ़रमाई और बातों का मतलब और नतीजा निकालना तालीम फ़रमाया। ऐ आसमान व ज़मीन के बनाने वाले! तू ही मेरा कारसाज़ है, दुनिया में भी और आख़िरत में भी। तो यह भी कीजियो कि दुनिया से जाऊं तो तेरी फ़रमांबरदारी की हालत में जाऊं और उन लोगों में दाख़िल हो जाऊं जो तेरे नेक बन्दे हैं। (यूसुफ़ 12 : 101)

तौरात के मुताबिक़ इस वाक़िए के बाद हज़रत यूसुफ़ का तमाम ख़ानदान मिस्र ही में आबाद हो गया।

Copyright OfflineDeeniApp

वफ़ात

हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने अपनी ज़िंदगी के लम्बे अ़र्से को मिस्र ही में गुज़ारा और जब उनकी उम्र 110 साल की हुई तो उनकी वफ़ात हो गई तो उनको हुनूत (मम्मी) करके ताबूत में महफ़ूज़ रख दिया और उनकी वसीयत के मुताबिक़ जब मूसा के ज़माने में बनी-इसराईल मिस्र से निकले तो उस ताबूत को भी साथ लेते गए और अपने बाप-दादा की सरज़मीन ही में ले जाकर सुपुर्दे ख़ाक कर दिया। बताया गया है कि इनकी क़ब्र नाबलस के आस-पास है, यह कनआ़न का इलाक़ा है जिस पर अब इसराईल का क़ब्ज़ा है।

अहम अख़्लाक़ी बातें

1. अगर किसी आदमी का निजी मिज़ाज उम्दा हो और उसका माहौल भी पाक, मुक़द्दस, और लतीफ़ हो, तो उस आदमी की ज़िंदगी अख़्लाक़े करीमाना में नुमायां और अच्छी सिफ़तों में मुम्ताज़ होगी और वह हर क़िस्म के शरफ़ व मज्द का हामिल होगा।

2. अगर किसी आदमी में अल्लाह पर ईमान मज़बूत और साफ़-सुथरा हो और उस पर यक़ीन पक्का और मज़बूत हो तो फिर इस राह की तमाम परेशानियां और मुश्किलें उस पर आसान बल्कि आसानतर हो जाती हैं और हक़ देख-समझ लेने के बाद तमाम ख़तरे और मुसीबतें बेकार होकर रह जाती हैं।

3. इब्तिला और आज़माइश मुसीबत व हलाकत की शक्ल में हो या दौलत व सरवत और नफ़्सानी अस्बाब की सूरत में, हर हालत में इंसान को अल्लाह की जानिब ही रुजू करना चाहिए और उसी से इल्तिजा करनी चाहिए कि वह हक़ मामले पर साबित क़दम रखे।

4. जब अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और उसका इश्क़, दिल की गहराइयों में उतर जाता है, तो फिर इंसान की ज़िंदगी का तमामतर मक़्सद वही बन जाता है और उसके दीन की दावत व तब्लीग़ का इश्क़ हर वक़्त रग-रग में दौड़ता रहता है।

Copyright OfflineDeeniApp

5. दयानत और अमानत एक ऐसी नेमत है कि उसको इंसान को दीनी व दुन्यवी सआ़दतों की कुंजी कहना चाहिए।

6. ख़ुदएतमादी इंसान की बुलन्द सिफ़तों से एक बड़ी सिफ़त है। अल्लाह ने जिस आदमी को यह दौलत दी है, वही दुनिया की मुसीबतों और दुखों से गुज़र कर दुनिया और दीन दोनों की बुलन्दियों को हासिल कर सकता है।

7. सब्र एक शानदार 'ख़ुल्क़' है और बहुत-सी बुराइयों के लिए सपर और ढाल का काम देता है। क़ुरआन करीम में सबसे ज़्यादा जगहों पर उ़सकी फ़ज़ीलत का एलान किया गया है और अल्लाह तआ़ला ने ऊंचे रुत्बे और बुलन्द दर्जे का मदार इसी फ़ज़ीलत पर रखा है।

8. तक्लीफ़ पहुंचाने वाले भाइयों की नदामत के वक़्त सब्र का अख़्तियार करना यानी दिल की वुस्अ़त का सबूत है।

9. बेहतरीन अख़्लाक में शुक्र भी सबसे बेहतर अख़्लाक़ है, इसलिए यह अल्लाह के अख़्लाक़ में सबसे बुलन्द है।

10. हसद (जलन) और बुग़्ज़ (द्वेष) का अंजाम हसद करने वाले और बुग़्ज़ रखने वाले के हक़ ही में नुक़्सानदेह होता है और अगरचे कभी जिससे हसद और बुग़्ज़ किया गया है, उसको भी दुनिया का नुक़्सान पहुंच जाना मुम्किन है, लेकिन हसद करने वाला किसी हाल में भी फ़लाह नहीं पाता और वह दुनिया और आख़िरत में घाटा उठाने वाला जैसा हो जाता है, अलावा इसके कि तौबा कर ले और हसद वाली ज़िंदगी को छोड़ दे।

11. सदाक़त, दयानत, अमानत, सब्र और शुक्र जैसी ऊंची सिफ़तों वाली ज़िंदगी ही हक़ीक़ी और कामयाब ज़िंदगी है और अगर इंसान में ये सिफ़तें नहीं पाई जातीं, तो फिर वह इंसान नहीं, बल्कि हैवान है, बल्कि उससे भी बुरा।

हज़रत यूसुफ़ ﷺ की पूरी ज़िंदगी ऊपर लिखे अख़्लाक़ी मसलों पर गवाह है और इस दुआ़ के लिए दावत दे रही है—

'ऐ आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले! तू ही दुनिया और आख़िरत में मेरा मददगार है, तू मुझे अपनी इताअ़त पर मौत दीजियो और नेक लोगों के साथ शामिल कीजियो। (यूसुफ़ 12/101)

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम

शुऐब की क़ौम

हज़रत शुऐब मदयन या मदयान की ओर भेजे गए थे। मदयन एक क़बीले का नाम है, जो हज़रत इब्राहीम के बेटे मदयन की नस्ल से था। शुऐब भी चूंकि उसी नस्ल और उसी क़बीले से थे, इसलिए उनके भेजे जाने के बाद यह कौम 'शुऐब की क़ौम' (क़ौमे शुऐब) कहलाई।

मदयन या अस्हाबे ऐकः

कुरआन मजीद में इस क़बीले से मुताल्लिक़ हमको दो बातें बताई गई हैं—

तर्जुमा–'एक यह कि वह इमामे मुबीन पर आबाद था और लूत की क़ौम और मदयन दोनों बड़ी शाहराहें पर आबाद थे।' (15-79)

अरब के भूगोल में जो शाहराह (Main Road) हिजाज़ के ताजिर क़ाफ़िलों को शाम, फ़लस्तीन, यमन, बल्कि मिस्र तक ले जाती और लाल सागर के पूर्वी किनारे से होकर गुज़रती थी, कुरआन उसी को 'इमामे मुबीन' (खुला और साफ़ रास्ता) कहता है, जहां तक अस्हाबे ऐकः का ताल्लुक़ है, तो अरबी में 'ऐका' हरी-भरी झाड़ियों को कहते हैं जो झांदले की शक्ल अख़्तियार कर लेती है। इन दोनों बातों के जान लेने के बाद मदयन की आबादी के बारे में यही कहा जा सकता है कि मदयन का क़बीला लाल सागर के पूर्वी किनारे और अरब के उत्तर पश्चिम में ऐसी जगह आबाद था जो शाम से मिले हुए हिजाज़ का आख़िरी हिस्सा कहा जा सकता है। कुछ विद्वानों ने मदयन और अस्हाबे ऐका में फ़र्क़ किया हैं, लेकिन तर्जीही बात यही है कि मदयन और अस्हाबे ऐकः एक ही क़बीला है जो बाप की निस्बत से मदयन कहलाया और ज़मीन की तबई और जुग़राफ़ियाई (भौगोलिक) हैसियत से अस्हाबे ऐका कहलाया।

Maktab-e-Ashraf

Copyright OfflineDeeniApp

हक़ की दावत

बहरहाल शुऐब जब अपनी क़ौम में भेजे गए तो उन्होंने देखा कि अल्लाह की नाफ़रमानी और बड़े गुनाह के काम सिर्फ़ कुछ लोगों में ही नहीं पाए जाते, बल्कि सारी क़ौम इसकी शिकार है और अपनी बद-आ़मालियों में इतनी मस्त है कि एक लम्हे के लिए भी उनको यह एहसास नहीं होता कि यह जो कुछ हो रहा है, अल्लाह की नाफ़रमानी और गुनाह है बल्कि ये अपने इन आमाल को फ़ख़्र की वजह समझते हैं।

उनकी बहुत-सी नाफ़रमानियों और बद-अख़्लाक़ियों से हटकर जिन गंदे कामों ने ख़ास तौर से उनमें रिवाज पा लिया था, वे यह थे—

1. बुतपरस्ती और मुश्रिकाना रस्म और अ़क़ीदे,

2. ख़रीदे-बेचने में पूरा लेना और कम तौलना, यानी दूसरे को उसके हक़ से कम देना और अपने लिए हक़ के मुताबिक़ लेना, बल्कि उससे ज़्यादा।

3. तमाम मामलों में खोट और डाकाज़नी।

क़ौमों के आम रिवाज के मुताबिक़ असल में उनकी तनआसानी, ऐश परस्ती, दौलत की ज़्यादती, ज़मीन और बाग़ों की ज़रख़ेज़ी और हरियाली ने उनको इतना घमंडी बना दिया था कि वे इन तमाम चीज़ों को अपनी ज़ाती मीरास और अपना ख़ानदानी हुनर समझ बैठे थे और एक लम्हे के लिए भी उनके दिल में यह ख़तरा नहीं गुज़रता था कि यह सब कुछ अल्लाह की अ़ता और बख़्शिश है कि शुक्रगुज़ार होते और सरकशी से बाज़ रहते, ग़रज़ उनकी ख़ुशहाली ने उनमें तरह-तरह की बद-अख़्लाक़ियां और क़िस्म-क़िस्म के ऐब पैदा कर दिए थे।

आख़िर हक़ की ग़ैरत हरकत में आई और अल्लाह की सुन्नत के मुताबिक़ उनको हक़ का रास्ता दिखाने, नाफ़रमानियों और ग़लत और गन्दे कामों से बचाने और अमीन व मुत्तक़ी और अख़्लाक़ वाला बनाने के लिए उन्हीं में से एक हस्ती को चुन लिया और नुबूवत व रिसालत से नवाज़ कर उसको इस्लाम की दावत और हक़ के पैग़ाम का इमाम बनाया। यह हस्ती हज़रत शुऐब की ज़ाते गरामी थी।

Copyright OfflineDeeniApp

अल्लाह की तौहीद और शिर्क से बेज़ारी का एतक़ाद तो तमाम नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) की तालीम की मुश्तरक बुनियाद और असल है जो हज़रत शुऐब ﷺ के हिस्से में भी आई थी, मगर क़ौम की मख़्सूस बद-अख़्लाक़ियों पर तवज्जोह दिलाने और उनको सीधे रास्ते पर लाने के लिए उन्होंने इस क़ानून को भी अहमियत दी कि बेचने-ख़रीदने के मामले में यह हमेशा नज़रों में रहना चाहिए कि जो जिसका हक़ है, वह पूरा-पूरा उसको मिले कि दुन्यवी मामलों में यही एक ऐसी बुनियाद है जो डगमगा जाने के बाद हर क़िस्म के ज़ुल्म, फ़िस्क़ व फ़ुजूर और मुख़्लिक ख़राबियों और बद-अख़्लाक़ियों की वजह बनती है।

ख़ुलासा यह है कि हज़रत शुऐब ﷺ ने भी अपनी क़ौम की बद-आ़मालियों को देखकर बड़ा दुख महसूस किया और रुश्द व हिदायत की तालीम देते हुए क़ौम को उन्हीं उसूलों की तरफ़ बुलाया जो नबियों की दावत व इर्शाद का ख़ुलासा है—

उन्होंने फ़रमाया : 'ऐ क़ौम! एक अल्लाह की इबादत कर, उसके अलावा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है और ख़रीदने-बेचने में नाप-तौल को पूरा रख और लोगों के साथ मामलों में खोट न कर, कल तक मुम्किन है कि तुझको उन बद-अख़्लाक़ियों और बुराइयों का हाल मालूम न हुआ हो, मगर आज तेरे पास अल्लाह की हुज्जत, निशानी और बुरहान आ चुका, अब जह्ल व नादानी, अक़्ल व दरगुज़र के क़ाबिल नहीं है, हक़ को क़ुबूल कर और बातिल से बाज़ आ कि यही कामियाबी और कामरानी की राह है और अल्लाह की ज़मीन में फ़ित्ना व फ़साद न कर, जबकि अल्लाह तआ़ला ने उसकी सलाह व ख़ैर के तमाम सामान जुटा दिए, अगर तुझमें ईमान व यक़ीन की सदाक़त मौजूद है तो समझ कि यही फ़लाह व बहबूदी की राह है और देख ऐसा न कर कि हक़ की दावत के रास्ते को रोकने और लोगों को लूटने के लिए हर राह पर जा बैठे और जो आदमी भी ईमान ले आए उसको अल्लाह का रास्ता अख़्तियार करने पर धमकियां देने लगे और उसमें टेढ़ पैदा करने पर उतर आए। ऐ क़ौम के लोगो! उस वक़्त को याद करो और अल्लाह का एहसान मानो कि तुम बहुत थोड़े थे, फिर उसने अम्न व आ़फ़ियत देकर तुम्हारी

Copyright OfflineDeeniApp

तायदाद को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ा दिया—

'ऐ मेरी क़ौम! ज़रा इस पर भी ग़ौर कर कि जिन लोगों ने अल्लाह की ज़मीन में फ़साद फैलाने का तरीक़ा अख़्तियार किया था, उनका अंजाम कितना इबरतनाक हुआ, और अगर तुममें से एक जमाअ़त मुझ पर ईमान ले आई और एक जमाअ़त ईमान नहीं ले आई तो सिर्फ़ इतनी ही बात पर मामला ख़त्म हो जाने वाला नहीं, बल्कि सब्र के साथ इंतिज़ार कर, यहां तक कि अल्लाह तआ़ला हमारे दर्मियान आख़िरी फ़ैसला कर दे और वही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।'

हज़रत शुऐब बड़े फ़सीह व बलीग़ मुक़र्रिर (स्पष्ट और उत्साहवर्धक वक्ता) थे। शीरीं कलामी (बातों में मिठास) हुस्ने ख़िताबत (सुन्दर वक्तव्य) तर्ज़ेबयान (वर्णन-शैली) और तलाक़ते लिसानी (भाषा-विद्वता) में बहुत नुमायां इम्तियाज़ रखते थे, इसलिए मुफ़स्सिर (टीकाकार) उनको ख़तीबुल अंबिया के लक़ब से याद करते हैं। पस उन्होंने निहायत नर्म-गर्म हर तरीक़े से रुश्द व हिदायत के ये कलिमे कहे, पर उस बदबख़्त क़ौम पर ज़रा भी कोई असर न हुआ और कुछ कमज़ोर और बूढ़े लोगों के अलावा किसी ने हक़ के पैग़ाम पर कान न धरा, वे ख़ुद भी इसी तरह बद-आ़माल (दुष्कर्मी) रहे और दूसरों का रास्ता भी मारते रहे, वे रास्तों में बैठ जाते और हज़रत शुऐब के पास आने जाने वालों को हक़ क़ुबूल करने से रोकते और अगर मौक़ा लग जाता तो लोगों को लूट लेते। अगर इस पर भी कोई ख़ुशक़िस्मत हक़ पर लब्बैक कह देता, तो उसको डराते-धमकाते और तरह-तरह से टेढ़े रास्ते पर चलने पर आमादा करते, लेकिन इन तमाम बातों के बावजूद हज़रत शुऐब ﷺ की हक़ की दावत का सिलसिला बराबर जारी रहा, तो उनमें से बड़े क़िस्म के लोगों ने, जिन में अपनी शौकत और ताक़तवर पर घमंड था, हज़रत शुऐब ﷺ से कहाः ऐ शुऐब! दो बातों में से एक बात ज़रूर होकर रहेगी या हम तुझको और तुझ पर ईमान लाने वालों को अपनी बस्ती में से निकाल देंगे और तेरा देस निकाला करेंगे या तुझको मजबूर करेंगे कि फिर हमारे दीन में वापस आ जाओ।'

हज़रत शुऐब ﷺ ने फ़रमाया : 'अगर हम तुम्हारे दीन को ग़लत और

Copyright OfflineDeeniApp

बातिल समझते हों, तब भी ज़बरदस्ती मान लें, यह तो बड़ा ज़ुल्म है? और जबकि हमको अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे उस दीन से नजात दे दी तो फिर हम उसकी तरफ़ लौट जाएं, तो इसका मतलब तो यह होगा कि हमने झूठ बोलकर अल्लाह तआ़ला पर बोहतान बांधा, यह नामुम्किन है। हां, अगर अल्लाह की (जो कि हमारा परवरदिगार है) यही मर्ज़ी हो तो वह जो चाहेगा करेगा, हमारे रब का इल्म तमाम चीज़ों पर छाया हुआ है, हमारा तो सिर्फ़ उसी पर भरोसा है। ऐ परवरदिगार! तू हमारे और हमारी क़ौम के दर्मियान हक़ और सच्चाई के साथ फ़ैसला कर दे, तू ही बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है। क़ौम के सरदारों ने जब हज़रत शुऐब ﷺ का यह अ़ज़्म व इस्तिक़लाल देखा तो उन से चेहरा फेर कर अपनी क़ौम के लोगों से कहने लगा : 'ख़बरदार! अगर तुमने शुऐब का कहना माना तो तुम हलाक व बर्बाद हो जाओगे।'

हज़रत शुऐब ﷺ ने यह भी फ़रमाया : देखो, अल्लाह तआ़ला ने मुझको इसलिए भेजा है कि मैं अपनी ताक़त भर तुम्हारी इस्लाह की कोशिश करूं और मैं जो कुछ कहता हूं उसकी सदाक़त और सच्चाई के लिए अल्लाह की हुज्जत और दलील और निशानी भी पेश कर रहा हूं। मगर अफ़सोस तुम इस वाज़ेह हुज्जत को देखकर भी सरकशी और नाफ़रमानी पर क़ायम हो और मुख़ालफ़त का कोई पहलू ऐसा नहीं है जो तुमसे छूटा हुआ हो, फिर मैं तुमसे अपनी इस रुश्द व हिदायत के बदले में कोई उजरत भी नहीं मांगता और न कोई दुनिया के नफ़ा को तलब कर रहा हूं। मेरा बदला तो अल्लाह के पास है और अगर तुम अब भी न मानोगे, तो मुझे डर है कि कहीं अल्लाह का अ़ज़ाब तुमको हलाक व बर्बाद न कर डाले, उसका फ़ैसला अटल है और किसी की मजाल नहीं कि उसको रद्द कर दे।

क़ौम के सरदार त्यौरी चढ़ा कर बोले : शुऐब! क्या तेरी नमाज़ हमसे यह चाहती है कि हम अपने बाप-दादा के देवताओं को पूजना छोड़ दें और उसको अपने माल व दौलत में यह अख़्तियार न रहे कि जिस तरह चाहें, मामला करें, अगर हम कम तौलना छोड़ दें, लोगों के कारोबार में खोट न करें तो ग़रीब और क़ल्लाश होकर रह जाएं पस क्या ऐसी तालीम देने में तुझको कोई संजीदा और सच्चा रहबर कह सकता है?

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत शुऐब ﷺ ने बड़ी दिलसोज़ी और मुहब्बत के साथ फ़रमायाः 'ऐ क़ौम! मुझे यह डर लग रहा है कि तेरी ये बेबाकियां और अल्लाह के मुक़ाबले में नाफ़रमानियां कहीं तेरा भी वह अंजाम न कर दें, जो तुझसे पहले क़ौमे नूह, क़ौमे हूद, क़ौम सालेह और क़ौमे लूत का हुआ। अब भी कुछ नहीं गया, अल्लाह के सामने झुक जा और अपनी बद-किरदारियों के लिए बख़्शिश का तलबगार बन और हमेशा के लिए उनसे तौबा कर ले। बेशक मेरा परवरदिगार रहम करने वाला और बहुत ही मेहरबान है। वह तेरी तमाम ख़ताएं बख़्श देगा।

क़ौम के सरदारों ने यह सुनकर जवाब दिया, शुऐब! हमारी समझ में कुछ नहीं आता कि तू क्या कहता है? तू हम सबसे कमज़ोर और ग़रीब है। अगर तेरी बातें सच्ची होतीं, तो तेरी ज़िंदगी हम सबसे अच्छी होती और हमको सिर्फ़ तेरे ख़ानदान का डर है, वरना तुझको संगसार करके छोड़ते, तू हरगिज़ हम पर ग़ालिब नहीं आ सकता।

हज़रत शुऐब ने फ़रमाया : 'अफ़सोस है तुम पर! क्या तुम्हारे लिए अल्लाह के मुक़ाबले में मेरा ख़ानदान ज़्यादा डर की वजह बन रहा है, हालांकि मेरा रब तुम्हारे तमाम कामों का एहाता किए हुए है और वह दाना व बीना है।'

'ख़ैर, अगर तुम नहीं मानते तो तुम जानो, तो वह सब कुछ करते रहो जो कर रहे हो, बहुत जल्द अल्लाह का फ़ैसला बता देगा कि अज़ाब का हक़दार कौन है और कौन झूठा और काज़िब है, तुम भी इन्तिज़ार करो और में भी इन्तिज़ार करता हूं?'

आख़िर वही हुआ जो अल्लाह के क़ानून का अबदी व सरमदी फ़ैसला है, 'यानी हुज्जत व बुरहान की रोशनी आने के बाद भी जब बातिल पर इसरार हो और उसकी सच्चाई का मज़ाक़ उड़ाया जाए और उसकी इशाअत में रुकावटें डाली जाएं, तो फिर अल्लाह का अज़ाब इस मुजरिमाना ज़िंदगी का ख़ात्मा कर देता है और आने वाली क़ौमों के लिए उसको इबरत व मौइज़त बना दिया करता है।

Copyright OfflineDeeniApp

अ़ज़ाब की क़िस्में

क़ुरआन अज़ीज़ कहता है कि नाफ़रमानी और सरकशी के बदले में शुऐब की क़ौम को दो क़िस्म के अ़ज़ाब ने आ घेरा—एक ज़लज़ले का अ़ज़ाब और दूसरा आग की बारिश का अ़ज़ाब यानी जब वे अपने घरों में आराम कर रहे थे तो यकायक एक हौलनाक ज़लज़ला आया। अभी यह हौलनाकी ख़त्म भी न हुई थी कि ऊपर से आग बरसने लगी और नतीजा यह निकला कि सुबह को देखने वालों ने देखा कि कल के सरकश और मग़रूर आज घुटनों के बल औंधे झुलसे हुए पड़े हैं—

तर्जुमा—'फिर आ पकड़ा उनको ज़लज़ले ने, पस सुबह को रह गए अपने-अपने घरों के अन्दर औंधे पड़े।' (अल-आ़राफ़ 7 : 78)

तर्जुमा—'फिर उन्होंने शुऐब को झुठलाया, पस आ पकड़ा उनको बादल वाले अ़ज़ाब ने (जिसमें आग थी) बेशक वह बड़े हौलनाक दिन का अ़ज़ाब था।' (अश-शुअ़रा 26 : 189)

हज़रत शुऐब अ़ल० की क़ब्र

हज़रमौत में एक क़ब्र है, वहां के बाशिंदों का दावा है कि यह हज़रत शुऐब ﷺ की क़ब्र है, जो मदयन की हलाकत के बाद यहां बस गए थे और यहीं उनकी वफ़ात हुई।

सबक़ भरी नसीहतें

1. इस्लाम में बन्दों के हक़ की हिफ़ाज़त, समाजी दुरुस्तकारी और मामलों में दयानत व अमानत को इस दर्जा अहम समझा गया है कि अल्लाह ने जलीलुलक़द्र पैग़म्बर को भेजे जाने का मक़्सद इसी को क़रार दिया और इन्हीं मामलों की इस्लाह के लिए रसूल बनाकर भेजा।

2. ख़रीदने-बेचने में दूसरे के हक़ को पूरा न देना इंसानी ज़िंदगी में ऐसा रोग लगा देता है कि यह बद-अख़्लाक़ी बढ़ते-बढ़ते बन्दों के तमाम हक़ों के बारे में हक़ मारने की ख़स्लत पैदा कर देती है और इस तरह इंसानी शराफ़त

Copyright OfflineDeeniApp

और आपसी भाईचारा और मुहब्बत के रिश्ते को काट करके लालच, लोभ, ख़ुदग़रज़ी और कंजूसी जैसे ख़राब कामों वाला बना देती है।

3. नाप-तौल में इंसाफ़ सिर्फ़ चीज़ों के ख़रीदने-बेचने तक महदूद नहीं है, बल्कि इंसानी किरदार का यह कमाल होना चाहिए कि अल्लाह और उसके बन्दे के तमाम हक़ और फ़र्ज़ में इस असल को काम की बुनियाद बनाए और किसी मौक़े पर किसी हालत में भी अ़द्ल व इंसाफ़ के तराज़ू को हाथ से जाने न दे।

4. ख़रीदने-बेचने के दर्मियान नाप-तौल में कमी न करना और इंसाफ़ को बाक़ी रखना, गोया एक कसौटी है कि जो इंसानी ज़िंदगी के मामूली लेन-देन में अ़द्ल व इंसाफ़ नहीं बरतता, उससे क्या उम्मीद हो सकती है कि वह अहम दीनी और दुन्यवी मालों में अ़द्ल व इंसाफ़ को काम में लाएगा?

5. सुधार के बाद अल्लाह की ज़मीन में फ़साद पैदा करने से बढ़कर कोई जुर्म नहीं है, इसलिए कि ज़ुल्म, किब्र, क़त्ल और इस्मतरेज़ी जैसे बड़े-बड़े जुर्मों की बुनियाद और असल यही रज़ीला (गन्दे और घटिया काम) हैं।

6. नबियों और उनके मानने वालों की ज़िंदगी के पढ़ने से पता चलता है कि नबियों के रोशन दलील देने, आयातुल्लाह यानी अल्लाह की निशानियां दिखाने, मुहब्बत और रहम के जज़्बों को ज़ाहिर करने और अपनी दावत व तब्लीग़ पर किसी क़िस्म का अज्र तलब न करने का इत्मीनान दिलाते रहे हैं मगर इसके बावजूद दूसरी तरफ़ यानी बातिल पर क़ायम रहने वालों की तरफ़ से यही जवाब मिलता रहा है कि तुमको संगसार कर दिया जाएगा, क़त्ल कर दिया जाएगा। अल्लाह के पैग़म्बरों के वजूद तक को बरदाश्त नहीं किया गया और यहां तक कहा गया कि अगर सच्चे हो तो जिस अ़ज़ाब से डराते हो, वह अभी ले आओ, वरना तो हमेशा के लिए तुम्हारा और तुम्हारे मिशन का ख़ात्मा कर दिया जाएगा?

7. हक़ व बातिल का यही वह आख़िरी मरहला है जिसके बाद अल्लाह तआ़ला का वह क़ानून जिसको 'अ़मल के बदले का क़ानून' कहा जाता है, ऐसी सरकश और तकब्बुर भरी क़ौमों के लिए दुनिया ही में लागू हो जाता है और उनको हलाक व तबाह करके आने वाली नस्लों और क़ौमों के लिए

Copyright OfflineDeeniApp

इबरत और नसीहत का सामान जुटा देता है।

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम का ज़िक्र कुरआन पाक में

कुरआन हकीम में हज़रत शुऐब और उनकी क़ौम का तज़्किरा आराफ़, हूद और शुअ्रा में कुछ तफ़्सील से किया गया है और हिज्र व अंकबूत में थोड़े में है।

हज़रत मूसा व हारून अ़लैहिमस्सलाम

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की शुरूआती ज़िंदगी

बनी इसराईल मिस्र में

हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क़िस्से में बनी इसराईल का ज़िक्र सिर्फ़ इसी क़दर किया गया था कि हज़रत याक़ूब और उनका ख़ानदान हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम से मिलने मिस्र में आए, मगर उसके सदियों बाद फिर एक बार क़ुरआन करीम बनी इसराईल के वाक़िए तफ़्सील के साथ सुनाता है जिनसे मालूम होता है कि बनी इसराईल हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के ज़माने में मिस्र ही में बस गए थे। तौरात से और तफ़्सील मालूम होती है और यह भी कि हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने फ़िरअ़ौन से अपने बाप और ख़ानदान के लिए अर्ज़े जाशान (Goshen) तलब की जो फ़िरअ़ौन ने ख़ुशी-ख़ुशी उनके सुपुर्द कर दी। बहरहाल इन तफ़्सीलों से यह वात साफ़ हो जाती है कि बनी इसराईल हज़रत यूसुफ़ और हज़रत मूसा की दर्मियानी सदियों में मिस्र में आबाद रहे और उनकी तायदाद लगभग छः लाख हो गई थी। ('नेशनल ज्योग्रेफ़िक' जनवरी 1078 ई. के मुताबिक ये छः सौ ख़ानदान यानी पन्द्रह हज़ार लोगों से कुछ कम ही हो सकते हैं।)

फ़िरअ़ौन

शुरू ही में यह साफ़ कर देना ज़रूरी है कि 'फ़िरअ़ौन' मिस्र के बादशाहों

Copyright OfflineDeeniApp

का लक़ब है, किसी ख़ास हुक्मराँ या बादशाह का नाम नहीं है। तारीख़ी एतबार से तीन हज़ार साल क़ब्ल मसीह से शुरू होकर सिकन्दर आज़म के ज़माने तक फ़िरऔनों के 31 ख़ानदान मिस्र पर हुक्मरां रहे हैं। हज़रत मूसा के ज़माने में मिस्र का हुक्मरां (फ़िरऔन) कौन था और उसका क्या नाम था, यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता, इसलिए यहां फ़िरऔन को उस वक़्त के मिस्र का हुक्मरां (शासक) समझा जाए।

फ़िरऔन का ख़्वाब

तौरात में है और तारीख़ के माहिर भी कहते हैं कि फ़िरऔन को बनी इसराईल के साथ इसलिए दुश्मनी हो गई थी कि उस ज़माने के काहिनों, नजूमियों और क़याफ़ागरों ने उसको बताया था कि उसकी हुकूमत का ज़वाल एक इसराईली लड़के के हाथ से होगा और कुछ तारीख़ी रिवायतों में है कि फ़िरऔन ने एक भयानक ख़्वाब देखा था, जिसकी ताबीर दरबार के ज्योतिषियों और काहिनों ने वही दी थी, जिसका ज़िक्र गुज़र चुका है। इस पर फ़िरऔन ने एक जमाअ़त को इसलिए मुक़र्रर किया कि वह तफ़्तीश और तलाश के साथ इसराईली लड़कों को क़त्ल कर दे और लड़कियों को छोड़ दिया करे।

हज़रत मूसा ﷺ की पैदाइश

हज़रत मूसा का नसब (वंश) कुछ वास्तों से हज़रत याक़ूब तक पहुंचता है। उनके वालिद का नाम इमरान और वालिदा का नाम यूकाबुद था। इमरान के घर में मूसा की पैदाइश ऐसे ज़माने में हुई जबकि फ़िरऔन इसराईली लड़कों के क़त्ल का फ़ैसला कर चुका था। बहरहाल जूं-जूं करके तीन माह तक उनके पैदा होने की किसी को मुतलक़ ख़बर न होने दी। इस सख़्त और नाज़ुक वक़्त में आख़िर अल्लाह तआ़ला ने मदद की और मूसा की वालिदा के दिल में यह बात डाल दी कि एक ताबूत की तरह का सन्दूक़ बनाओ, जिस पर राल और रोग़न पालिश कर दो, ताकि पानी अन्दर असर न कर सके और उसमें उस बच्चे को हिफ़ाज़त से रख दो और फिर उस सन्दूक़ को नील नदी के बहाव

Copyright OfflineDeeniApp

पर छोड़ दो।

मूसा की मां ने ऐसा ही किया और साथ ही अपनी बड़ी लड़की यानी मूसा की बहन को लगाया कि वह इस सन्दूक़ के बहाव के साथ किनारे-किनारे चलकर सन्दूक़ को निगाह में रखे और देखे कि अल्लाह उसकी हिफ़ाज़त का वायदा किस तरह पूरा करता है, क्योंकि मूसा की वालिदा को अल्लाह तआ़ला ने यह बशारत पहले ही सुना दी थी कि हम इस बच्चे को तेरी ही तरफ़ वापस कर देंगे और यह हमारा पैग़म्बर और रसूल होगा।

फ़िरऔ़न के घर में तर्बियत

हज़रत मूसा ﷺ की बहन बराबर सन्दूक़ के बहाव के साथ-साथ किनारे-किनारे निगरानी करती जा रही थीं कि उन्होंने देखा सन्दूक तैरते हुए शाही महल के किनारे आ लगा और फ़िरऔ़न के घराने में से एक औरत ने ख़ादिमों के ज़रिए उसको उठवा लिया और शाही महल में ले गई। हज़रत मूसा ﷺ की हमशीरा (बहन) यह देखकर बहुत ख़ुश हुई और हालात की सही तफ़्सील मालूम करने के लिए शाही महल की नौकरानियों में शामिल हो गई।

यहां यह बात हो रही थी, उधर हज़रत मूसा ﷺ की वालिदा लतीफ़ा ग़ैबी के इन्तिज़ार में आंखें फैलाए हुए थीं कि लड़की (हज़रत मूसा ﷺ की बहन) ने आकर पूरी दास्तान कह सुनाई और कहा कि अब तुम चलकर अपने बच्चे को सीने से लगाओ और आंखें ठंडी करो और उसका शुक्र अदा करो कि उसने अपना वायदा पूरा कर दिया। इस तरह अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा ﷺ की परवरिश का पूरा इन्तिज़ाम कर दिया।

मूसा का मिस्र से निकलना

हज़रत मूसा ﷺ एक अ़र्से तक शाही तर्बियत में बसर करते-करते जवानी के दौर में दाख़िल हुए तो निहायत मज़बूत, कड़यल और बहादुर जवान निकले। चेहरे से रौब टपकता और बातों से एक ख़ास वक़ार और अ़ज़मत की शान ज़ाहिर होती थी। उनको यह भी मालूम हो गया था कि वह इसराईली

Copyright OfflineDeeniApp

हैं और मिस्री ख़ानदानों से इनकी कोई रिश्तेदारी नहीं है। उन्होंने यह भी देखा कि बनी इसराईल पर बड़े ज़ुल्म हो रहे हैं और वे मिस्र में बड़ी ज़िल्लत और ग़ुलामी की ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। यह देखकर उनका ख़ून खौलने लगता और मौक़े-मौक़े से इबरानियों की हिमायत व मदद में पेश पेश हो जाते।

एक बार शहरी आबादी से एक किनारे जा रहे थे कि देखा एक मिस्री एक इसराईली को बेगार के लिए घसीट रहा है। इसराईली ने मूसा को देखा तो लगा फ़रियाद करने और मदद चाहने। हज़रत मूसा को मिस्री की इस जाबिराना हरकत पर सख़्त ग़ुस्सा आया और उसको बाज़ रखने की कोशिश की, मगर मिस्री न माना, मूसा ने ग़ुस्से में आकर एक तमांचा रसीद कर दिया। मिस्री इस मार को सह न सका और उसी वक़्त मर गया। हज़रत मूसा ने यह देखा तो बहुत अफ़सोस किया, क्योंकि उनका इरादा बिल्कुल उसके क़त्ल का न था और नदामत व शर्मिन्दगी के साथ दिल में कहने लगे कि बेशक यह शैतान का काम है। वही इंसान को ग़लत रास्ते पर लगाता है और अल्लाह की दरगाह में अ़र्ज़ करने लगे कि यह जो कुछ हुआ, अनजाने में हुआ, मैं तुझसे माफ़ी चाहता हूं। अल्लाह ने भी उनकी ग़लती को माफ़ कर दिया और मग़्फ़िरत की बशारत से नवाज़ा।

इधर शहर में मिस्री के क़त्ल की ख़बर फैल गई, मगर क़ातिल का कुछ पता न चला। आख़िर फ़िरऔन के पास मदद तलब की कि यह काम किसी इसराईली का है, इसलिए आप मदद फ़रमाएं। फ़िरऔन ने कहा कि इस तरह सारी क़ौम से बदला नहीं लिया जा सकता, तुम क़ातिल का पता लगाओ, मैं उसको ज़रूर पूरी सज़ा दूंगा।

बुरा इत्तिफ़ाक़ कहिए या अच्छा इत्तिफ़ाक़ कि दूसरे दिन भी हज़रत मूसा शहर के किनारे पर सैर फ़रमा रहे थे कि देखा वही इसराईली एक क़िब्ती से झगड़ रहा है और क़िब्ती ग़ालिब है। मूसा को देखकर कल की तरह उसने आज भी फ़रियाद की और मदद चाही।

इस वाक़िए को देखकर हज़रत मूसा ﷺ ने दोहरी नागवारी महसूस की, एक तरफ़ क़िब्ती का ज़ुल्म था और दूसरी तरफ़ इसराईली का शोर व

Copyright OfflineDeeniApp

ग़ोग़ा और पिछले वाक़िए की याद थी, इसी झुंझलाहट में एक तरफ़ उन्होंने मिस्री को बाज़ रखने के लिए हाथ बढ़ाया और साथ ही इसराईली को भी झिड़कते हुए फ़रमाया *'इन्न-क ल-ग़वीयुन अमीन०'* (तू भी बेशक खुला हुआ गुमराह है) यानी ख़्वामख़ाही झगड़ा मोल लेकर दाद व फ़रियाद करता रहता है।

इसराईली ने हज़रत मूसा को हाथ बढ़ाते और फिर अपने मुताल्लिक़ नागवार और कड़वे अलफ़ाज़ कहते सुना तो यह समझा कि यह मुझको मारने के लिए हाथ बढ़ा रहे हैं और मुझको पकड़ में लेना चाहते हैं, इसलिए शरारत भरे अन्दाज़ में कहने लगा—

तर्जुमा—*'जिस तरह कल तूने एक जान (क़िब्ती) को हलाक किया था, उसी तरह आज मुझको क़त्ल कर देना चाहता है।'* (28 : 19)

मिस्री ने जब यह सुना तो उस वक़्त फ़िरऔनियों से जाकर सारी दास्तान कह सुनाई। उन्होंने फ़िरऔन को इत्तिला दी कि मिस्री का क़ातिल मूसा है। फ़िरऔन ने यह सुना तो जल्लाद को हुक्म दिया कि मूसा को गिरफ़्तार करके हाज़िर करे। मिस्रियों के इस मज्मे में एक मुअज़्ज़ज़ शहरी वह भी था जो दिल व जान से हज़रत मूसा से मुहब्बत रखता और इसराईली मज़हब को हक़ जानता था। यह फ़िरऔन ही के ख़ानदान का आदमी था और दरबार का हाज़िर-बाश। उसने फ़िरऔन का यह हुक्म सुना तो फ़िरऔनी जल्लादों से पहले ही दरबार से निकल कर दौड़ता हुआ हज़रत मूसा की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और उनसे सारा क़िस्सा बयान किया और उनको मश्विरा दिया कि इस वक़्त मस्लहत यही है कि ख़ुद को मिस्रियों से नजात दिलाइए और किसी ऐसे मक़ाम पर हिजरत कर जाइए जहां उनकी पकड़ न हो सके। हज़रत मूसा ने उसके मश्विरे को क़ुबूल फ़रमाया और अर्ज़े मदयन की तरफ़ ख़ामोशी के साथ रवाना हो गए।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की मिस्र से मदयन के लिए हिजरत

मूसा और मदयन का इलाक़ा

हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम के वाक़ियों में मदयन का ज़िक्र आ चुका है। मदयन की आबादी मिस्र से आठ मंज़िल पर वाक़े थी। हज़रत मूसा चूंकि फ़िरऔन के डर से भागे थे, इसलिए उनके साथ न कोई रफ़ीक़ और रहनुमा था और न ही रास्ते का ख़र्च और तेज़ भागने की वजह से नंगे पैर थे। इस परेशान हाली में मूसा मदयन के इलाक़े में दाख़िल हुए।

मदयन का पानी

जब मदयन की सरज़मीन में क़दम रखा तो देखा कि कुएं के सामने पानी के हौज़ (प्याऊ) पर भीड़ लगी हुई है और जानवरों को पानी पिलाया जा रहा है, मगर इस जमाअ़त से थोड़ी दूरी पर दो लड़कियां खड़ी हैं और अपने जानवरों को पानी पर जाने से रोक रही हैं।

बहरहाल हज़रत मूसा से यह हालत न देखी गई और आगे बढ़कर लड़कियों से मालूम किया : 'तुम क्यों नहीं पानी पिलातीं, पीछे किस लिए खड़ी हो?' दोनों ने जवाब दिया, हम मजबूर हैं, अगर जानवरों को लेकर आगे बढ़ते हैं तो ये ताक़तवर ज़बरदस्त हम को पीछे हटा देते हैं और हमारे वालिद बहुत बूढ़े हैं। अब उनमें यह ताक़त नहीं है कि उनके रोक को दूर कर सकें, पस जब ये सब पानी पिलाकर वापस हो जाएंगे, तब हम बचा हुआ पानी पिलाकर लौटेंगे, यही हमारा रोज़ का दस्तूर है।'

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को जोश आ गया और आगे बढ़कर तमाम भीड़ को चीरते हुए कुएं पर जा पहुंचे और कुएं का बड़ा डोल उठाया और तंहा खींच कर लड़कियों के मवेशियों को पानी पिला दिया। हज़रत मूसा जब भीड़ को चीरते

Copyright OfflineDeeniApp

हुए दर्राना घुसने लगे, तो अगरचे लोगों को नागवार गुज़रा, लेकिन उनकी जलाली सूरत और जिस्मानी ताक़त से मर्ऊब हो गये और डोल को तंहा खींचते हुए देखकर उसी ताक़त से हार मान गए जिसके बलबूते पर कमज़ोरों और नातवानों को पीछे हटा दिया करते और उनकी ज़रूरतों को पामाल करते रहते थे।

ग़रज़ जब इन लड़कियों के जानवरों ने पानी पी लिया तो वे घर को वापस चलीं, घर पहुंचीं तो आदत के ख़िलाफ़ जल्द वापसी पर उनके बाप को बड़ा ताज्जुब हुआ, पूछने पर लड़कियों ने गुज़रा हुआ माजरा कह सुनाया कि किस तरह उनकी एक मिस्री ने मदद की। बाप ने कहा, 'जाओ और उसको मेरे पास लेकर आओ।'

यहां तो बाप-बेटी के दर्मियान यह बात-चीत हो रही थी और उधर हज़रत मूसा पानी पिलाने के बाद क़रीब ही एक पेड़ के साए में बैठकर सुस्ताने लगे। मुसाफ़रत, अजनबीपन और भूख-प्यास, इस हालत में उन्होंने दुआ की–

तर्जुमा– *'परवरदिगार! इस वक़्त जो भी बेहतर सामान मेरे लिए तू अपनी कुदरत से नाज़िल करे, मैं उसका मुहताज हूं।'* (28 : 24)

लड़की वहां पहुंची तो देखा कि कुएं के क़रीब ही हज़रत मूसा ﷺ बैठे हुए हैं। शर्म व हया के साथ नज़रें नीचे किए लड़की ने कहा, 'आप हमारे घर चलिए, वालिद बुलाते हैं। वह आपके इस एहसान का बदला देंगे।'

हज़रत मूसा ﷺ यह सुनकर उठ खड़े हुए और लड़की की रहनुमाई में चल पड़े और लड़कियों के बाप की ख़िदमत में हाज़िर होकर मुलाक़ात का शरफ़ हासिल किया। उन बुज़ुर्ग ने पहले तो खाना खिलाया और उनके हालात सुने। हज़रत मूसा ने ठीक ठीक अपनी पैदाइश और फ़िरऔन के बनी इसराईल पर मज़ालिम से शुरू करके आख़िर तक सारी दास्तान कह सुनाई। बुज़ुर्ग ने हज़रत मूसा को तसल्ली दी और फ़रमाया कि अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अब तुमको ज़ालिमों के पंजे से निजात मिल गई। अब कोई डरने की बात नहीं है। क़ुरआन करीम ने उन बुज़ुर्ग को शेख़े कबीर कहा है।

शेख़ की बेटी से निकाह का रिश्ता

ऊपर की बातों के दौरान उस लड़की ने, जो हज़रत मूसा ﷺ को बुलाने

Copyright OfflineDeeniApp

गई थी, अपने बाप से कहा–

तर्जुमा–*'ऐ बाप! आप उस मेहमान को अपने मवेशियों के चराने और पानी मुहैया करने के लिए अज्र पर रख लीजिए। अज्र पर किसी बेहतर आदमी को रखा जाए, जो मज़बूत भी हो और अमानतदार भी।'*(अल-क़सस 28 : 26)

बुज़ुर्ग बाप ने बेटी की इन बातों को सुना तो बहुत मसरूर हुए और हज़रत मूसा से कहा कि अगर तुम आठ साल तक मेरे पास रहो और मेरी बकरियां चराओ तो मैं अपनी इस बेटी को तुमसे शादी करने को तैयार हूं और अगर तुम इस मुद्दत को दो साल बढ़ाकर दस साल कर दो तो और भी बेहतर है। यही इस लड़की का महर होगा। हज़रत मूसा ﷺ ने इस शर्त को मंज़ूर कर लिया और फ़रमाया कि यह मेरी ख़ुशी पर छोड़ दीजिए कि मैं इन दोनों मुद्दतों में से जिसको चाहूं पूरा कर दूं। आपकी तरफ़ से मुझ पर इस बारे में कोई जब्र न होगा। दोनों तरफ़ की इस आपसी रज़ामंदी के बाद बुज़ुर्ग मेज़बान ने मूसा से उस बेटी की शादी कर दी।

नोट–हज़रत मौलाना स्युहारवी रह० ने यह वाज़ेह किया है कि हज़रत मूसा ﷺ के ससुर जिनको क़ुरआन पाक ने 'शेख़ कबीर' कहा है, हज़रत शुऐब ﷺ न थे, क्योंकि उनका ज़माना कई सदियां पहले का है।

मुक़द्दस वादी

शादी के बाद हज़रत मूसा अपने ससुर के यहां मुक़र्रर की हुई मुद्दत पूरी करने, यानी बकरियां चराने के लिए ठहरे रहे। तफ़्सीर लिखने वाले मुस्तनद रिवायतों के पेशेनज़र फ़रमाते हैं कि मूसा ने पूरी मुद्दत यानी दस साल की मुद्दत पूरी की। क़ुरआन मजीद ने यह नहीं बताया कि मुद्दत पूरी होने के किस क़दर बाद तक मूसा अपने ससुर के पास ठहरे रहे। बहरहाल हज़रत मूसा ﷺ ने मदयन में एक मुद्दत तक क़ियाम किया और इस पूरी मुद्दत में अपने ससुर के मवेशियों की देख-भाल करते रहे।

इस बीच एक बार हज़रत मूसा ﷺ अपने घर वालों समेत बकरियां चराते-चराते मदयन से बहुत दूर निकल गए। जानवरों के चरने-चराने का काम करने वाले क़बीलों के लिए यह बात ताज्जुब की न थी, मगर रात ठंडी थी,

Copyright OfflineDeeniApp

इसलिए सर्दी आग की खोज के लिए मजबूर कर रही थी, सामने सीना पर्वत का सिलसिला नज़र आ रहा था, यह सीना का पूर्वी कोना था और मदयन से एक दिन के फ़ासले पर लाल सागर की दो शाखाओं के दर्मियान मिस्र को जाते हुए वाक़े था। हज़रत मूसा ने चक़माक़ इस्तेमाल किया, मगर कड़ी ठंडक थी, उसने काम न किया। सामने की घाटी (ऐमन की घाटी) में निगाह दौड़ाई तो एक शोला चमकता हुआ नज़र पड़ा। बीवी से कहा कि तुम यहीं ठहरो, मैं आग ले आऊं, तापने का भी इन्तिज़ाम हो जाएगा और अगर वहां कोई रहबर मिल गया तो भटकी हुई राह का भी पता लग जाएगा।

तर्जुमा–*'फिर मूसा ने अपनी बीवी से कहा, तुम यहां ठहरो, मैंने आग देखी है, शायद उसमें से कोई चिंगारी तुम्हारे लिए ला सकूं या वहां अलाव पर किसी रहबर को पा सकूं।'* (ताहा 20 : 10)

रसूल बनाए गए

अल्लाह के फ़ज़्ल का हाल मूसा से पूछिए
आग लेने को जाएं पयम्बरी मिल जाए।

हजरत मूसा ने देखा कि अजब आग है, पेड़ पर रोशनी नज़र आती है, मगर न पेड़ को जलाती है, न गुल ही होती है। यह सोचते हुए आगे बढ़े, ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते थे, आग और दूर होती जाती थी। यह देखकर मूसा को डर-सा पैदा हुआ और उन्होंने इरादा किया कि वापस हो जाएं। ज्यों ही वह पलटने लगे, आग क़रीब आ गई और क़रीब हुए तो सुना कि यह आवाज़ आ रही है–

तर्जुमा–*'ऐसा मूसा! मैं हूं अल्लाह, परवरदिगार दुनियाओं का।'*

(क़सस 28 : 30)

तर्जुमा–*'पस जब मूसा उस (आग) के क़रीब आए तो पुकारे गए, ऐ मूसा! मैं हूं तेरा परवरदिगार पस अपनी जूती उतार दे, तू तुवा की मुक़द्दस वादी में खड़ा है और देख! मैंने तुझको अपनी रिसालत के लिए चुन लिया है, पस जो कुछ वह्य की जाती है, उसे कान लगाकर सुन।* (ताहा 20 : 11-13)

हज़रत मूसा ﷺ ने जब अल्लाह की उस आवाज़ को सुना और उनको

Copyright OfflineDeeniApp

यह मालूम हुआ कि आज उनके नसीब में वह दौलत आ गई है जो इंसानी शराफ़त की इम्तियाज़ी शान और अल्लाह की मुहब्बत का आख़िरी निशान है, तो फूले न समाए और बेपनाह लगाव होने की शक्ल में मूर्ति की तरह हैरान खड़े रह गए। आख़िर फिर उसी तरफ़ से शुरूआत हुई और पूछा गया—

तर्जुमा—*'मूसा! तेरे दाहिने हाथ मैं यह क्या है?'* (ताहा 20 : 17)

पस फिर क्या था हक़ीक़ी महबूब का सवाल सच्चे इश्क़ जैसा होता है—

'यह नसीब अकबर! लूटने की जाए है।'

इश्क़ की इंतिहा में यह भी ख़्याल न रहा कि सवाल के पैमाने पर ही जवाब को तौला जाए और जो कुछ पूछा गया है, सिर्फ़ उसी क़दर जवाब दिया जाए। बोले—

तर्जुमा—*'यह मेरी लाठी है। इस पर (बकरियां चराते वक़्त) सहारा लिया करता हूं और अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ लेता हूं।'* (ताहा 20 : 18)

अल्लाह! दिल के वलवले और रूह की बेताबियां तो चाहती हैं कि कहे जाऊं और उस बेपनाह लुत्फ़ की लज़्ज़त को हासिल किए जाऊं, लेकिन अदब और हक़ीक़त देखने वाली आंख का हुक्म है कि ख़ामोश हो जाऊं, इसलिए क़िस्सा कोताह करता हूं, वरना दास्ताने इश्क़ बहुत लम्बी है।

इश्क़ कहता है, जुनूं का जोश रहना चाहिए
ज़ब्त की ताकीद है, ख़ामोश रहना चाहिए।
क़िस्सा-ए-मूसा सबक़ है होश वालों के लिए
किस तरह उश्शाक़ को ख़ामोश रहना चाहिए।

अल्लाह की निशानियां

अब अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया—

तर्जुमा—*'मूसा! अपनी इस लाठी को ज़मीन पर डाल दो।'* (ताहा 19-20)

और मूसा ने इस इर्शाद की तामील की—

तर्जुमा—*'मूसा ने लाठी को ज़मीन पर डाल दिया, पस यकायक वह अजगर बनकर दौड़ने लगा।'* (ताहा 20 : 21)

हज़रत मूसा ने जब हैरत में डाल देने वाला यह वाक़िया देखा, तो घबरा

Copyright OfflineDeeniApp

गए और बशर होने के तक़ाज़े का असर लेकर भागने लगे। पीठ फेरकर भागे ही थे कि आवाज़ आई–

तर्जुमा–*'(अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया) मूसा! इसको पकड़ लो और ख़ौफ़ न खाओ, हम इसको इसकी असल हालत पर लौटा देंगे।'*

(ताहा 20 : 21)

हज़रत मूसा की लकड़ी दो शाख़ा थी। अब वही दो शाख़ा अजगर का मुंह नज़र आ रहा था। सख़्त परेशान थे, मगर अलाह की क़ुर्बत ने तमानियत व सुकून की हालत पैदा कर दी और उन्होंने बे-ख़ौफ़ होकर उसके मुंह पर हाथ डाल दिया। इस अ़मल के साथ ही फ़ौरन वह दो शाखा फिर लाठी बन गया।

अब मूसा को दोबारा पुकारा गया और हुक्म हुआ कि अपने हाथ को गरेबान के अन्दर ले जाकर बग़ल से मस कीजिए और फिर देखिए, वह मरज़ से पाक बे-दाग़ चमकता हुआ निकलेगा–

तर्जुमा–*'और मिला दे अपने हाथ को अपनी बग़ल के साथ, निकल आएगा वह रोशन, बग़ैर किसी मरज़ के (यानी बर्स से पाक) यह दूसरी निशानी है।'*

(ताहा 20-22)

मूसा! यह हमारी ओर से तुम्हारी नुबूवत व रिसालत के दो बड़े निशान हैं। ये सच्चाई के तुम्हारे पैग़ाम और हक़ की दलीलों की जबरदस्त ताईद करेंगे, पस जिस तरह हमने तुमको नुबूवत व रिसालत से नवाज़ा, उसी तरह तुमको ये दो अ़ज़ीमुश्शान निशान (मोजज़े) भी अ़ता किए–

तर्जुमा–*ताकि हम तुझको अपनी बड़ी निशानियों का मुशाहदा करा दें।'*

(ताहा 20-23)

तर्जुमा–*'पस मेरे परवरदिगार की ओर से फ़िरऔ़न और उसकी जमाअ़त के मुक़ाबले में तेरे लिए ये दो 'बुरहान' हैं। बेशक वह फ़िरऔ़न और उसकी जमाअ़त नाफ़रमान क़ौम हैं।'*

(ताहा 28-32)

अब जाओ फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को हिदायत की राह दिखाओ। उन्होंने बहुत सकरशी और नाफ़रमानी अख़्तियार कर रखी है और अपने ग़ुरूर व तकब्बुर और बेइंतिहा ज़ुल्म के साथ उन्होंने बनी इसराईल को ग़ुलाम बना रखा है। सो उनको ग़ुलामी से नजात दिलाओ।'

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मूसा ने जनाबे बारी में अ़र्ज़ किया, 'परवदिगार! मेरे हाथ से एक मिस्री क़त्ल हो गया था, इसलिए यह ख़ौफ़ है कि कहीं वे मुझको क़त्ल न कर दें। मुझे यह भी ख़्याल है कि वे मुझे बहुत ज़ोर से झुठलाएंगे और मुझे झूठा कहेंगे, यह ऊंचा मंसब जब तूने दिया है तो मेरे सीने को फ़राख़ी और नूर से भर दे और इस अहम ख़िदमत को मेरे लिए आसान बना दे और ज़ुबान में पड़ी हुई गिरह को खोल दे, ताकि लोगों को मेरी बात समझने में आसानी हो। चूंकि मेरी बातों में रवानी नहीं है और मेरे मुक़ाबले में मेरा भाई हारून मुझसे ज़्यादा निखरी ज़ुबान में बातें करता है, इसलिए उसको भी अपनी इस नेमत (नुबूवत) से नवाज़ कर मेरे कामों में शरीक बना दे।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा को इत्मीनान दिलाया कि तुम हमारा पैग़ाम लेकर ज़रूर जाओ और उनको हक़ का रास्ता दिखाओ, वे तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। हमारी मदद तुम्हारे साथ है और जो निशान हमने तुमको दिए हैं, वे तुम्हारी कामियाबी की वजह होंगे और नतीजे के तौर पर तुम्हीं ग़ालिब रहोगे। हम तुम्हारी दरख़्वास्त मंज़ूर करते हैं और तुम्हारे भाई हारून को भी तुम्हारा शरीकेकार बनाते हैं। देखो, तुम दोनों फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम को जब हमारे सही रास्ते की ओर बुलाओ, तो उस पैग़ामे हक़ में नर्मी और मिठास के साथ पेश आना, क्या अजब है कि वे नसीहत क़ुबूल कर लें और ख़ुदा का ख़ौफ़ करते हुए ज़ुल्म से बाज़ आ जाएं।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की एक नबी की हैसियत से मिस्र को वापसी और हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को रिसालत का मंसब अ़ता किया जाना

मिस्र में दाख़िला

जब हज़रत मूसा नुबूवत के मंसब से सरफ़राज़ होकर कलामे रब्बानी से फ़ैज़याब बनकर और दावत और हक़ की तब्लीग़ में कामियाबी व कामरानी की ख़ुशख़बरी पाकर मुक़द्दस वादी से उतरे, तो अपनी बीवी के पास पहुंचे,

Copyright OfflineDeeniApp

जो वादी के सामने जंगल में उनके इंतिज़ार में रास्ता देख रही थीं। उनको साथ लिया और यहीं से हुक्मे इलाही की तामील के लिए मिस्र रवाना हो गए। मंज़िलें तै करते हुए जब मिस्र पहुंचे तो रात हो गई थी। ख़ामोशी के साथ मिस्र में दाख़िल होकर अपने मकान पहुंचे, अन्दर दाख़िल हुए और मां के सामने एक मुसाफ़िर की हैसियत में ज़ाहिर हुए। यह बनी इसराईल में मेहमानवाज़ घर था। हज़रत मूसा की ख़ूब ख़ातिर मदारत की गई। इसी बीच उनके बड़े भाई हज़रत हारून आ पहुंचे। यहां पहुंचने से पहले ही हारून को अल्लाह की तरफ़ से रिसालत का मंसब दिया जा चुका था, इसलिए उनको वह्य के ज़रिए हज़रत मूसा का सारा क़िस्सा बता दिया गया था। वह भाई से आकर लिपट गए और फिर उनके घर वालों को घर के अन्दर ले गए और मां को सारा हाल सुनाया। तब सब ख़ानदान के लोग आपस में गले मिले और बिछड़े हुए भाई एक दूसरे की बीती ज़िंदगी के हालात से वाक़िफ़ हुए और मां की दोनों आंखों ने ठंडक हासिल की।

फ़िरऔन के दरबार में हक़ की दावत

बहरहाल हज़रत मूसा ﷺ व हज़रत हारून ﷺ के दर्मियान जब मुलाक़ात और बात-चीत का सिलसिला ख़त्म हुआ, तो अब दोनों ने तै किया कि अल्लाह का हुक्म पहुंचाने के लिए फ़िरऔन के पास चलना और उसको अल्लाह का पैग़ाम सुनाना चाहिए। इस ग़रज़ से दोनों भाई यानी अल्लाह के सच्चे पैग़म्बर व नबी फ़िरऔन के दरबार में पहुंचे और बग़ैर कोई डर और ख़तरा महसूस किए दाख़िल हो गए। जब फ़िरऔन के तख़्त के क़रीब पहुंचे तो हज़रत मूसा व हारून ने अपने आने की वजह बयान की और बात-चीत शुरू हुई।

तर्जुमा– *'और मूसा ने कहा, ऐ फ़िरऔन! मैं जहानों के परवरदिगार का भेजा हुआ एलची हूं। मेरे लिए किसी तरह ज़ेबा नहीं कि अल्लाह पर हक़ और सच के अलावा कुछ और कहूं, बेशक मैं तुम्हारे लिए, तुम्हारे परवरदिगार के पास से दलील और निशान लाया हूं, पस तू मेरे साथ बनी इसराईल को भेज दे।'*

(अल-आराफ़ 7 : 104-405)

Copyright OfflineDeeniApp

फ़िरऔन ने जवाब में कहा–

तर्जुमा–क्या हमने तुझको अपने यहां लड़का-सा नहीं पाला और तू हमारे यहां एक मुद्दत तक नहीं रहा और तूने उस ज़माने में जो कुछ काम किया वह तुझे ख़ुद भी मालूम है और तू नाशुक्रगुज़ार है।' (26 : 19)

हज़रत मूसा ने कहा–

तर्जुमा–'मैंने वह काम (मिस्री का क़त्ल) ज़रूर किया और मैं चूक जाने वालों में से हूं, फिर यहां से तुम्हारे ख़ौफ़ से भाग गया, फिर मेरे रब ने मुझको सही फ़ैसले की समझ दी और मुझको अपने पैग़म्बरों में से बना लिया (ये उसकी हिक्मत की करिश्मासाज़ियां हैं) और मेरी (परवरिश) का यह एहसान जिसको तू मुझ पर जता रहा है, क्या ऐसा एहसान है कि तू बनी इसराईल को ग़ुलाम बनाए रखे?' (26 : 22)

फ़िरऔन बोला–

तर्जुमा–'बोला फ़िरऔन क्या मानी हैं परवरदिगारे आलम के?' (26-23)

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया, 'रब्बुल आलमीन' वह हस्ती है, जिसके रब होने के असर से तेरा और तेरे बाप का वजूद भी ख़ाली नहीं है, यानी जिस वक़्त तू वजूद में न आया था, तो तुझको पैदा किया और तेरी तर्बियत की और इसी तरह वह तुझसे पहले तेरे बाप-दादा को आ़लमे वजूद में लाया और उनको अपने रब होने से नवाज़ा।

फ़िरऔन ने जब इस ख़ामोश कर देने वाली और ज़बरदस्त दलील को सुना और कोई जवाब न बन पड़ा तो दरबारियों से कहने लगा, मुझे ऐसा मालूम होता है कि यह जो ख़ुद को तुम्हारा पैग़म्बर और रसूल कहता है, मजनूं और पागल है।' हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह देखा कि उससे अब कोई जवाब नहीं बन पड़ता तो सोचा यह बेहतर है कि ज़्यादा दिलनशीं अन्दाज़े बयान में अल्लाह के रब होने को वाज़ेह किया जाए, इसलिए फ़रमाया : 'यह जो पूरब और पच्छिम और उसके बीच सारी कायनात नज़र आती है उसका रब होना उसकी क़ुदरत में है, उसी को मैं 'रब्बुल आलमीन' कहता हूं। तुम अगर ज़रा भी अक़्ल से काम लो तो इस हक़ीक़त को आसानी से पा सकते हो।

एक बार फिर हज़रत मूसा ﷺ ने फ़िरऔन को यद दिलाया कि जो

Copyright OfflineDeeniApp

रास्ता तूने अख़्तियार किया है, यह सही नहीं है, बल्कि रब्बुल-आलमीन ही वह ज़ात है, जो परस्तिश के लायक़ है और उसके मुक़ाबले में किसी इंसान का रब होने का दावा करना खुला हुआ शिर्क है। ऐ फ़िरऔन! तू इससे बाज़ आ, क्योंकि उस हस्ती ने जिसको मैं रब्बुल-आलमीन कह रहा हूं, हम पर यह वह्य उतारी है कि जो आदमी हक़ के इस क़ौल की ख़िलाफ़वर्ज़ी करेगा और झुठलाएगा और उससे मुंह मोड़ेगा, वह अल्लाह के अ़ज़ाब का हक़दार ठहरेगा।

तर्जुमा– *'जो कोई सरताबी करे तो हम पर वह्य उतर चुकी कि उसके लिए अ़ज़ाब का पयाम है।'* (ताहा 20-48)

फ़िरऔन ने फिर वही सवाल दोहराया–

तर्जुमा– *'अगर ऐसा ही है तो बतलाओ तुम्हारा परवरदिगार कौन है? मूसा!'* (ताहा 20 : 49)

मूसा ने कहा–

'हमारा परवरदिगार वह है जिसने हर चीज़ को उसका वजूद बख़्शा और उस पर (ज़िंदगी व अ़मल की) राह खोल दी।' (ताहा 20 : 50)

तर्जुमा– *'फिर उनका क्या हाल होता है जो पिछले ज़मानों में गुज़र चुके हैं?'* (ताहा 20-51)

मूसा ने कहा–

तर्जुमा– *'इस बात का इल्म मेरे परवरदिगार के पास नविश्ते में है, मेरा परवरदिगार ऐसा नहीं कि खोया जाए या भूल में पड़ जाए, वह परवरदिगार जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन बिछौने की तरह बिछा दी, चलने-फिरने के लिए उसमें राहें निकाल दीं, आसमान से पानी बरसाया, उसकी सिंचाई से हर तरह की वनस्पति के जोड़े पैदा कर दिए, ख़ुद भी खाओ और मवेशी भी चराओ, इस बात में अक़्ल वालों के लिए कैसी खुली निशानियां हैं? उसने इस ज़मीन से तुम्हें पैदा किया, उसी में लौटना है और फिर उसी से दूसरी बार उठाए जाओगे।'* (ताहा 20 : 52-55)

हज़रत हारून का किरदार

तफ़्सीर के उलेमा लिखते हैं कि फ़िरऔन और मूसा के इन मुकालमों में

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत हारून दोनों के दर्मियान तर्जुमान होते और हज़रत मूसा ﷺ की दलीलों और सबूतों को बड़े ही असरदार अंदाज़ के साथ अदा फ़रमाते थे।

फ़िरऔ़न का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)

अलग-अलग मज्लिसों में बात-चीत का यह सिलसिला जारी रहा और फ़िरऔ़न ने बहस के सिलसिले को ख़त्म करने के लिए दूसरे तरीक़े अख़्तियार किए। आख़िरकार उसने अपनी क़ौम को मुख़ातब करते हुए कहा–

तर्जुमा–*'और फ़िरऔ़न ने कहा, ऐ जमाअ़त! मैं तुम्हारे लिए अपने सिवा कोई ख़ुदा नहीं जानता।'* (क़सस 28 : 38)

और फिर (अपने वज़ीर मुशीर को) हुक्म दिया–

तर्जुमा–*'ऐ हामान! मेरे लिए एक बुलन्द इमारत तैयार कर, ताकि मैं आसमानों की बुलन्दियों और उनके ज़रियों तक दस्तरस हासिल कर सकूं और इस तरह मूसा के ख़ुदा का हाल मालूम कर सकूं और मैं तो उसको झूठा समझता हूं।'* (40 : 36-37)

हामान

हामान के बारे में क़ुरआन ने साफ़ नहीं किया कि यह शख़्सियत का नाम है या ओहदे और मंसब का और न उसने इस पर रोशनी डाली कि हामान ने इमारत तैयार कराई या नहीं। तौरात भी इस बारे में ख़ामोश है।

फ़िरऔ़न के दरबार में मुज़ाहरा

ग़रज़ फ़िरऔ़न का ख़दशा बढ़ता ही रहा और नौबत यहां तक पहुंची कि–

तर्जुमा–*'फ़िरऔ़न ने कहा, अगर तूने मेरे सिवा किसी को माबूद बनाया तो मैं तुझे ज़रूर क़त्ल कर दूंगा।'* (26-29)

मूसा ने कहा,

तर्जुमा–*अगरचे मैं तेरे पास ज़ाहिर निशान लाया हूं, तब भी?* (शुअरा 30)

Copyright OfflineDeeniApp

फ़िरऔन ने कहा,

तर्जुमा–*'अगर तू सच्चा है, तो वह निशान दिखा।'*

हज़रत मूसा आगे बढ़े और भरे दरबार में फ़िरऔन के सामने अपनी लाठी को ज़मीन पर डाला। उसी वक़्त उसने अजगर की शक्ल अख़्तियार कर ली और यह हक़ीक़त थी, नज़र का धोखा न था और फिर हज़रत मूसा ने अपने हाथ को गरेबान के अन्दर ले जाकर बाहर निकाला तो वह एक रोशन सितारे की तरह चमकता हुआ नज़र आ रहा था। यह दूसरी निशानी और दूसरा मोजज़ा था।

फ़िरऔन के दरबारियों ने जब इस तरह एक इसराईली के हाथों अपनी क़ौम और अपने बादशाह की हार को देखा, तो तिलमिला उठे और कहने लगे, बेशक यह बहुत बड़ा माहिर जादूगर है और उसने यह सब ढोंग इसलिए रचाया है कि तुम पर ग़ालिब आकर तुमको तुम्हारी सरज़मीन (मिस्र) से बाहर निकाल दे, इसलिए अब हमको सोचना है कि उसके बारे में क्या होना चाहिए। आख़िर फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के आपसी मश्विरे से यह तै पाया कि फ़िलहाल तो इसको और हारून को मोहलत दो और इस मुद्दत में पूरे राज्य से माहिर जादूगरों को राजधानी में जमा करो और फिर मूसा का मुक़ाबला कराओ, यह हार खा जाएगा और इसके तमाम इरादे ख़ाक में मिल जाएंगे, तब फ़िरऔन ने हज़रत मूसा से कहा, मूसा! हम समझ गए कि तू इस हीले से हमको मिस्र की धरती से बेदख़ल करना चाहता है, इसलिए तेरा इलाज अव इसके सिवा कुछ नहीं कि बड़े-बड़े माहिर जादूगरों को जमा करके तुझको हार दिला दी जाए। अब तेरे और हमारे दर्मियान मुक़ाबले के दिन का समझौता होना चाहिए और फिर न हम उससे टलेंगे और न तुम वादाख़िलाफ़ी करना।' हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि इस काम के लिए सबसे बेहतर वक़्त 'यौमुज़्ज़ीना' (जश्न का दिन) है, उस दिन सूरज बुलन्द होने पर हम सबको मौजूद होना चाहिए।

नोट : मिस्रियों की ईद का दिन जो 'वफ़ाउन्नैल' के नाम से मशहूर है, क्योंकि उनके यहां तमाम ईदों में सबसे बड़ी ईद का दिन यही था।

ग़रज़ हज़रत मूसा और फ़िरऔन के दर्मियान 'यौमुज़्ज़ीना' तै पाया और

Copyright OfflineDeeniApp

फ़िरऔन ने उसी वक़्त अपने ज़िम्मेदारों और दरबारियों के नाम हुक्म जारी कर दिए कि पूरे राज्य में जो भी मशहूर और माहिर जादूगर हों, उनको जल्द-से-जल्द राजधानी रवाना कर दो।

जादूगरों की हार और फ़िरऔन का रद्देअ़मल (प्रतिक्रिया)

बहरहाल जश्न का दिन आ पहुंचा, जश्न के मैदान में तमाम शाहाना कर्र व फ़र्र के साथ फ़िरऔन तख़्तनशीं है और दरबारी भी दर्जे के एतबार से क़रीने से बैठे हैं और लाखों इंसान हक़ व बातिल के मारके का नज़ारा करने को जमा हैं। एक तरफ़ मिस्र के मशहूर जादूगरों का गिरोह अपने साज़ व सामान से लैस खड़ा है और दूसरी तरफ़ अल्लाह के रसूल, हक़ के पैग़म्बर, सच्चाई और रास्ती के पैकर हज़रत मूसा व हारून खड़े हैं। ऐसी हालत में—

तर्जुमा—*'जादूगर फ़िरऔन के पास आए और कहने लगे, क्या अगर हम मूसा पर ग़ालिब आ जाएं, तो हमारे लिए इनाम व इकराम है? फ़िरऔन ने कहा, हां, ज़रूर और यही नहीं बल्कि तुम शाही दरबार के मुक़र्रब बनोगे।'*

(7-113-114)

जादूगरों ने जब इस तरफ़ से इत्मीनान कर लिया तो हज़रत मूसा की तरफ़ मुतवज्जह हुए और हज़रत मूसा ने कहा—

तर्जुमा—*'अफ़सोस तुम पर देखो, अल्लाह पर झूठी तोहमत न लगाओ, ऐसा न हो कि वह कोई अज़ाब भेजकर तुम्हारी जड़ उखाड़ दे। जिस किसी ने झूठ बात बनाई, वह नामुराद हुआ।'* (20 : 61)

जादूगरों ने कहा—

तर्जुमा—*ऐ मूसा! या तो तुम अपनी लाठी फेंको या फिर हम फेंकें। मूसा ने कहा, तुम ही पहले फेंको। फिर जब जादूगरों ने जादू की बनाई हुई लाठियां और रस्सियां फेंकीं, तो लोगों की निगाहें जादू से मार दीं और अपने करतबों से उनमें दहशत फैला दी और बहुत बड़ा जादू बना लाए।*

(आराफ़ 7 : 115-116)

तर्जुमा—*'और उस वक़्त हमने मूसा पर वह्य की कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। ज्यों ही उसने लाठी फेंकी तो अचानक क्या हुआ कि जो कुछ झूठी*

Copyright OfflineDeeniApp

नुमाइश जादूगरों की थी, सब उसने निगल कर नाबूद कर दी, पस हक़ क़ायम हो गया और वे जो अ़मल कर रहे थे, बातिल होकर रह गया। पस इस मौक़े पर वे मग़्लूब हो गए।' (आराफ़ 7 : 117-118)

जादूगरों ने जब मूसा के असा का यह करिश्मा देखा तो—

तर्जुमा—*'सब जादूगर सज्दे में गिर पड़े, कहने लगे, हम तो जहानों के परवरदिगार पर ईमान ले आए, जो मूसा व हारून का परवरदिगार है।'* (आराफ़ 7 : 120-122)

इस हालत को देखकर फ़िरऔन ने कहा—

तर्जुमा—*तुम बग़ैर मेरे हुक्म के मूसा पर ईमान लाए, ज़रूर यह तुम्हारा सरदार है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है, अच्छा देखो, मैं क्या करता हूं। मैं तुम्हारे हाथ-पांव उलटे-सीधे कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली दूंगा।* (ताहा 71)

मगर सच्चा ईमान जब किसी को नसीब हो जाता है 'भले ही वह एक लम्हे ही का क्यों न हो' वह ऐसी बेपनाह रूहानी क़ूवत पैदा कर देता है कि कायनात की कोई ज़बरदस्त से ज़बरदस्त ताक़त भी उसको मऊब नहीं कर सकती।

इसलिए जादूगरों को फ़िरऔन की जाबिराना धमकियां मऊब न कर सकीं और उन्होंने कहा—

तर्जुमा—*'हम यह कभी नहीं कर सकते कि सच्चाई की जो रोशन दलीलें हमारे सामने आ गई हैं और जिस अल्लाह ने हमें पैदा किया है, उससे मुंह मोड़ कर तेरा हुक्म मान लें, तू जो फ़ैसला करना चाहता है, कर गुज़र, तू ज़्यादा से ज़्यादा जो कुछ कर सकता है वह यही है कि दुनिया की इस ज़िंदगी का फ़ैसला कर दे। हम तो अपने परवरदिगार पर ईमान ला चुके कि वह हमारी ख़ताएं बख़्श दे, ख़ास तौर से जादूगरी की ख़ता कि जिस पर तूने हमें मजबूर किया था। हमारे लिए अल्लाह ही बेहतर है और वही बाक़ी रहने वाला है।'* (ताहा 72-73)

ग़रज़ हक़ व बातिल की इस कशमकश में फ़िरऔन और उसके दरबारियों को ज़बरदस्त हार का मुंह देखना पड़ा और वे खुलेआम ज़लील व

Copyright OfflineDeeniApp

रुसवा हुए आर हज़रत मूसा ﷺ पर अल्लाह का वायदा पूरा हुआ और कामियाबी का सेहरा उन्हीं के सर रहा और जादूगरों के अलावा एक छोटी सी जमाअ़त इसराईली नवजवानों में से भी मुसलमान हो गई।

तर्जुमा–*'फिर मूसा पर कोई ईमान नहीं लाया मगर सिर्फ़ एक गिरोह जो उसकी क़ौम के नवजवानों का गिरोह था, वह भी फ़िरऔ़न और उसके सरदारों से डरता हुआ कि कहीं किसी मुसीबत में न डाल दे।'* (यूनुस 10 : 83)

हज़रत मूसा की इस महदूद कामियाबी से मुतास्सिर होकर–

तर्जुमा–*फ़िरऔ़न की क़ौम में से एक जमाअ़त ने फ़िरऔ़न से कहा, क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को यों ही छोड़ देगा कि वह ज़मीन (मिस्र) में फ़साद करते फिरें और तुझको और तेरे देवताओं को ठुकरा दें। फ़िरऔ़न ने कहा हम उनके लड़कों को क़त्ल कर देंगे और उनकी लड़कियों को (बांदिया बनाने के लिए) जिंदा रखेंगे।* (आराफ़ : 127)

यह फ़िरऔ़न का दूसरा एलान था जो बनी इसराईल के बच्चों के क़त्ल से मुताल्लिक़ किया गया–

बनी इसराईल की बेचैनी

हज़रत मूसा ﷺ को जब फ़िरऔ़न और उसके दरबारियों की बात-चीत का हाल मालूम हुआ, तो उन्होंने बनी इसराईल को जमा करके सब्र और अल्लाह पर भरोसा करने की तलक़ीन की, बनी इसराईल ने सुनकर जवाब दिया कि मूसा, हम पहले ही से मुसीबतों में गिरफ़्तार थे, अब तेरे आने पर कुछ उम्मीद बंधी थी, मगर तेरे आने के बाद भी वही मुसीबत बाक़ी रही, यह तो सख़्त आफ़त का सामना है। हज़रत मूसा ﷺ ने तसल्ली दी कि अल्लाह का वायदा सच्चा है, घबराओ नहीं, तुम्हीं कामयाब रहोगे और तुम्हारे दुश्मन को हलाकत का मुंह देखना पड़ेगा। ज़मीन का मालिक फ़िरऔ़न या उसकी क़ौम नहीं है, बल्कि रब्बुल आलमीन है जो मुख़्तारे मुतलक़ है, पस वह अपने बन्दों में से जिसको चाहे उसका मालिक बना दे और अंजामेकार यह इनाम मुत्तक़ियों ही का हिस्सा है।

इसके बाद हज़रत मूसा ﷺ ने मुसमलानों से कहा कि फ़िरऔ़न के

Copyright OfflineDeeniApp

ज़ुल्मों का सिलसिला अभी ख़त्म नहीं हुआ और वह बनी इसराईल और क़िब्ती मोमिनों को आज़ादी के साथ मिस्र से चले जाने पर राज़ी नहीं है और साथ ही अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ़ की, ऐ अल्लाह! फ़िरऔ़न और फ़िरऔनियों को जो तूने दौलत व सरवत अ़ता फ़रमाई है; उस पर शुक्र अदा करने के बजाए वे तेरे बन्दों पर जब्र और ज़ुल्म व सितम करने पर आमादा हो गए हैं और हक़ के तेरे रास्ते को न ये ख़ुद क़ुबूल करते हैं और न दूसरों को क़ुबूल करने देते हैं, बल्कि जब्र व तशद्दुद से काम लेकर उनके आड़े आते हैं, इसलिए अब तो उनके ज़ुल्मों का मज़ा उनको चखा और उनकी दौलत व सरवत को तबाह व हलाक कर दे, जिस पर उन्हें घमंड है और जिस तरह ये ईमान की सच्चाई को ठुकराते हैं, तू भी उनको ईमान की दौलत के बजाए अब ऐसा दर्दनाक अ़ज़ाब दे कि उनकी दास्तान दूसरों के लिए इबरत बन जाए।

फ़िरऔ़न की जवाबी कार्रवाई

फ़िरऔ़न ने अपने सरदारों से अगरचे इत्मीनान का इज़्हार कर दिया था, लेकिन हज़रत मूसा के रूहानी ग़लबे का ख़्याल उसको अन्दर ही अन्दर घुलाए डालता था और बनी इसराईल के लड़कों के क़त्ल के हुक्म से भी उनके क़ल्ब को सुकून नसीब न था, आख़िरकार उसने कहा—

तर्जुमा—*'मुझे मूसा को क़त्ल ही कर लेने दो और उसको चाहिए कि अपने रब को पुकारे।'* (मोमिन 3)

हज़रत मूसा को जब यह मालूम हुआ तो उन्होंने कहा—

तर्जुमा—*'मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह चाहता हूं, हर उस घमंडी से जो हिसाब के दिन पर ईमान नहीं लाता।'* (मोमिन 3)

मिस्री मर्दे मोमिन

फ़िरऔ़न और उसके सरदार जब उस बात-चीत में लगे हुए थे, तो उस मज्लिस में एक मिस्री 'मर्दे मोमिन' भी था, जिसने अभी तक अपने इस्लाम को छिपा रखा था। उसने जब यह सुना तो अपनी क़ौम के उन लोगों के मुक़ाबले में हज़रत मूसा ﷺ की ओर से बचाव करने की कोशिश शुरू की,

Copyright OfflineDeeniApp

और उनको समझाया कि तुम एक ऐसे आदमी को क़त्ल करने चले हो जो सच्ची बात कहता है कि मेरा परवरदिगार अल्लाह है और जो तुम्हारे सामने अपनी सच्चाई पर बेहतरीन दलील और निशानियां लाया है। मान लीजिए अगर वह झूठा है तो उसके झूठ से तुमको कुछ नुक़्सान नहीं पहुंच रहा है और वह सच्चा है तो फिर उसकी उन धमकियों से डरो जो वह तुमको अल्लाह की ओर से सुनाता है।

फ़िरऔन ने मर्दे मोमिन की बात काटते हुए कहा कि मैं तुमको वही मश्विरा दे रहा हूं, जिसको अपने ख़्याल में दुरुस्त समझता हूं और तुम्हारी भलाई की बात कह रहा हूं।

मर्दे मोमिन ने आख़िरी नसीहत के तौर पर कहा : 'ऐ मेरी क़ौम! मुझे यह डर है कि हमारा हाल कहीं उन पिछली क़ौमों का-सा न हो जाए जो नूह-आ़द और समूद की कौमों के नाम से मशहूर हैं या उनके बाद क़ौमें आईं। अल्लाह अपने बन्दों पर कभी जुल्म नहीं करता, बल्कि उन क़ौमों की हलाकत ख़ुद अपने इसी क़िस्म के आ़माल की बदौलत पेश आई थी जो आज तुम मूसा के ख़िलाफ़ सोच रहे हो तो तुम आज दुनिया में 'बड़े' होने की सोच में पड़े हो और मैं तुम्हारे लिए उस दिन से डर रहा हूं जब क़ियामत का दिन होगा और सब एक दूसरे को पुकारेंगे, मगर उस वक़्त तुम्हें कोई अल्लाह के अ़ज़ाब से बचाने वाला न होगा।

ऐ क़ौम के सरदारो! तुम्हारा हाल तो यह है कि इस सरज़मीन में जब हज़रत यूसुफ़ ﷺ ने अल्लाह का पैग़ाम सुनाया था तंब भी तुम यानी तुम्हारे बाप-दादा इसी शक और तरद्दुद में पड़े रहे और इन पर ईमान न लाए और जब इनकी वफ़ात हो गई, तो कहने लगे कि अब अल्लाह अपना कोई रसूल न भेजेगा। अब यही मामला तुम मूसा के साथ कर रहे हो। ख़ुदा के लिए समझो और सीधी राह अपनाओ।

जब फ़िरऔन और उसके सरदारों ने उस मर्दे मोमिन की ये बातें सुनीं तो उनका रुख़ मूसा से हटकर उसकी तरफ़ हो गया और फ़िरऔनियों ने चाहा कि पहले उसकी ही ख़बर लें और उसको क़त्ल कर दें, मगर अल्लाह तआ़ला ने इस नापाक इरादे में उनको कामयाब न होने दिया।

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा– *'सो अल्लाह तआ़ला ने उनको उनकी तदबीरों के शर से बचा लिया।'* (अल-मोमिन 45)

फ़िरऔ़न का एलान

ग़रज़ जब फ़िरऔ़न और उसके सरदारों को मूसा को हराने में नाकामी हुई तो फ़िरऔ़न ने अपनी क़ौम में एलान किया।

तर्जुमा–*ऐ क़ौम! क्या मैं मिस्र के ताज व तख़्त का मालिक नहीं हूं और मेरी हुकूमत के क़दमों के नीचे ये नहरें बह रही हैं? क्या तुम (मेरे इस जाह व जलाल को) नहीं देखते? (अब बताओ) क्या मैं बुलन्द व बाला हूं या वह जिसको न इ़ज़्ज़त नसीब और जो बात भी साफ़ न कर सकता हो? (अगर यह अपने ख़ुदा के यहां इ़ज़्ज़त वाला है) तो क्यों उस पर (आसमान से) सोने के कंगन नहीं गिरते या फ़रिश्ते ही उसके सामने परे बांध कर खड़े नहीं होते?'* (अज़-जुख़रुफ़ 51-53)

मिस्रियों पर ख़ुदा का क़हर

ग़रज़ हज़रत मूसा ﷺ की रुश्द व हिदायत का फ़िरऔ़न और उसके सरदारों पर मुतलक़ असर नहीं हुआ और कुछ को छोड़कर आम मिस्रियों ने भी उन्हीं की पैरवी की और सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि फ़िरऔ़न के हुक्म से बनी इसराईल की नरीना औलाद यानी लड़के क़त्ल किए जाने लगे। मूसा की तौहीन व तज़्लील होने लगी और फ़िरऔ़न ने अपने रब और माबूद होने की ज़ोर-शोर से तब्लीग़ शुरू कर दी। तब हज़रत मूसा पर वह्य आई कि फ़िरऔ़न को मुत्तला कर दो कि अगर तुम्हारा यही तौर-तरीक़ा रहा, तो बहुत जल्द तुम पर अल्लाह का अ़ज़ाब नाज़िल होने वाला है।

चुनांचे उन्होंने जब इस पर भी ध्यान न दिया तो अब एक के बाद एक अल्लाह के अ़ज़ाब आने लगे। यह देखकर फ़िरऔ़न और उसकी क़ौम ने यह तरीक़ा अख़्तियार किया कि जब अल्लाह का अ़ज़ाब किसी एक शक्ल में ज़ाहिर होता, तो फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम हज़रत मूसा से वायदा करने

Copyright OfflineDeeniApp

लगती, अच्छा हम ईमान ले आएंगे, तू अपने ख़ुदा से यह दुआ कर कि यह अ़ज़ाब जाता रहे और जब वह अ़ज़ाब जाता रहता, तो फिर सरकशी और नाफ़रमानी पर उतर आते, फिर अ़ज़ाब जब दूसरी शक्ल में आता तो कहते कि अच्छा हम बनी इसराईल को आज़ाद करके तेरे साथ रवाना कर देंगे। दुआ कर कि यह अ़ज़ाब ख़त्म हो जाए और जब हज़रत मूसा की दुआ से उनको फिर मोहलत मिल जाती और अ़ज़ाब ख़त्म हो जाता, तो फिर उसी तरह मुख़ालफ़त पर उतर आते और इस तरह अल्लाह की ओर से अलग-अलग क़िस्म के निशान ज़ाहिर हुए और फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम को बार-बार मोहलत दी जाती रही। क़ुरआन उन सात अ़ज़ाब की निशानियों का इस तरह ज़िक्र करता है—

तर्जुमा—*'और हमने पकड़ लिया फ़िरऔन वालों को अकालों में और मेवों के नुक़्सान में ताकि वे नसीहत मानें। फिर हमने भेजा उन पर तूफ़ान और टिडडी चीचड़ी और मेंढक और ख़ून, बहुत-सी निशानियां अलग-अलग दीं।*

(अल-आराफ़ : 130-133)

इन आयतों में बयान की गई निशानियों में जूं और मेंढक के बारे में तफ़्सीर लिखने वालों ने लिखा है कि इन चीज़ों की यह हालत थी कि बनी इसराईल के खाने-पीने, पहनने और बरतने की कोई चीज़ ऐसी न थी, जिनमें ये वजूद नज़र न आते हों और ख़ून के बारे में लिखा है कि नील नदी का पानी लहू के रंग का हो गया था और उसके मज़े ने उसका पीना मुश्किल कर दिया था और पानी में मछलियां तक मर गई थीं।

नोट : -'क़ुम्मल' डिक्शनरी के एतबार से बहुत मानी रखने वाला लफ़्ज़ है। इन तमाम मानी की जांच-पड़ताल इस तरह हो सकती है कि अल्लाह ने फ़िरऔनियों पर यह अ़ज़ाब नाज़िल फ़रमाया कि इंसानों पर जुएं मुसल्लत कर दीं, खाने-पीने की चीज़ों में छोटी मक्खियों को फैला दिया। इन जानवरों में हलाक करने वाला कीड़ा पैदा कर दिया, अनाज और ग़ल्ले में सुरसुरी पैदा कर दी। इन सब हलाक करने वाले कीड़ों को क़ुरआन ने एक लफ़्ज़ क़ुम्मल से ताबीर किया है।

Copyright OfflineDeeniApp

बनी इसराईल का मिस्र से लौटना

बनी इसराईल की रवानगी

जब मामला इस हद तक पहुंच गया कि अ़ज़ाब की बातें भी फ़िरऔ़न और फ़िरऔ़न की क़ौम पर असर न डाल सकीं, तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को हुक्म दिया कि अब वक़्त आ गया है कि तुम बनी इसराईल को मिस्र से निकाल कर बाप-दादा की सरज़मीन की तरफ़ ले जाओ। इसलिए हज़रत मूसा और हारून बनी इसराईल को लेकर रातों रात लाल सागर के रास्ते पर हो लिए और रवाना होने से पहले मिस्री औरतों के ज़ेवरात और क़ीमती चीज़ें जो एक त्यौहार में उधार लिए थे, वह भी वापस न कर सके कि कहीं मिस्रियों पर असल हाल न खुल जाए।

फ़िरऔ़न का डूबना

हज़रत मूसा ने उनको तसल्ली दी और फ़रमाया : डरो नहीं, अल्लाह का वायदा सच्चा है, वह तुमको नजात देगा और तुम ही कामयाब होगे और फिर अल्लाह की बारगाह में हाथ फैलाकर दुआ़ करने लगे। अल्लाह की वह्य ने मूसा को हुक्म दिया कि अपनी लाठी को पानी पर मारो ताकि पानी फटकर बीच में रास्ता निकल आए। चुनांचे मूसा ने ऐसा ही किया, जब उन्होंने समुद्र पर अपना डंडा मारा तो पानी फटकर दोनों तरफ़ दो पहाड़ों की तरह खड़ा हो गया और बीच में रास्ता निकल आया और हज़रत मूसा के हुक्म से तमाम बनी इसराईल उसमें उतर गए और सूखी ज़मीन की तरह उससे पार हो गए। फ़िरऔ़न ने यह देखा तो अपनी क़ौम से मुख़ातब होकर कहने लगा, यह मेरी करिश्मासाज़ी है कि बनी इसराईल को तुम जा पकड़ो, इसलिए बढ़े चलो, चुनांचे फ़िरऔ़न और उसकी पूरी फ़ौज बनी इसराईल के पीछे उसी रास्ते पर चल पड़ी लेकिन अल्लाह तआ़ला की करिश्मासाज़ी देखिए कि जब बनी इसराईल का हर आदमी दूसरे किनारे पर सलामती के साथ पहुंच गया, तो पानी अल्लाह के हुक्म से फिर अपनी असली हालत पर आ गया और फ़िरऔ़न

Copyright OfflineDeeniApp

और उसकी तमाम फ़ौज जो अभी बीच ही में थी, डूब गयी।

जब फ़िरऔन डूबने लगा और अ़ज़ाब के फ़रिश्ते सामने नज़र आने लगे, तो पुकार कर कहने लगा, 'मैं उसी एक ख़ुदा पर जिसका कोई शरीक नहीं, ईमान लाता हूं, जिस पर बनी इसराईल ईमान लाए हैं और मैं फ़रमांबरदारों में से हूं।' मगर यह ईमान चूंकि हक़ीक़ी ईमान न था, बल्कि पिछले फ़रे-बकारियों की तरह नजात हासिल करने के लिए यह भी एक डांवाडोल बात थी, इसलिए अल्लाह की तरफ़ से यह जवाब मिला—

तर्जुमा—*'अब यह कह रहा है, हालांकि इससे पहले जब इक़रार का वक़्त था, उसमें इंकार और ख़िलाफ़ ही करता रहा और हक़ीक़त में तू फ़साद पैदा करने वालों में से है।'* (यूनुस 91)

यानी अल्लाह को ख़ूब मालूम है कि तू 'मुस्लिमीन' में से नहीं, बल्कि फ़साद पैदा करने वालों में से है।

हक़ीक़त में फ़िरऔन की यह पुकार ऐसी पुकार थी जो ईमान लाने और यक़ीन हासिल करने के लिए नहीं, बल्कि अल्लाह के अ़ज़ाब को देख लेने के बाद इज़्तिरारी और बे-अख़्तियारी की हालत में निकलती है और अ़ज़ाब के देखने के वक़्त 'ईमान व यक़ीन' की यह सदा हज़रत मूसा ﷺ की इस दुआ़ का नतीजा थी, जिसका ज़िक्र पिछले पन्नों में पढ़ चुके हैं।

तर्जुमा—*'पस ये उस वक़्त तक ईमान न लाएं जब तक अपनी हलाकत और अ़ज़ाब को आंखों से देख न लें। अल्लाह ने कहा, बेशक तुम दोनों की दुआ़ क़ुबूल कर ली गई।'* (यूनुस 88-89)

इस मौक़े पर फ़िरऔन की पुकार पर अल्लाह की ओर से यह भी जवाब दिया गया—

तर्जुमा—*आज के दिन हम तेरे जिस्म को उन लोगों के लिए जो तेरे पीछे आने वाले हैं, नजात देंगे कि वह (इबरत का) निशान है।* (यूनुस 92)

फ़िरऔन की लाश

मिस्रवाद (Egyptiology) के मिस्री चिड़ियाघर में एक लाश आज तक महफ़ूज़ है। ऐसा मालूम होता है कि समुद्र में डूबे रहने की वजह से उसकी

Copyright OfflineDeeniApp

नाक को मछली ने खा लिया है। कहा जाता है कि यह लाश मूसा के दौर के फ़िरऔन (Mernepatah) की है। (अल्लाह बेहतर जाने) बहरहाल यह हर आम व ख़ास की तामाशागाह है।

समुद्र का फटना

क़ुरआन मजीद नें बनी इसराईल के रवाना होने, फ़िरऔन के डूबने और बनी इसराईल की नजात के वाक़िए को बहुत थोड़े में बयान किया है और उसने उसके सिर्फ़ ज़रूरी हिस्सों का ही ज़िक्र किया है। अलबत्ता इससे मुताल्लिक़, इबरत, नसीहत, बसीरत, मौअ्ज़त के मामले थोड़ा तफ़्सील के साथ ज़िक्र किए गए हैं।

चुनांचे अल्लाह फ़रमाता है–

तर्जुमा–*'और (फिर देखो) हमने मूसा पर वह्य भेजी थी कि (अब) मेरे बन्दों को रातों-रात (मिस्र से) निकाल ले जा, फिर समुद्र में उनके गुज़रने के लिए ख़ुश्की का रास्ता निकाल ले, तुझे न तो पीछा करने वालों का डर होगा और न किसी तरह का ख़तरा, फिर (जब मूसा अपनी क़ौम को लेकर निकल गया तो) फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उसका पीछा किया, पस पानी का रेला (जैसा कुछ उन पर छाने वाला था) छा गया (यानी जो कुछ उन पर गुज़रनी थी, गुज़र गई) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम पर (नजात का) रास्ता गुम कर दिया, तो उन्हें सीधा रास्ता न दिखाया।'* (ताहा 77-79)

तर्जुमा–*'और इस तरह (ऐ पैग़म्बर!) तेरे परवरदिगार का पसन्दीदा फ़रमान बनी इसराईल के हक़ में पूरा हुआ कि (हिम्मत व सबात के साथ जमे रहे थे) और फ़िरऔन और उसका गिरोह (अपनी ताक़त व शौकत के लिए) जो कुछ बनाता रहा था और जो कुछ (इमारतों की) बुलन्दियां उठाई थीं, वे सब दरहम बरहम कर दीं।* (अल-आराफ़ 137)

तर्जुमा–*'और बुराई करने लगे वह और उसकी फ़ौज मुल्क में नाहक़ और समझे कि वे हमारी ओर फिरकर न आएंगे, फिर पकड़ा हमने और उसके लश्करों को, फिर फेंक दिया हमने उनको दरिया में, सो देख ले कैसा अंजाम हुआ गुनाहगारों का।'* (अल-क़सस 40)

Copyright OfflineDeeniApp

तर्जुमा– *'बहुत से छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेतियां और घर उम्दा और आराम का सामान जिनमें बातें बनाया करते थे, यों ही हुआ और वह सब हाथ लगा दिया हमने एक दूसरी क़ौम के, फिर न रोया उन पर आसमान और ज़मीन और न मिली उनको ढील।'* (अद-दुख़ान 27-28)

बड़ा मोजज़ा

क़ुरआन साफ़ कहता है कि लाल सागर में फ़िरऔन के डूबने और मूसा के नजात मिलने का यह वाक़िया मूसा की ताईद में एक बड़ा ही शानदार मोजज़ा था, जिसने माद्दी क़हरमानियत और सामाने इस्तब्दादियत को एक लम्हे में हरा कर मज़्लूम क़ौम को ज़ालिम क़ौम के पंजे से नजात दिलाई।

'वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर०'

तर्जुमा– *'और हमने मूसा और उसके तमाम साथियों को नजात दी, फिर दूसरों को (यानी उनके दुश्मनों को) डुबो दिया। बेशक इस वाक़िए में (अल्लाह का ज़बरदस्त) निशान (मोजज़ा) है और उनके अक्सर ईमान नहीं लाते और इक़रार नहीं करते और बेशक तेरा रब ही (सब पर) ग़ालिब, रहमत वाला है।'* (अश-शुअरा 65 : 67)

फ़िरऔन, फ़िरऔन की क़ौम और क़ियामत का अ़ज़ाब

फ़िरऔन और हज़रत मूसा ﷺ का यह वाक़िया हक़ व बातिल के मारके में एक शानदार मारका है—एक ओर ग़ुरूर व घमंड, जब्र व ज़ुल्म, तो दूसरी ओर मज़्लूमियत, ख़ुदापरस्ती और सब्र व इस्तिक़ामत की फ़त्ह व कामरानी का अजीब व ग़रीब मुरक़्क़ा। इसलिए अल्लाह तआ़ला ने फ़िरऔन और फ़िरऔन की क़ौम को दुनिया की हलाकत के बाद इबरत व बसीरत के लिए इस तरफ़ भी तवज्जोह दिलाई है कि इस क़िस्म के लोगों के लिए आख़िरत में किस क़दर सख़्त अ़ज़ाब और फिटकार के कैसे इबतरनाक सामान मुहैया हैं—

तर्जुमा– *'और उलट पड़ा फ़िरऔन वालों पर बुरी तरह का अ़ज़ाब वह आग है कि दिखला देते हैं उनको सुबह व शाम और जिस दिन क़ायम होगी*

Copyright OfflineDeeniApp

क़ियामत, हुक्म होगा दाख़िल करो फ़िरऔन वालों को सख़्त से सख़्त अ़ज़ाब में।'

(अल-मोमिन : 45 : 46)

हज़रत मूसा ﷺ और बनी इसराईल समुद्र पार करने के बाद

बनी इसराईल की पहली मांग—

हज़रत मूसा और बनी इसराईल ने सलामती के साथ लाल सागर पार करने के बाद शोर बयाबान से होते हुए सीना की राह ली। सीना के मूर्ति-घरों में बुत के पुजारी, बुतों की पूजा में लगे हुए थे। बनी इसराईल ने यह मंज़र देखा तो कहने लगे, मूसा! हमको भी ऐसे माबूद बना दे, ताकि हम भी इसी की तरह इनकी पूजा करें। हज़रत मूसा ने क़ौम की ज़ुबानी यह शिर्क भरी मांग सुनी, तो बहुत ज़्यादा नाराज़ हुए और बनी इसराईल को डांटा और इतनी शर्म दिलाई और मलामत की कि बदबख़्तो! एक अल्लाह की पूजा छोड़कर बुतों की पूजा की तरफ़ झुकाव है और अल्लाह की उन तमाम नेमतों को भूल बैठे जिन्हें अपनी आंखों से देख चुके हो।

बनी इसराईल पर अल्लाह के इनाम और खुली निशानियां

चश्मों का जारी होना

बनी इसराईल अब सीना की घाटी में थे, यहां बहुत तेज़ गर्मी पड़ती है। दूर-दूर तक हरियाली और पानी का पता नहीं। बनी इसराईल हज़रत मूसा से फ़रियाद करने लगे, तब हज़रत मूसा ने अल्लाह के दरबार में इल्तिजा की और अल्लाह की वह्य ने उनको हुक्म दिया कि अपना डंडा ज़मीन पर मारो। हज़रत मूसा ने इर्शाद की तामील की तो फ़ौरन बारह सोते उबल पड़े और बनी इसराईल के बारह क़बीलों के लिए अलग-अलग चश्मे जारी हो गए।

मन्न व सलवा

पानी के इस तरह जुटाए जाने के बाद बनी इसराईल ने भूख की

Copyright OfflineDeeniApp

शिकायत की। हज़रत मूसा ने फिर रब्बुल आलमीन से दुआ की। हज़रत मूसा की दुआ क़ुबूल हुई और ऐसा हुआ कि जब रात बीत गई और सुबह हुई तो बनी इसराईल ने देखा कि ज़मीन और पेड़ों पर जगह-जगह सफ़ेद ओले के दाने की तरह ओस की शक्ल में आसमान से कोई चीज़ बरस कर गिरी हुई है। खाया, तो बहुत मीठे हलवे की तरह थी। यह 'मन्न' था और दिन में तेज़ हवा चली और थोड़ी देर में बटेरों के झुंड के झुंड ज़मीन पर उतरे और फैल गए। बनी इसराईल उनको भूनकर खाने लगे, यह 'सलवा' था।

बादलों का साया

अब बनी इसराईल ने गर्मी की तेज़ी और साएदार पेड़ों और मकानों की राहत मयस्सर न होने की शिकायत की, तो फिर हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की, जो क़ुबूल हुई और आसमान पर बादलों के परे के परे बनी इसराईल पर साया फ़गन हो गए और बनी इसराईल जहां भी जाते, बादल साया फ़गन रहते।

बनी इसराईल की नाशुक्री

अल्लाह की इन मेहरबानियों और बख़्शिशों का बनी इसराईल शुक्र तो क्या अदा करते, एक दिन जमा होकर कहने लगे, 'मूसा! हम रोज़-रोज़ एक ही खाना खाते रहने से घबरा गए हैं, हमको को इस 'मन्न व सलवा' की ज़रूरत नहीं है। अपने अल्लाह से दुआ कर कि वह हमारे लिए ज़मीन से बाक़ला, खीरा, ककड़ी, मसूर, लहसुन, प्याज़ जैसी चीज़ें उगाए ताकि हम ख़ूब खाएं। जवाब में हज़रत मूसा عليه السلام ने कहा–

तर्जुमा–*'क्या तुम बेहतर और उम्दा चीज़ के बदले में घटिया चीज़ की ख़्वाहिश करते हो, किसी शहर में जा क़ियाम करो, बेशक वहां यह सब कुछ मिल जाएगा, जिसके तुम तलबगार हो।'* **(अल-बक़रः 61)**

तूर पर एतिकाफ़

हज़रत मूसा से अल्लाह का वायदा था कि जब बनी इसराईल ग़ुलामी

Copyright OfflineDeeniApp

से आज़ाद हो जाएंगे, तुमको 'शरीअ़त' दी जाएगी। अब हज़रत मूसा अल्लाह की वह्य के इशारे तूर पर पहुंचे और वहां अल्लाह की इबादत के लिए एतिकाफ़ किया।

तर्जुमा–*'और हमने मूसा से तीस रातों का वायदा किया था, फिर दस रातें बढ़ाकर उसे पूरा (चिल्ला) कर दिया। इस तरह परवरदिगार के हुज़ूर आने की मुक़र्रर की हुई मीयाद यानी चालीस रातों की मीयाद पूरी हो गई।'*

(अल-आराफ़ 142)

जब हज़रत मूसा तूर पर चिल्लाकशी के लिए तशरीफ़ ले गए तो–

तर्जुमा–*और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, तू मेरे पीछे मेरी क़ौम में नायब रहना और उनकी इस्लाह का ख़्याल करना और फ़साद पैदा करने वाले की राह पर न चलना।* (अल-आराफ़ 142)

तजल्ली-ए-ज़ात

जब चिल्ला पूरा हो गया तो अल्लाह ने हज़रत मूसा को हम कलामी का शरफ़ बख़्शा, तो वह पुकार उठे–

तर्जुमा–*'परवरदिगार! मुझे अपना जमाल दिखा कि तेरी तरफ़ नज़र कर सकूं। हुक्म हुआ, तू मुझे नहीं देख सकेगा, मगर हां, इस पहाड़ की तरफ़ देख! अगर यह (तजल्ली-ए-हक़ की ताब ले आया और) अपनी जगह टिका रहा, तो मुझे देख सकेगा, फिर जब उसके परवरदिगार ने तजल्ली की तो उस तजल्ली ने पहाड़ रेज़ा-रेज़ा कर दिया और मूसा ग़श खाकर गिर पड़ा। जब मूसा होश में आया, तो बोला, 'अल्लाह! तेरे लिए हर तरह की तक़्दीस हो। मैं तेरे हुज़ूर तौबा करता हूं और सबसे पहले यक़ीन करने वालों में हूं।'*

(अल-आराफ़ 143)

तौरात का उतरना

इस राज़ व नियाज़ के बाद मूसा को तौरात अ़ता की गई।

तर्जुमा–*'और हमने उसके लिए तौरात की तख़्तियों पर हर क़िस्म की नसीहत और (अह्काम में से) हर चीज़ की तफ़्सील लिख दी है, पस इसको क़ूवत के साथ पकड़ और अपनी क़ौम को हुक्म कर कि वे उनको अच्छी तरह*

Copyright OfflineDeeniApp

अख़्तियार करें।' (अल-आराफ़ 145)

बहरहाल हज़रत मूसा को (तख़्तियों की शक्ल में) तौरात अ़ता हुई और साथ-साथ यह भी बता दिया गया कि हमारा 'क़ानून' यह है कि जब कोई क़ौम हिदायत पहुंचने और उसकी सच्चाई पर दलील और रोशन हुज्जत आ जाने के बावजूद भी समझ से काम नहीं लेती और गुमराही और बाप-दादा की बुरी रस्म पर ही क़ायम रहती है और उस पर इसरार करती है, तो फिर हम भी उसको उस गुमराही में छोड़ देते हैं और हमारे हक़ के पैग़ाम में उनके लिए कोई हिस्सा बाक़ी नहीं रहता, इसलिए कि उन्होंने हक़ क़ुबूल करने की इस्तेदाद अपनी सरकशी के बदौलत बर्बाद कर दी।

बनी इसराईल की गौशालापरस्ती

इसी बीच एक और अ़जीब व ग़रीब वाक़िया पेश आया, वह यह कि कोहे तूर पर एतिकाफ़ में फैलाव से फ़ायदा उठाकर एक आदमी सामरी [सामरी के बारे में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने वज़ाहत की है कि वह बनी इसराईल में से न था, बल्कि वह सुमैरी क़ौम का आदमी था और सामरी उसका नाम नहीं है, बल्कि उसकी क़ौमियत की तरफ़ इशारा है (Sumarian) ने जो ज़ाहिर में मुसलमान था, बनी इसराईल से कहा कि अगर तुम वह तमाम ज़ेवर मेरे पास ले आओ जो तुमने मिस्रियों से उधार लिए थे और फिर वापस न कर सके, तो मैं तुम्हारे फ़ायदे की एक बात कर दूं। बनी इसराईल ने तमाम ज़ेवर सामरी के हवाले कर दिए। उसने उनको गलाकर बछड़े का जिस्म तैयार किया और फिर अपने पास से एक मुट्ठी मिट्टी उसके लिए डाल दी। इस तर्कीब से उसमें ज़िंदगी के निशान पैदा हो गए और उससे बछड़े की आवाज़ 'भाएं-भाएं' आने लगी। अब सामरी ने बनी इसराईल से कहा कि मूसा से ग़लती हो गई, तुम्हारा माबूद तो यह है। सामरी की इस तर्ग़ीब से बनी इसराईल ने उसकी पूजा शुरू कर दी।

हज़रत हारून ने यह देखा तो बनी इसराईल को समझाया कि ऐसा न करो। यह तो गुमराही का रास्ता है, मगर उन्होंने हारून की बात मानने से इंकार कर दिया और कहने लगे कि जब तक मूसा न आ जाएं, हम इससे बाज़

Copyright OfflineDeeniApp

आने वाले नहीं।

यहां जब यह नौबत पहुंची तो अल्लाह तआ़ला की मस्लहत का तक़ाज़ा हुआ कि हज़रत मूसा ﷺ को इस वाक़िए की इत्तिला दे दे, इसलिए हज़रत मूसा से पूछा, मूसा! तुमने क़ौम को छोड़कर यहां आने में इतनी जल्दी क्यों की? हज़रत मूसा ﷺ ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! इसलिए कि तेरे पास जल्द हाज़िर होकर क़ौम के लिए हिदायत हासिल करूं?' अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त उनको बताया कि जिसकी हिदायत के लिए तुम इस क़दर बेचैन हो, वह इस गुमराही में मुब्तला है। हज़रत मूसा ने यह सुना तो उनको सख़्त रंज हुआ। और ग़ुस्से और नदामत के साथ क़ौम की तरफ़ वापस हुए और क़ौम से मुख़ातब होकर फ़रमाया : तुमने यह क्या किया? मुझसे ऐसी कौन-सी देर हो गई थी जो तुमने यह आफ़त खड़ी कर दी।' यह फ़रमाते जाते थे और ग़ैज़ व ग़ज़ब से कांप रहे थे, यहां तक कि हाथ की लौहें (तख़्तियां) भी गिर गईं।

बनी इसराईल ने कहा: हमारा तो कोई क़ुसूर नहीं। मिस्रियों के ज़ेवरों का जो बोझ हम साथ लिए फिर रहे थे, वह सामरी ने हमसे मांग कर यह स्वांग बना लिया और हमको गुमराह कर दिया।

'शिर्क' नुबूवत के मंसब के लिए एक बर्दाश्त न करने के क़ाबिल चीज़ है, इसलिए और फिर इसलिए भी कि हज़रत मूसा बहुत गर्म मिज़ाज थे। उन्होंने अपने भाई हारून की गरदन पकड़ ली और दाढ़ी की तरफ़ हाथ बढ़ाया तो हज़रत हारून ने फ़रमाया, 'ब्रादर! मेरी मुतलक़ ख़ता नहीं है। मैंने उन्हें हर पहलू से समझाया, मगर उन्होंने किसी तरह नहीं माना और कहने लगे कि जब तक मूसा न आ जाएं, हम तेरी बात सुनने वाले नहीं, बल्कि उन्होंने मुझको कमज़ोर पाकर मेरे क़त्ल का इरादा कर लिया था। जब मैंने यह हालत देखी तो ख़्याल किया कि अगर इनसे लड़ाई की जाए और पूरे ईमान वालों और उनके दर्मियान लड़ाई छिड़ जाए तो कहीं मुझ पर यह इलज़ाम न लगाया जाए कि मेरे पीछे क़ौम में फूट डाल दी, इसलिए मैं ख़ामोशी के साथ तेरे इंतिज़ार में रहा। प्यारे भाई! तू मेरे सर के बाल न नोच और न दाढ़ी पर हाथ चला और इस तरह दूसरों को हंसने का मौक़ा न दे।'

हारून की यह माक़ूल दलील सुनकर हज़रत मूसा का ग़ुस्सा उनकी तरफ़

Copyright OfflineDeeniApp

से ठंडा हो गया और अब सामरी की तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया—

'सामरी! तूने यह क्या स्वांग बनाया है?

सामरी ने जवाब दिया कि मैंने ऐसी बात देखी जो इन इसराईलियों में से किसी ने नहीं देखी थी, यानी फ़िरऔन के डूबने के वक़्त जिब्रील घोड़े पर सवार इसराईलियों और फ़िरऔनियों के दर्मियान रोक बने हुए थे। मैंने देखा कि उनके घोड़े की सुम की ख़ाक में ज़िंदगी का असर पैदा हो जाता है और सूखी ज़मीन पर सब्ज़ा उग आता है, तो मैंने जिब्रील के घोड़े के क़दमों की ख़ाक से एक मुट्ठी भर ली और उस ख़ाक को इस बछड़े में डाल दिया और उसमें ज़िंदगी की निशानियां पैदा हो गईं और यह 'भां-भां' करने लगा।

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया—

अच्छा, अब दुनिया में तेरे लिए यह सज़ा तज्वीज़ की गई है कि तू पागलों की तरह मारा-मारा फिरे और जब कोई इंसान तेरे क़रीब आए तो उससे भागते हुए यह कहे कि देखना, मुझको हाथ न लगाना, यह तो दुनिया वाला अ़ज़ाब है और क़ियामत में ऐसे नाफ़रमानों और गुमराहों के लिए जो अ़ज़ाब मुक़र्रर है, वह तेरे लिए अल्लाह के वायदे की शक्ल में पूरा होने वाला है।

ऐ सामरी! यह भी देख कि तूने जिस गौशाला को माबूद बनाया था और उसकी समाधि लगाकर बैठा था, हम अभी उसको आग में डालकर ख़ाक किए देते हैं और इस ख़ाक को दरिया में फेंके देते हैं कि तुझको और तेरे इन बेवक़ूफ़ मुक़्तदियों को मालूम हो जाए कि तुम्हारे माबूद की क़द्र व क़ीमत और ताक़त व क़ूवत का यह हाल है कि वह दूसरों पर इनायत व करम तो क्या करता, ख़ुद अपनी ज़ात को हलाकत व तबाही से न बचा सका।

बनी इसराईल को माफ़ी

ग़ुस्सा कम होने पर हज़रत मूसा ﷺ ने तौरात की तख़्तियों को उठा लिया और अल्लाह की तरफ़ रुजू किया कि अब बनी इसराईल की इस बेदीनी और इर्तिदाद की सज़ा अल्लाह के नज़दीक क्या है? जवाब मिला कि जिन लोगों ने यह शिर्क किया, उनको अपनी जान से हाथ धो लेना पड़ेगा।

Copyright OfflineDeeniApp

नसई में रिवायत है कि हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से कहा कि तुम्हारी तौबा की सिर्फ़ एक शक्ल मुक़र्रर की गई है कि मुज्रिमों को अपनी जान को इस तरह ख़त्म कराना चाहिए कि जो आदमी रिश्ते में जिससे सबसे ज़्यादा क़रीब है, वह अपने अ़ज़ीज़ को अपने हाथ से क़त्ल करे यानी बाप बेटे को और बेटा बाप को और भाई भाई को, आख़िरकार बनी इसराईल को इस हुक्म के आगे सर झुका देना पड़ा। काफ़ी तायदाद में बनी इसराईल क़त्ल हुए, जब नौबत यहां तक पहुंची तो हज़रत मूसा अल्लाह के दरबार में सज्दे में गिर पड़े और अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह! अब इन पर रहम फ़रमा कर इनकी ख़ताओं को बख़्श दे। हज़रत मूसा ﷺ की दुआ क़ुबूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि हमने क़ातिल व मक़्तूल दोनों को बख़्श दिया और जो ज़िंदा और क़ुसूरवार हैं, उनकी भी ख़ता माफ़ कर दी। तुम उनको समझा दो कि आगे शिर्क के क़रीब भी न जाएं।

सत्तर सरदारों का इंतिख़ाब

जब बनी इसराईल का यह जुर्म माफ़ कर दिया गया तो अब हज़रत मूसा ने उनसे फ़रमाया कि मेरे पास जो ये 'अलवाह' (तख़्तियां) हैं, यह किताब है, जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारी हिदायत और दीनी व दुन्यवी ज़िंदगी की फ़लाह के लिए मुझको अ़ता फ़रमाई है, यह तौरात है। अब तुम्हारा फ़र्ज़ है कि इस पर ईमान ले आओ और इसके हुक्मों को पूरा करो।

बनी इसराईल बहरहाल बनी इसराईल थे, कहने लगे, मूसा! हम कैसे यक़ीन करें कि यह अल्लाह की किताब है? सिर्फ़ तेरे कहने से तो हम नहीं मानेंगे, हम तो जब उस पर ईमान लाएंगे कि अल्लाह को बे-परदा अपनी आंखों से देख लें और वह हमसे यह कहे कि यह तौरात मेरी किताब है, तुम इस पर ईमान लाओ।

हज़रत मूसा ने उनको समझाया, यह बेवक़ूफ़ी का सवाल है, इन आंखों से अल्लाह को किसने देखा है जो तुम देखोगे? यह नहीं हो सकता, मगर बनी इसराईल का इसरार बराबर क़ायम रहा।

हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह देखा तो कुछ सोचकर इर्शाद फ़रमाया कि

Copyright OfflineDeeniApp

यह तो नामुम्किन है कि तुम लाखों की तायदाद में मेरे साथ हुरैब (तूर) पर इसकी तस्दीक़ के लिए जाओ, मुनासिब यह है कि तुममें से कुछ सरदार चुनकर साथ लिए जाता हूं, वे अगर वापस आकर तस्दीक़ कर दें तो फिर तुम भी तस्लीम कर लेना और चूंकि अभी गौशाला परस्ती करके एक बहुत बड़ा गुनाह कर चुके हो, इसलिए नदामत के इज़्हार के लिए और अल्लाह से आगे नेकी के अह्द के लिए भी यह मौक़ा मुनासिब है। क़ौम इस पर राज़ी हो गई और हज़रत मूसा ने तमाम अस्बात से सत्तर सरदारों को चुन लिया और तूर पर जा पहुंचे। तूर पर एक सफ़ेद बादल की तरह 'नूर' ने हज़रत मूसा को घेर लिया और अल्लाह से हमकलामी शुरू हो गई। हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह के दरबार में अर्ज़ किया कि तू बनी इसराईल के हालात का दाना व बीना है, मैं उनकी ज़िद पर सत्तर आदमी इंतिख़ाब कर लाया हूं, क्या अच्छा हो कि वे भी इस 'हिजाबे' नूर से मेरी और तेरी हमकलामी को सुन ले और क़ौम के पास जाकर तस्दीक़ करने के क़ाबिल हो जाए? अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की दुआ़ मंज़ूर फ़रमा ली और उनको 'हिजाबे नूर' में लिया गया और उन्होंने हज़रत मूसा और अल्लाह रब्बुल आलमीन की हमकलामी (आपस की बात-चीत) को सुना।

सरदारों की हठधर्मी, अ़ज़ाबे इलाही और नई ज़िंदगी

लेकिन जब नूर का परदा हट गया और हज़रत मूसा और उन सरदारों के दर्मियान आमना-सामना हुआ तो सरदारों ने वही अपना पहला इसरार क़ायम रखा कि जब तक बे-परदा अल्लाह को न देख लें, हम ईमान लाने वाले नहीं।

इस बेवक़ूफ़ी के इसरार और ज़िद पर अल्लाह की ग़ैरत ने उनको यह सज़ा दी कि एक हैबतनाक चमक, कड़क और ज़लज़ले ने उनको आ लिया और जला कर ख़ाक कर दिया। हज़रत मूसा ने जब यह देखा तो अल्लाह के दरबार में आजिज़ी के साथ दुआ़ मांगी, इलाही! ये बेवक़ूफ़ अगर बेवक़ूफ़ी कर बैठे तो क्या तू हम सब को हलाक कर देगा। ऐ अल्लाह! अपनी रहमत से तू इनको माफ़ कर दे। अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा की दुआ़ को सुना और

Copyright OfflineDeeniApp

उन सबको दुबारा ताज़ा ज़िंदगी बख़्शी और फिर जब वे ज़िंदगी का लिबास पहन रहे थे तो एक दूसरे की ताज़ा ज़िंदगी को आंखों से देख रहे थे।

तर्जुमा– *'और जब तुमने कहा: ऐ मूसा! हम तुझ पर उस वक़्त तक ईमान नहीं लाएंगे जब तक अल्लाह को बे-परदा अपनी आंखों से न देख लें, पस आंखें देखते तुम को बिजली की कड़क ने आ पकड़ा फिर हमने तुम को मौत के बाद ज़िंदा किया ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो।'* (अल-बक़र: 55)

बनी इसराईल का फिर इंकार और तूर पहाड़ का सरों पर बुलन्द होना

बहरहाल जब ये सत्तर सरदार दोबारा ज़िंदगी पाकर क़ौम की तरफ़ वापस हुए तो उन्होंने क़ौम से तमाम क़िस्सा कह सुनाया और बताया कि मूसा जो कुछ कहते हैं वह हक़ है और बेशक वे अल्लाह के भेजे हुए हैं।

अब सलीम फ़ितरत का तक़ाज़ा तो यह था कि ये सब अल्लाह तआ़ला का शुक्र बजा लाते और उसके ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ज़्ल व करम को देखते हुए फ़रमांबरदारी और उबूदयित के साथ उसके सामने सर झुका देते, मगर हुआ यह कि उन्होंने अपनी टेढ़ को बाक़ी रखा और अपने नुमाइन्दों की तस्दीक़ के बावजूद तौरात के क़ुबूल करने में ठुकराने और क़ुबूल न करने का रवैया अपना लिया और हज़रत मूसा के इर्शाद पर कान न धरा।

जब हज़रत मूसा ने यह देखा तो ख़ुदा के दरबार में रुजू करते हुए क़ौम की वेराहरवी की शिकायत की। ख़ुदा के दरबार से हुक्म हुआ कि इन नाफ़रमानों के लिए मैं तुझको एक हुज्जत (मोजज़ा) और अ़ता करता हूं और वह यह कि जिस पहाड़ (तूर) पर तू मुझसे हमकलाम हुआ है और जिस पर तेरी क़ौम के चुने हुए सरदारों ने हक़ का मुशाहदा किया है, उसी पहाड़ को हुक्म देता हूं कि वह अपनी जगह से हरकत करे और साइबान की तरह बनी इसराईल के सरों पर छा जाए और जुबाने हाल से यह सवाल करे कि मूसा अल्लाह का सच्चा पैग़म्बर है और तौरात बेशक अल्लाह की सच्ची किताब है और अगर ये दोनों हक़ व सदाक़त का मज़हर न होते तो, यह शानदार 'निशान' तुम न देखते, जिसका ज़ाहिर होना अल्लाह की क़ुदरत के सिवा और किसी तरह भी नामुम्किन है।

Copyright OfflineDeeniApp

चुनांचे ज्योंही अल्लाह का यह फ़ैसला हुआ, तूर उनके सरों पर सायबान की तरह नज़र आने लगा और ज़ुबाने हाल से कहने लगा कि ऐ बनी इसराईल! अगर तुममें अक़्ल और होश बाक़ी है और हक़ व बातिल की पहचान मौजूद है तो कान खोल कर सुनो कि मैं अल्लाह का निशान बनकर तुमको यक़ीन दिलाता हूं और गवाही देता हूं कि मूसा ने कई बार मेरी पीठ पर बैठ कर अल्लाह तआ़ला के साथ बात करने का शरफ़ हासिल किया है और तुम्हारी रुश्द व हिदायत का क़ानून (तौरात) भी उसको मेरी पीठ ही पर अ़ता हुआ है और ऐ ग़फ़लत व सरकशी में मस्त लोगो! मेरी यह हैबत (रौब व दबदबा), जो तुम्हारे लिए हैरान करने वाली बन रही है, इस बात की गवाही है कि जब इंसान के सीने में दिल की नर्मी सख़्ती से बदल जाती है, तो फिर वह पत्थर का टुकड़ा, बल्कि इससे भी ज़्यादा सख़्त बन जाता है और रुश्द व हिदायत उसमें किसी ओर से दाख़िल नहीं हो पाती। देखो, मैं पत्थर के टुकड़ों का मज्मूआ़ 'पहाड़' हूं, लेकिन अल्लाह के हुक्म के सामने किस तरह बन्दगी ज़ाहिर कर रहा हूं, मगर तुम हो कि अना (मैं) और ख़ुदी के घमंड में किसी हालत में भी 'नहीं' को 'हां' से बदल देने को तैयार नहीं, सच है—

तर्जुमा—*'फिर तुम्हारे दिल सख़्त हो गए, सो वे हो गए जैसे पत्थर या उनसे भी सख़्त।'* (अल-बक़रः 74)

बनी इसराईल ने जब यह 'निशान' देखा तो अब उसे वक़्ती ख़ौफ़ व दहशत का फल समझिए या खुली आंखों अल्लाह के शानदार 'निशान' के मुशाहदे का नतीजा, यक़ीन कीजिए कि बनी इसराईल तौरात की तरफ़ मुतवज्जह हुए और हज़रत मूसा के सामने उसके अह्काम की तामील का इक़रार किया, तब अल्लाह का फ़रमान हुआ कि ऐ बनी इसराईल! हमने जो तुझे दिया है, उसको मज़बूती के साथ लो और जो अह्काम इस (तौरात) में दर्ज हैं उनकी तामील करो, ताकि तुम परहेज़गार और मुत्तक़ी बन सको।

मगर अफ़सोस कि बनी इसराईल का यह अह्दे मीसाक़ हंगामी साबित हुआ और ज़्यादा दिनों तक वे उस पर क़ायम न रह सके और आदत के मुताबिक़ फिर ख़िलाफ़वर्ज़ी शुरू कर दी। क़ुरआन मजीद ने इन वाक़ियों को बहुत ही थोड़े में, मगर साफ़ और खुले लफ़्ज़ों में इस तरह बयान किया है।

तर्जुमा—*'और जब हमने तुमसे अह्द लिया और तुम्हारे सर पर तूर को*

Copyright OfflineDeeniApp

ऊंचा किया (और कहा) जो हमने तुमको दिया है, उसको ताक़त से पकड़ो और जो कुछ उसमें है, उसको याद करो, ताकि परहेज़गार बनो। फिर इस के बाद तुमने (इस तौरात से) पीठ फेर ली, पस अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो बेशक तुम नुक़्सान उठाने वालों में हो जाते।'

(अल-बक़रः 63 : 64)

तर्जुमा–*'और जब हमने उनके (बनी इसराईल के) सरों पर पहाड़ बुलन्द कर दिया, गोया कि वह सायबान है और उन्होंने यक़ीन कर लिया कि वह उन पर गिरने वाला है, (तो हमने कहा) जो हमने तुमको दिया है, उसको ताक़त से लो और जो कुछ उसमें है, उसको याद करो, ताकि तुम परहेज़गार बनो।*

(अल-आराफ़ 170)

इन आयतों में साफ़ किया गया है कि बनी इसराईल ने जब तौरात के क़ुबूल करने में आनाकानी की, बल्कि इंकार कर दिया तो अल्लाह तआ़ला ने उनके सरों पर तूर को बुलन्द कर दिया और इस तरह अल्लाह की निशानी ज़ाहिर करके उनको तौरात क़ुबूल करने पर तैयार किया।

अर्ज़े मुक़द्दस का वायदा और बनी इसराईल

नोट–(अर्ज़े मुक़द्दस से वह इलाक़ा मुराद है जो पहले कनआ़न कहलाया, फिर फ़लस्तीन)

सीना के जिस मैदान में, उस वक़्त बनी इसराईल मौजूद थे, वह सरज़मीन फ़लस्तीन से क़रीब थी और उनके बाप-दादा हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्हाक़, और हज़रत याक़ूब से अल्लाह का वायदा था कि तुम्हारी औलाद को फिर उस सरज़मीन का मालिक बनाएंगे और वह वहां फूले-फलेगी। इसलिए हज़रत मूसा की मारफ़त अल्लाह का हुक्म हुआ कि अपनी क़ौम से कहो कि अ़र्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल हों और वहां के ज़ालिम व जाबिर हुक्मरानों को निकाल कर अ़दल व इंसाफ़ की ज़िंदगी बसर करें। हम वायदा करते हैं कि फ़त्ह तुम्हारी होगी और तुम्हारे ज़ालिम दुश्मन नाकाम होंगे। हज़रत मूसा ने इससे पहले कि बनी इसराईल को अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल होने के लिए आमादा करें, बारह आदमियों को तफ़्तीशे हाल के लिए भेजा। वह फ़लस्तीन के क़रीबी शहर अरीहा (Jericho) में दाख़िल हुए और तमाम हालात को ग़ौर

Copyright OfflineDeeniApp

से देखा, जब वापस आए तो हज़रत मूसा को बताया कि बहुत जसीम और तन व तोश के ज़बरदस्त हैं और बहुत क़वी हैकल हैं।

हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि जिस तरह तुमने मुझसे उनके बारे में कहा है, क़ौम के सामने न कहना इसलिए कि एक लम्बे अ़र्से की ग़ुलामी ने उनके हौसले पस्त कर दिए हैं और उनकी शुजाअ़त, ख़ुददारी और ऊंची हिम्मत की जगह बुज़दिली, ज़िल्लत और पस्त हिम्मती ने ले ली है, मगर आख़िर ये भी उसी क़ौम के लोग थे, न माने और ख़ामोशी के साथ क़ौम के सामने दुश्मन की ताक़त का ख़ूब बढ़ा-चढ़ा कर ज़िक्र किया, अलबत्ता सिर्फ़ दो आदमी यूशेअ़ बिन नून और कालिब बिन यफ़ना ने हज़रत मूसा के हुक्म की पूरी-पूरी तामील की और उन्होंने बनी इसराईल से ऐसी कोई बात नहीं कही कि जिससे उनकी हिम्मत टूटे।

अब हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से कहा कि तुम इस बस्ती (अरीहा) में दाख़िल हो और दुश्मन का मुक़ाबला करके उस पर क़ाबिज़ हो जाओ, अल्लाह तुम्हारे साथ है।

तर्जुमा–*'और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, ऐ क़ौम! तुम पर जो अल्लाह का एहसान रहा है, उसको याद करो कि उसने तुममें नबी और पैग़म्बर बनाए और तुमको बादशाह और हुक्मरां बनाया और वह कुछ दिया जो जहानों में किसी को नहीं दिया। ऐ क़ौम! उस मुक़द्दस सरज़मीन में दाख़िल हो जिसको अल्लाह तआ़ला ने तुम पर फ़र्ज़ कर दिया है और पीठ फेरकर न लौटो (कि नतीजा यह निकले) कि तुम घाटा और नुक़्सान उठाने वाले बनकर लौटो।*

(अल-माइदा 20-21)

बनी इसराईल की नाफ़रमानी और उसका नतीजा

बनी इसराईल ने यह सुनकर जवाब दिया कि, 'मूसा! वहां तो बड़े ज़ालिम लोग रहते हैं। हम तो उस वक़्त तक उस बस्ती में दाख़िल न होंगे जब तक वे वहां से निकल नं जाएं।

अफ़सोस बदबख़्तों ने यह न सोचा कि जब तक हिम्मत व बहादुरी के साथ तुम उनको वहां से न निकालोगे, तो वे ज़ालिम ख़ुद कैसे निकल जाएंगे?

यूशेअ़ और कालिब ने जब यह देखा तो क़ौम को हिम्मत दिलाई और कहा, शहर के फाटक से गुज़र जाओ, कुछ मुश्किल नहीं, चलो और उनका

Copyright OfflineDeeniApp

मुक़ाबला करो। हमको पूरा यक़ीन है कि तुम ही ग़ालिब रहोगे।

तर्जुमा– *'इन डरने वालों में से दो ऐसे आदमियों ने जिन पर अल्लाह ने अपना फ़ज़्ल और इनाम किया कि तुम इन जाबिरों पर दरवाज़े की तरफ़ से दाख़िल हो जाओ। बस जिस वक़्त तुम दाख़िल हो जाओगे, तुम बेशक ग़ालिब रहोगे और (यह भी कहा) कि अल्लाह ही पर भरोसा रखो, अगर तुम ईमान लाए हो।'*

(अल-माइदा : 23)

लेकिन बनी इसराईल पर इस बात का कुछ भी असर न हुआ और वे पहले की तरह अपने इंकार पर क़ायम रहे और जब हज़रत मूसा ने ज़्यादा ज़ोर दिया तो अपने इंकार पर इसरार करते हुए कहने लगे–

तर्जुमा– *'उन्होंने कहा, ऐ मूसा! हम कभी इस शहर में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं होंगे, जब तक वे उसमें मौजूद हैं। पस तू और तेरा रब दोनों जाओ और उनसे लड़ो, हम तो यहीं बैठे हैं। (यानी तमाशा देखेंगे)*

(अल-माइदा 24)

हज़रत मूसा ﷺ ने जब यह ज़लील और बेहूदा बात सुनी तो बहुत दुखी हुए और इंतिहाई रंज व मलाल के साथ अल्लाह के हुज़ूर अर्ज़ किया, 'ऐ अल्लाह! मैं अपने और हारून के सिवा किसी पर क़ाबू नहीं रखता, सो हम दोनों हाज़िर हैं। अब तू हमारे और इस नाफ़रमान क़ौम के दर्मियान जुदाई कर दे, ये तो सख़्त ना अह्ल हैं।'

अल्लाह ने हज़रत मूसा पर वह्य नाज़िल फ़रमाई, 'मूसा! तुम ग़मगीन न हो, इनकी नाफ़रमानी का तुम पर कोई बोझ नहीं। अब हमने इनके लिए यह सज़ा मुक़र्रर कर दी है कि ये चालीस साल इसी मैदान में भटकते फिरेंगे और इनको अर्ज़े मुक़द्दस में जाना नसीब न होगा। हमने उन पर अर्ज़े मुक़द्दस को हराम कर दिया है।'

तर्जुमा–(अल्लाह तआ़ला ने) *कहा: 'बेशक उन पर अर्ज़े मुक़द्दस का दाख़िला चालीस साल तक हराम कर दिया गया। इस मुद्दत में ये इसी मैदान में भटकते रहेंगे। बस तू नाफ़रमान क़ौम पर ग़म न खा और अफ़सोस न कर।'*

(5 : 26)

(सीना घाटी को 'तीह' इसलिए कहते हैं कि क़ुरआन ने बनी इसराईल के लिए कहा है कि *'यतीहू-न फ़िलअर्ज़'* (ये उसमें भटकते फिरेंगे) जब कोई आदमी रास्ते से भटक जाए तो अरबी में कहते हैं 'ता-ह फ़्लां'

Copyright OfflineDeeniApp

इस सूरतेहाल के बाद हज़रत मूसा और हज़रत हारून को भी उसी मैदान में रहना पड़ा और वे भी अर्ज़े मुक़द्दस में दाख़िल न हो सके, क्योंकि ज़रूरी था कि बनी इसराईल की रुश्द व हिदायत के लिए अल्लाह का पैग़म्बर उनमें मौजूद रहे।

हज़रत हारून की वफ़ात

ऊपर लिखे हालात में जब बनी इसराईल 'तीह' के मैदान में फिरते-फिराते पहाड़ की उस चोटी के क़रीब पहुंचे, जो 'हूर' के नाम से मशहूर थी, तो हज़रत हारून को मौत का पैग़ाम आ पहुंचा। वह और हज़रत मूसा ﷺ अल्लाह के हुक्म से 'हूर' पर चढ़ गए और वहीं कुछ दिनों अल्लाह की इबादत में लगे रहे और जब हज़रत हारून का वहां इंतिक़ाल हो गया तो हज़रत मूसा ﷺ उनको कफ़नाने-दफ़नाने के बाद नीचे उतरे और बनी इसराईल को हारून ﷺ की वफ़ात से मुत्तला किया।

हज़रत मूसा ﷺ की वफ़ात

हज़रत मूसा ﷺ से रिवायत की गई एक हदीस के मुताबिक़ जब हज़रत मूसा की वफ़ात का वक़्त क़रीब आ गया, तो मौत का फ़रिश्ता उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। फ़रिश्ते से कुछ बात-चीत के बाद हज़रत मूसा ﷺ ने अल्लाह तआ़ला से अर्ज़ किया कि अगर लम्बी से लम्बी ज़िंदगी का आख़िरी नतीजा मौत ही है, तो फिर वह चीज़ आज ही क्यों न आ जाए और दुआ़ की कि ऐ अल्लाह! इस आख़िरी वक़्त में अर्ज़े मुक़द्दस से क़रीब कर दे। हज़रत मूसा की दुआ़ के मुताबिक़ उनकी क़ब्र अरीहा[1] की बस्ती में कसीबे अह्मर (लाल टीला) पर वाक़े है, जिसका ज़िक्र एक हदीस में भी आया है। वाज़ेह रहे कि 'तीह' मैदान के सबसे क़रीब वादी मुक़द्दस का इलाक़ा अरीहा की बस्ती है, गोया अल्लाह पाक ने उनकी आख़िरी दुआ़ को भी शरफ़े क़ुबूलियत बख़्शा।

---

1. अरीहा को रीहू भी कहा गया है और आजकल Dericeo भी कहा जाता है। यह जगह जॉर्डन नदी के पच्छिम में युरूशलम से कुछ मील के फ़ासले पर है और यहां एक क़ब्र 'वनी मूसा' के नाम से मशहूर है।

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे वाक़िए

गाय के ज़िब्ह का वाक़िया

एक बार ऐसा हुआ कि बनी इसराईल में एक क़त्ल हो गया, मगर क़ातिल का पता न चला। आख़िर शुबहा ने तोहमत की शक्ल अख़्तियार कर ली और आपसी इख़्तिलाफ़ की ख़ौफ़नाक शक्ल पैदा हो गई। हज़रत मूसा ने अल्लाह तआ़ला की तरफ़ रुजू किया और अर्ज़ किया इस वाक़िए ने क़ौम में सख़्त इख़्तिलाफ़ रूनुमा कर दिया। तू ख़ुद जानने वाला और हिक्मत वाला है, मेरी मदद फ़रमा।

अल्लाह तआ़ला ने हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रमाया कि इनसे कहो, पहले एक गाय ज़िब्ह करें और इसके बाद गाय के एक हिस्से को मक़्तूल के जिस्म से मस करें। अगर वे ऐसा करेंगे तो हम उसको ज़िंदगी बख़्श देंगे और यह मामला साफ़ हो जाएगा। हज़रत मूसा ने बनी इसराईल से जब 'गाय के ज़िब्ह' करने के बारे में फ़रमाया तो उन्होंने अपनी टेढ़ी बातों और बहानेबाज़ियों की आदत के मुताबिक़ बहस शुरू कर दी और कहने लगे, मूसा! तू हमसे मज़ाक़ करता है? यानी मक़्तूल के वाक़िए से गाय ज़िब्ह करने के वाक़िए से क्या ताल्लुक़? अच्छा, अगर यह वाक़ई अल्लाह का हुक्म है तो यह गाय कैसी हो? उसका रंग कैसा हो? इसकी कुछ और तफ़्सीली बातें मालूम होनी चाहिए।

हज़रत मूसा ने जब अल्लाह की वह्य की मारफ़त उनके तमाम सवाला के जवाब दे दिए और बहानेबाज़ी का उनके लिए कोई मौक़ा न रहा, तब वे हुक्म की तामील पर तैयार हुए और अल्लाह की वह्य के मुताबिक़ मामला पूरा किया। अल्लाह तआ़ला के हुक्म से वह मक़्तूल ज़िंदा हो गया और उसने तमाम वाक़िए, जैसे कि वे थे, बयान कर दिए। और इस तरह न सिर्फ़ यह कि क़ातिल का पता चल गया, बल्कि क़ातिल को भी इक़रार के बग़ैर चारा

Copyright OfflineDeeniApp

न रहा और आपस के इख़्तिलाफ़ दूर हो गए और इन मामलों का अच्छे ढंग से ख़ात्मा हुआ।

कुरआन ने इस वाक़िए से मुताल्लिक़ सिर्फ़ इसी क़दर बतलाया है और बेशक यह वाक़िया अल्लाह की उन मुसलसल निशानियों में से एक निशानी थी जो यहूदियों की सख़्त, तेज़ तबियत व आदत के मुक़ाबले में हक़ की ताईद के लिए अल्लाह की हिक्मत के पेशेनज़र ज़ुहूर में आयी।

हज़रत मूसा और क़ारून

बनी इसराईल में एक बहुत बड़ा धनवान आदमी था। कुरआन ने उसका नाम क़ारून बताया है। उसके ख़ज़ाने ज़र व जवाहर से भरे हुए थे और बेइंतिहा मज़बूत मज़दूरों की जमाअ़त मुश्किल ही से उसके ख़ज़ाने की कुंजियां उठा सकती थी। इस ख़ुशहाली और सरमायादारी ने उसको बेहद मग़रूर (घमंडी) बना दिया था। क़ारून दौलत के नशे में इस क़दर चूर था कि अपने अज़ीज़ों, रिश्तेदारों और क़ौम के लोगों को हक़ीर और ज़लील समझता और उनसे हक़ारत के साथ पेश आता था।

हज़रत मूसा और उनकी क़ौम ने एक बार उसको नसीहत की कि अल्लाह तआ़ला ने तुझको बेपनाह दौलत और पूंजी दे रखी है और इ़ज़्ज़त और हश्मत अ़ता फ़रमाई है, इसलिए उसका शुक्र अदा कर और माली हक़ 'ज़कात व सदक़ात' देकर ग़रीबों, फ़क़ीरों और मिस्कीनों की मदद कर, 'अल्लाह को भूल जाना और उसके हुक्मों की ख़िलाफ़वर्ज़ी करना' अख़्लाक़ व शराफ़त दोनों लिहाज़ से सख़्त नाशुक्री और सरकशी है। उसकी दी हुई इ़ज़्ज़त का बदला यह नहीं होना चाहिए कि तू कमज़ोरों और बूढ़ों को हक़ीर व ज़लील समझने लगे और घमंड और नख़वत में चूर होकर ग़रीबों और अज़ीज़ों के साथ नफ़रत से पेश आए।

क़ारून के अपने बड़े होने के जज़्बे को हज़रत मूसा की यह नसीहत पसन्द न आई और उसने ग़ुरूर भरे अन्दाज़ में कहा—मूसा! मेरी यह दौलत व सरवत तेरे ख़ुदा की दी हुई नहीं है, यह तो मेरे अ़क़्ली तजुर्बों और इल्मी काविशों का नतीजा है। मैं तेरी नसीहत को मानकर अपनी दौलत को इस

Copyright OfflineDeeniApp

तरह बबांद नहीं कर सकता।

मगर हज़रत मूसा ﷺ बराबर तबलीग़ का अपना फ़र्ज़ अंजाम देते रहे और क़ारून को हिदायत का रास्ता दिखाते रहे। क़ारून ने जब यह देखा कि मूसा किसी तरह पीछा नहीं छोड़ते तो उनको ज़च करने और अपनी दौलत व हश्मत के मुज़ाहरे से मरऊब करने के लिए एक दिन बड़े कर्र व फ़र्र के साथ निकला।

हज़रत मूसा ﷺ बनी इसराईल के मज्मे में अल्लाह का पैग़ाम सुना रहे थे कि क़ारून एक बड़ी जमाअ़त और ख़ास शान व शौकत और ख़ज़ानों की नुमाइश के साथ सामने से गुज़रा, इशारा यह था कि अगर हज़रत मूसा की तब्लीग़ का यह सिलसिला यों ही जारी रहा, तो मैं भी एक भारी जत्था रखता हूं और ज़र व जवाहर का भी मालिक हूं। इसलिए इन दोनों हथियारों के ज़रिए मूसा को हरा कर रहूंगा।

बनी इसराईल ने जब क़ारून की इस दुन्यवी सरवत व अज़्मत को देखा तो उनमें से कुछ आदमियों के दिलों में इंसानी कमज़ोरी ने यह जज़्बा पैदा कर दिया कि वे बेचैन होकर यह दुआ़ करने लगे, 'ऐ काश! यह दौलत व सरवत और अज़्मत व शौकत हमको भी नसीब होती।'

मगर बनी इसराईल के सूझ-बूझ वाले अह्ले इल्म ने फ़ौरन मुदाख़लत की और उनसे कहने लगे, 'ख़बरदार! इस दुन्यवी ज़ेब व ज़ीनत पर न जाना और उसके लालच में गिरफ़्तार न हो बैठना, तुम बहुत जल्द देखोगे कि इस दौलत व सरवत का बुरा अंजाम कैसा होने वाला है।'

आख़िरकार जब क़ारून ने किब्र व नख़वत के ख़ूब-ख़ूब मुज़ाहरे कर लिए और हज़रत मूसा और बनी इसराईल के मुसलमानों की तह्क़ीर व तज़लील में काफ़ी से ज़्यादा ज़ोर लगा लिया तो अब ग़ैरते हक़ हरकत में आई और 'अ़मल का बदला' के फ़ितरी क़ानून ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, और क़ारून और उसकी दौलत पर अल्लाह का यह अटल फ़ैसला सुना दिया— *'फ़ख़सफ़ना बिही व बिदारिहिलअर्ज़'* (हमने क़ारून को और उसके सरमाए को ज़मीन के अन्दर धंसा दिया) और बनी इसराईल का आंखों देखते न ग़रूर बाक़ी रहा और न सामाने ग़रूर, सबको ज़मीन ने निगल कर इबरत का सामान

Copyright OfflineDeeniApp

मुहैया कर दिया। कुरआन मजीद ने कई जगहों पर इस वाक़िए को तफ़्सील से भी और मुख़्तसर भी बयान किया है।

तर्जुमा–*'फिर हमने क़ारून और उसके महल को ज़मीन में धंसा दिया, पस इसके लिए कोई जमाअ़त मददगार साबित न हुई, जो अल्लाह के अ़ज़ाब से उसको बचाए, और वह बेयार व मददगार ही रह गया।* (क़सस 28-81)

क़ारून का वाक़िया कब पेश आया?

तफ़्सीर लिखने वाले उलेमा को इसमें तरद्दुद है कि क़ारून का वाक़िया कब पेश आया?–मिस्र में फ़िरऔन के ग़र्क़ होने से पहले या 'तीह' के मैदान में फ़िरऔन के ग़र्क़ होने के बाद। कुरआन ने इस वाक़िए को फ़िरऔन के ग़र्क़ होने से मुताल्लिक़ वाक़ियों के बाद किया है। इसलिए हमारे नज़दीक यह वाक़िया 'तीह' मैदान का है।

हज़रत मूसा और ख़िज़्र

हज़रत मूसा की ज़िंदगी के वाक़ियों में एक अहम वाक़िया उस मुलाक़ात का है जो उनके और एक साहिबे बातिन के दर्मियान हुई और हज़रत मूसा ﷺ ने उनसे तक्वीनी दुनिया के कुछ असरार व रुमूज़ मालूम किए। इस मुलाक़ात का ज़िक्र तफ़्सील के साथ सूरः कह्फ़ में किया गया है और बुख़ारी में इस वाक़िए से मुताल्लिक़ कुछ और तफ़्सील से ज़िक्र आया है।

बुख़ारी में सईद बिन जुबैर ﷺ से रिवायत है कि उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास से अर्ज़ किया कि नौफ़ बकाली कहता है कि ख़िज़्र के मूसा, बनी इसराईल के मूसा नहीं हैं, यह एक दूसरे मूसा हैं। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ﷺ ने फ़रमाया, ख़ुदा का दुश्मन झूठ कहता है मुझसे उबई बिन काब ने हदीस बयान की है कि उन्होंने रसूले अकरम ﷺ से सुना है: इर्शाद फ़रमाते हैं कि, 'एक दिन हज़रत मूसा बनी इसराईल को ख़िताब कर रहे थे कि किसी आदमी ने मालूम किया कि इस ज़माने में सबसे बड़ा आलिम कौन है? हज़रत मूसा ने फ़रमाया, मुझे अल्लाह ने सबसे ज़्यादा इल्म अ़ता फ़रमाया है। अल्लाह तआ़ला को यह बात पसन्द न आई और उन पर इताब हुआ कि तुम्हारा मंसब

Copyright OfflineDeeniApp

तो यह था कि उसको इल्मे इलाही के सुपुर्द करते और कहते, *'वल्लाहु आलम'* और फिर वह्य नाज़िल फ़रमाई कि जहां दो समुन्दर मिलते हैं (मजमउल बहरैन) वहां हमारा एक बन्दा है जो कुछ मामलों में तुझसे भी ज़्यादा आ़लिम व दाना है।'

हज़रत मूसा ने अ़र्ज़ किया, परवरदिगार! तेरे इस बन्दे तक पहुंचने का क्या तरीक़ा है? अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि मछली को अपने तोशेदान में रख लो। पस जिस जगह वह मछली गुम हो जाए, उसी जगह वह आदमी मिलेगा। हज़रत मूसा ने मछली को तोशेदान में रखा और अपने ख़लीफ़ा यूशेअ् बिन नून को साथ लेकर 'मर्दे सालेह' की तलाश में रवाना हो गए। जब चलते-चलते एक मक़ाम पर पहुंचे, तो दोनों एक पत्थर पर सर रखकर सो गए। मछली में ज़िंदगी पैदा हुई और वह ज़ंबील से निकल कर समुन्दर में चली गई। मछली पानी के जिस हिस्से पर बहती गई और जहां तक गई, वहां पानी बर्फ़ की तह जम कर एक छोटी-सी पगडंडी की तरह हो गया, ऐसा मालूम होता था कि समुद्र में एक लकीर या ख़त खिंचा हुआ है।

यह वाक़िया यूशेअ् बिन नून ने देख लिया था, क्योंकि वह हज़रत मूसा ﷺ से पहले बेदार हो गए थे मगर जब हज़रत मूसा बेदार हुए तो उनसे ज़िक्र करना भूल गए और फिर दोनों ने अपना सफ़र शुरू कर दिया और उस दिन-रात आगे बढ़ते ही गए। जब दूसरा दिन हुआ तो हज़रत मूसा ने फ़रमाया कि अब थकन ज़्यादा महसूस होने लगी, वह मछली लाओ, ताकि अपनी भूख मिटाएं। नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया, हज़रत मूसा को अल्लाह तआ़ला की बताई हुई मंज़िले मक़्सूद तक पहुंचने में कोई थकन न हुई थी, मगर मंज़िल से आगे ग़लती से निकल गए तो अब थकन भी महसूस होने लगी।

यूशेअ् बिन नून ने कहा, आपको मालूम रहे कि जब हम पत्थर की चट्टान पर थे तो वहीं मछली का ताज्जुब भरा वाक़िया पेश आया कि उसमें हरकत पैदा हुई और वह मक्तल (ज़ंबील) में से निकल कर समुन्दर में चली गई और उसकी रफ़्तार पर समुद्र में रास्ता बनता चला गया। मैं आपसे यह वाक़िया कहना भूल गया। यह भी शैतान का एक चरका था।

नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि समुन्दर का वह 'ख़त' मछली के लिए

Copyright OfflineDeeniApp

'सर्ब' (रास्ता) था और मूसा और यूशेअ् के लिए 'उज्ब' (ताज्जुब वाली बात)।

हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया कि जिस जगह की हमको तलाश है, वह वही जगह थी और यह कहकर दोनों फिर एक दूसरे से बात-चीत करते हुए उसी राह पर लौटे और उस सख़रा (पत्थर की चट्टान) तक जा पहुंचे।

वहां पहुंचे तो देखा कि उस जगह उम्दा कपड़ा पहने हुए एक आदमी बैठा है। हज़रत मूसा ने उसको सलाम किया। उस आदमी ने कहा, तुम्हारी इस सरज़मीन में 'सलाम' कहां? (यानी इस सरज़मीन में तो मुसलमान नहीं रहते) यह ख़िज़्र थे। हज़रत मूसा ने कहा, हां, मैं तुमसे वह इल्म हासिल करने आया हूं जो अल्लाह ने तुम ही को बख़्शा है।

ख़िज़्र ने कहा, तुम मेरे साथ रहकर उन मामलों पर सब्र न कर सकोगे? मूसा! अल्लाह ने मुझको तक्वीनी असरार व रुमूज़ का वह इल्म अ़ता किया है जो तुमको नहीं दिया गया और उसने तुमको (तशरीई इल्मों का) वह इल्म अ़ता फ़रमाया है जो मुझको अ़ता नहीं हुआ। हज़रत मूसा ने कहा, 'इन्शाअल्लाह' आप मुझको सब्र व ज़ब्त करने वाला पाएंगे और मैं आपके इर्शाद की बिल्कुल ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करूंगा। हज़रत ख़िज़्र ने कहा, तो फिर शर्त यह है कि जब आप मेरे साथ रहें तो किसी मामले के मुताल्लिक़ भी, जिसको आपकी निगाहें देख रही हों, मुझसे कोई सवाल न करें। मैं ख़ुद उनकी हक़ीक़त आपको बता दूंगा। हज़रत मूसा ने मंज़ूर कर लिया और दोनों एक तरफ़ को रवाना हो गए।

जब समुद्र के किनारे पहुंचे तो सामने से एक नाव नज़र आई। हज़रत ख़िज़्र ने मल्लाहों से किराया पूछा। वे ख़िज़्र को पहचानते थे, इसलिए उन्होंने किराया लेने से इंकार कर दिया और इसरार करके दोनों को कश्ती पर सवार कर लिया और कश्ती रवाना हो गई। अभी चले हुए ज़्यादा देर न हुई थी कि हज़रत ख़िज़्र ने कश्ती के सामने वाले हिस्से का एक तख़्ता उखाड़ कर कश्ती में सूराख़ कर दिया। हज़रत मूसा से ज़ब्त न हो सका, ख़िज़्र से कहने लगे, कश्ती वालों ने यह एहसान किया कि आपको और मुझको मुफ़्त सवार कर लिया और आपने उसका यह बदला दिया कि कश्ती में सूराख़ पर दिया कि सब कश्ती वाले कश्ती समेत डूब जाएं, यह तो बहुत नामुनासिब हरकत हुई?

Copyright OfflineDeeniApp

हज़रत ख़िज़्र ने कहा कि मैंने तो पहले ही कहा था कि आप मेरी बातों पर सब्र न कर सकेंगे? आख़िर वही हुआ। हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया, मैं वह बात बिल्कुल भूल गया, इसलिए आप भूल-चूक पर पकड़ें नहीं और मेरे मामले में सख़्ती न करें। यह पहला सवाल वाक़ई मूसा की भूल की वजह से था। इसी बीच एक चिड़िया कश्ती के किनारे आकर बैठी और पानी में चोंच डालकर एक क़तरा पानी पी लिया। हज़रत ख़िज़्र ने कहा, बेशक तश्बीहे इल्म इलाही के मुक़ाबले में मेरा और तुम्हारा इल्म ऐसा ही बे-हक़ीक़त है, जैसा कि समुद्र के सामने यह क़तरा।

कश्ती किनारे लगी और दोनों उतर कर एक ओर को रवाना हो गए। समुन्दर के किनारे-किनारे जा रहे थे कि एक मैदान में कुछ बच्चे खेल रहे थे। हज़रत ख़िज़्र आगे बढ़े और उनमें से एक बच्चे को क़त्ल कर दिया। हज़रत मूसा ﷺ फिर सब्र न कर सके, फ़रमाने लगे—'नाहक़ एक मासूम जान को आपने मार डाला, यह तो बहुत ही बुरा किया?' हज़रत ख़िज़्र ने कहा, मैं तो शुरू ही में कह चुका था कि आप मेरे साथ रहकर सब्र व ज़ब्त से काम न ले सकेंगे। नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया, चूंकि यह बात पहली बात से भी ज़्यादा सख़्त थी, इसलिए हज़रत मूसा ﷺ फिर सब्र न कर सके। हज़रत मूसा ﷺ ने फ़रमाया, ख़ैर इस बार और नज़रअंदाज़ कर दीजिए इसके बाद भी अगर सब्र न हो सका, तो फिर उज़्र करने का कोई मौक़ा न रहेगा और इसके बाद आप मुझसे अलग हो जाइएगा।

ग़रज़ फिर दोनों रवाना हो गए और चलते-चलते एक ऐसी बस्ती में पहुंचे, जहां के रहने वाले ख़ुशहाल और मेहमानदारी के हर तरह क़ाबिल थे, मगर दोनों की गुसाफ़िराना दरख़्वास्त पर भी उनको मेहमान बनाने से इंकार कर दिया था। ये अभी बस्ती ही में से गुज़रे थे कि ख़िज़्र एक ऐसे मकान की ओर बढ़े, जिसकी दीवार कुछ झुकी हुई थी और उसके गिर जाने का डर था। हज़रत ख़िज़्र ने उसको सहारा दिया और दीवार को सीधा कर दिया। हज़रत मूसा ﷺ ने फिर ख़िज़्र को टोका और फ़रमाने लगे कि 'हम इस बस्ती में मुसाफ़िर की हैसियत से दाख़िल हुए मगर उसके बसने वालों ने न मेहमानदारी की और न टिकने को जगह दी। आपने यह क्या किया उसके एक

Copyright OfflineDeeniApp

बाशिंदे की दीवार को बग़ैर मुआवज़े के दुरुस्त कर दिया। अगर करना ही तो भूख-प्यास को दूर करने के लिए कुछ उजरत ही ले कर लेते। हज़रत ख़ि ने फ़रमाया, अब मेरी और तेरी जुदाई का वक़्त आ गया, *'हाज़ा फ़िराक़ु व बैनक'* और फिर उन्होंने हज़रत मूसा ﷺ को इन तीनों मामलों हक़ीक़तों को समझाया और बताया कि ये सब अल्लाह की तरफ़ से वे थीं, जिन पर आप सब्र न कर सके।

हज़रत ख़िज़्र से मुताल्लिक़ अहम बातें

हज़रत ख़िज़्र से मुताल्लिक़ कुछ बातें ज़िक्र के क़ाबिल हैं—

1. ख़िज़्र नाम है या लक़ब?
2. ख़िज़्र सिर्फ 'नेक बन्दा' हैं या वली हैं या नबी हैं या रसूल?
3. उनको हमेशा की ज़िंदगी हासिल है या वफ़ात पा चुके?
4. मज्मउल बहरैन (बहरैन की जगह) कहां है?
5. हज़रत ख़िज़्र का मक़ाम व मर्तबा क्या है?

1. क़ुरआन मजीद में न हज़रत ख़िज़्र का नाम ज़िक्र हुआ है औ लक़ब, बल्कि *'अब्दम मिन इबादिना'* (हमारे बन्दों में से एक बन्दा) क ज़िक्र किया गया है। बुख़ारी व मुस्लिम की सही हदीसों में ख़िज़्र कहकर ' हुआ है, इसलिए न यह कहा जा सकता है कि ख़िज़्र नाम है और न यह ख़िज़्र लक़ब है और इसका खोलना ज़रूरी भी नहीं।

2. तर्जीह के क़ाबिल यही है कि वह नबी थे। क़ुरआन मजीद ने अन्दाज़ में उनके शरफ़ का ज़िक्र किया है, वह नबी की पदवी के लिए ही उतरता है विलायत का मक़ाम तो उससे बहुत पीछे है।

3. तस्क़ीक़ करने वाले उलेमा की सही राय यह है कि वह वफ़ा चुके हैं, क्योंकि इस दुनिया में मौत एक हक़ीक़त है—

तर्जुमा—*'और ऐ मुहम्मद! हमने तुझसे पहले भी किसी बशर को हयात अ़ता नहीं की।'*

(अल-अंबिय

4. 'मजमउल बहरैन' के बारे में हज़रत उस्ताद अल्लामा सैयद मु अनवर शाह क़द्द-स सिर्रहू फ़रमाते हैं—

Copyright OfflineDeeniApp

'यह मक़ाम वह है जो आजकल अक़्बा के नाम से मशहूर है।

5. हज़रत ख़िज़्र का मक़ाम—कुरआन मजीद ने इस वाक़िए के शुरू में ख़िज़्र के 'इल्म' के मुताल्लिक़ कहा है 'व अल्लमहू मिल्लदुन्नी इलमा'

तर्जुमा—*'और हमने उसको अपने पास से इल्म अ़ता किया।'*

(अल-कह्फ़ 15)

और क़िस्से के आख़िर में ख़िज़्र का यह क़ौल नक़ल किया है—'व मा फ़-अल्तु हू अन अमरी'

तर्जुमा—*'मैंने वाक़ियों के इस सिलसिले को अपनी ओर से नहीं किया।'*

(अल-कह्फ़ 88)

तो इन दोनों जुम्लों से मालूम होता है कि अल्लाह तआ़ला ने ख़िज़्र को कुछ चीज़ों की हक़ीक़तों का वह इल्म अ़ता फ़रमाया था, जो तक्वीनी रुमूज़ व असरार और बातिनी हक़ीक़तों से मुताल्लिक़ है और यह एक ऐसा मुज़ाहरा था, जिसे अल्लाह तआ़ला ने हक़ वालों पर वाज़ेह कर दिया। अगर इस दुनिया की तमाम हक़ीक़तों पर से इसी तरह परदा उठा दिया जाए जिस तरह कुछ हक़ीक़तों के लिए ख़िज़्र के लिए बे-नक़ाब कर दिया था, तो इस दुनिया के तमाम हुक्म ही बदल जाएं और अ़मल की आज़माइशों का यह सारा कारख़ाना बिखर कर रह जाए, मगर दुनिया आमाल की आज़माइशगाह है, इसलिए 'तक्वीनी हक़ीक़तों' पर परदा पड़ा रहना ज़रूरी है, ताकि हक़ व बातिल की पहचान के लिए जो तराज़ू अल्लाह की क़ुदरत ने मुक़र्रर कर दिया है, वह बराबर अपना काम अंजाम देता रहे।

जहां तक हज़रत मूसा ﷺ का ताल्लुक़ है, तो नबूवत व रिसालत के मामलात के मज्मूए के एतबार से हज़रत मूसा ﷺ का मक़ाम हज़रत ख़िज़्र के मक़ाम से बहुत बुलन्द है, क्योंकि वे अल्लाह के नबी भी हैं और जलीलुलक़द्र रसूल भी, शरीअ़त वाले भी हैं और किताब वाले भी और रसूलों में अ़ज़्म वाले रसूल हैं, पस हज़रत ख़िज़्र का वह जुज़ई इल्म तक्वीन के असरार से ताल्लुक़ रखता था हज़रत मूसा की शरीअ़त के जामे इल्म से आगे नहीं जा सकता।

Copyright OfflineDeeniApp

[illegible] इसराईल का ईज़ा पहुंचाना

पीछे के पन्नों में जिन वाक़ियों का ज़िक्र किया गया है उनसे यह बात साफ़ हो चुकी है कि बनी इसराईल ने हज़रत मूसा ﷺ को क़ौल और अ़मल दोनों तरीक़ों से बड़ी तक्लीफ़ें पहुंचाईं, यहां तक कि बुहतान लगाने और तोहमत गढ़ने से भी बाज़ नहीं रहे, लेकिन क़ुरआन मजीद ने इन वाक़ियों के अलावा, जिनका ज़िक्र पीछे के पन्नों में हो चुका है, सूरः अह्ज़ाब और सूरः सफ़्फ़ में हज़रत मूसा के साथ बनी इसराईल के तक्लीफ़ पहुंचाने पर निंदा करते हुए कहा है–

तर्जुमा–*'ऐ ईमान वालो! तुम उन बनी इसराईल की तरह न बनो, जिन्होंने मूसा को तक्लीफ़ पहुंचाई।'* (अल-अह्ज़ाब 69)

तर्जुमा–*'और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ क़ौम! तू किस लिए मुझको तक्लीफ़ पहुंचाती है, जबकि तुझको मालूम है कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ रसूल हूं।'* (अस्सफ़्फ़ 5)

इस बारे में बहस की गई है कि यहां जिस तक्लीफ़ का ज़िक्र किया गया है, क्या उससे वही हालात मुराद हैं जो बनी इसराईल की सरकशी से मुताल्लिक़ हैं या उनके अलावा किसी ख़ास वाक़िए की ओर इशारा है। इस बहस में सही मस्लक यह है कि जब क़ुरआन ने हज़रत मूसा ﷺ से मुताल्लिक़ तक्लीफ़ के वाक़िए को मुज्मल बयान किया है तो हमारे लिए भी यही मुनासिब है कि उसको किसी वाक़िए से मुताल्लिक़ न करें और जिस हिक्मत व मस्लहत की वजह से अल्लाह ने उसको मुज्मल रखना मुनासिब समझा, हम भी उसी को काफ़ी समझें।

सनीचर का दिन

हज़रत इब्राहीम ﷺ ने अपनी उम्मत में अल्लाह की इबादत के लिए हफ़्ते के सात दिनों में से जुमे का दिन मुक़र्रर फ़रमाया था। हज़रत मूसा के ज़माने में बनी इसराईल ने इसरार किया कि जुमा की बजाए सनीचर का दिन इबादत व बरकत के लिए मुक़र्रर किया जाए। बनी इसराईल के इसरार पर अल्लाह की वह्य ने हज़रत मूसा को इत्तिला दी कि उनकी मांग मंजूर करते

Copyright OfflineDeeniApp

हुए हफ़्ते (सनीचर) का दिन जुमा का क़ायम मक़ाम बनाया जाता है, लेकिन!

तर्जुमा– *'और हमने इन (बनी इसराईल) से कहा, सब्त के बारे में हद से न गुज़रना (ख़िलाफ़वर्ज़ी न करना) और हमने इनसे मुताल्लिक़ सख़्त अह्द व पैमान लिया।* (अन-निसा 154)

हज़रत मूसा की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ दूसरे मामले

फ़िरऔन नई तस्क़ीक़ की रोशनी में

मिस्री दारुल आसार के चित्रकार (मुसव्विर) और असरी और हजरी (पत्थरों और खंडरात के) नामी आलिम अहमद यूसुफ़ आफ़ंदी की खोज का ख़ुलासा यह है कि यूसुफ़ जब मिस्र में दाख़िल हुए हैं तो यह फ़िरऔन के सोलहवें ख़ानदान का ज़माना था और उस फ़िरऔन का नाम 'अबाबिल अव्वल' था और जिस फ़िरऔन ने बनी इसराईल को मुसीबतों में डाला वह रामीसीस सिकंड (Ramesses II) हो सकता है। यह मिस्र के हुक्मरानों का उन्तीसवां ख़ानदान था। हज़रत मूसा उसके ज़माने में पैदा हुए और उनकी गोद में पले-बढ़े। रामीसीस सिकंड ने इस डर से कि बनी इसराईल का यह शानदार क़बीला, जो लाखों इंसानों पर मुश्तमिल था, अन्दरूनी बग़ावत पर उतर न आए, बनी इसराईल को मुसीबतों में मुब्तला करना ज़रूरी नहीं समझा, जिनका ज़िक्र तौरात और क़ुरआन हकीम में किया गया है।

रामीसीस सिकंड ने अपने बुढ़ापे के ज़माने में अपने बेटे मरनिफ़ताह (Mcrneftah) को हुकूमत में शरीक कर लिया था, इसलिए मरनिफ़ताह ही वह फ़िरऔन हो सकता है जो नदी में डूबा। इस नतीजे की ताईद इससे होती है कि मिस्री दस्तूर के मुताबिक़ मरनिफ़ताह का अलग से मक़्बरा नहीं, बल्कि वह अठारहवीं ख़ानदान के फ़िरऔन के मक़्बरे में दफ़न किया गया। मिस्री अजाइबघरों में एक लाश आज भी महफ़ूज़ है और मुहम्मद अ़ददी की किताब 'दावतुर्रुसुल इलल्लाहि' के मुताबिक़ इस लाश की नाक के सामने का हिस्सा नहीं है। ऐसा मालूम होता है कि शायद दरियाई मछली ने ख़राब किया है और

Copyright OfflineDeeniApp

फिर उसकी लाश ख़ुदा के फैसले के मुताबिक़ किनारे पर फेंक दी गई, ताकि–

तर्जुमा– *'वह मेरे बाद आने वालों के लिए (अल्लाह का) निशान रहे।'*

(10 : 92)

देखो मुझे जो दीदा-ए-इबरत निगाह हो

मोरिस बकाईए (Maurice Bucaille) का फ़ैसला करने वाला क़ौल

फ़िरऔन के ग़र्क़ हो जाने का वाक़िया बहुत से पुराने और नए तस्क़ीक़ करने वालों के लिए बहस का मौज़ू बना रहा और अब तक बना हुआ है, बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं और लिखी जा रही हैं लेकिन ये सब उस वाक़िए की तारीख़ी और जुग़राफ़ियाई (ऐतिहासिक और भौगोलिक) हैसियत पर ज़ोर देती हैं। इस बारे में मोरिस बकाईए (Maurice Bucaille) मशहूर व मारूफ़ फ्रांसीसी मुसन्निफ़ (लेखक) ने अपनी किताब बाइबिल, क़ुरआन और सांइस (Bible, Quran and Science) में तफ़्सीली बहस की है, जो देखने-पढ़ने वाले और ज़्यादा मालूमात के ख़्वाहिशमंद हों, वे उस किताब से जिसका उर्दू तर्जुमा भी हो चुका है, रुजू कर सकते हैं। हम यहां सिर्फ़ कुछ बातें बयान करेंगे–

1. हज़रत मूसा रामीसिस सिकेंड के ज़माने में पैदा हुए और उसके यहां उन्होंने परवरिश पाई।

2. रामीसिस सिकेंड का इंतिक़ाल हज़रत मूसा के मदयन में ठहरने के ज़माने में हो गया।

3. रामीसिस सिकंड के बाद उसका बेटा मरनिफ़्ताह तख़्त पर बैठा और लगभग बारह सौ साल क़ब्ल मसीह लाल सागर में डूबने वाला यही फ़िरऔन है। लाल सागर को किस जगह से पार किया गया, यक़ीन के साथ नहीं कहा जा सकता।

4. रामीसिस सिकेंड और मरनिफ़्ताह दोनों की लाशें मिस्री म्यूज़ियम में महफ़ूज़ हैं। मोरिस बकाईए की बहस के ख़ात्मे पर आख़िरी लाइनें तवज्जोह के क़ाबिल हैं।

5. फ़लक़े बह्र (समुद्र का फटना) का ज़माना अन्दाज़ा है कि बारह सौ

Copyright OfflineDeeniApp

साल क़ब्ल मसीह का है।

फ़लक़ बह (समुद्र के फटने) से मुताल्लिक़ क़ियास आराइयां

वे लोग जो मज़हब से मुताल्लिक़ हर मसले को 'माद्दी बातों' ही तक महदूद रखना चाहते हैं, और इसलिए अल्लाह के दिए हुए उन निशानों (मोजज़ों) का भी इंकार करते हैं, जो नबियों और रसूलों की सच्चाई की ताईद और दलील में ज़ाहिर होते हैं, यानी वे अल्लाह के किसी भी काम को किसी हालत में भी इस महसूस और माद्दी दुनिया के कारण और प्रभाव (Cause & Effect) से अलग मान लेने को तैयार नहीं, इसलिए हज़रत मूसा ﷺ की नुबूवत के ज़माने से मुताल्लिक़ फ़लक़े बह (समुन्दर का फटना) के मोजज़े के बारे में बहुत-से अन्दाज़े किए गए हैं, जिसमें सबसे आम ख़्याल यह ज़ाहिर किया जाता है कि यह मद व जज़्र (ज्वार-भाटा) था, लेकिन यह भूल जाते हैं कि अगरचे सलामत गुज़रने वालों की तायदाद, जो तौरात के मुताबिक़ छः लाख से ज़्यादा होती है, मुबालग़ा (अतिशयोक्ति) पर क़ायम है, फिर भी कुछ हज़ार की तो होगी ही और उनके साथ लाने-ले जाने के सामान भी और उनके जानवर और दूसरी चीज़ें भी और उसके साथ फ़िरऔन की सारी फ़ौज भी जो डूब गई, क़ुरआन में आता है–

तर्जुमा–*'बस दरिया फट गया, फिर हर ओर एक पहाड़ की तरह हो गई।'*

(अश-शुअरा 63)

ज़ाहिर है ऊपर वाली सूरत उस वक़्त तक क़ायम रही होगी जब तक बनी इसराईल एक किनारे से दूसरे किनारे पर सलामती से पहुंच जाएं और फिर उसमें फ़िरऔन और उसका लश्कर भी इस हद तक दाख़िल हो जाए कि वह पूरी तरह डूब जाए। क़ुरआन मजीद में साफ़ है–

'और हमने मूसा और उसके साथियों को नजात दी, फिर दूसरों को (यानी उनके दुश्मनों को) ग़र्क़ कर दिया।'

(अश-शुअरा 65-66)

और यह भी बता दिया–

तर्जुमा–*बेशक इस वाक़िए में (ख़ुदा का ज़बरदस्त मोजज़ा है)'*

(अश-शुअ्रा 67)

Copyright OfflineDeeniApp

क़ुरआन क इतना वाज़ह कर देने के बाद उसको मामूल के मुताबिक़ मद्द व जज़्र समझना अक़्ल व ख़िरद की तंगदामनी के सिवा और क्या हो सकता है।

जादू और मज़हब

1. जादू की कोई हक़ीक़त भी है या वह सिर्फ़ नज़र का धोखा है और बे-हक़ीक़त कोई चीज़ है? इसके बारे में अह्ले सुन्नत उलेमा की यह राय है कि जादू सच में एक हक़ीक़त है और नुक़्सान पहुंचाने वाले असरात भी रखता है। अल्लाह तआ़ला ने अपनी बड़ी हिक्मत को सामने रखकर उसमें इसी तरह नुक़्सान पहुंचाने वाले असरात रख दिए हैं, जिस तरह ज़हर वग़ैरह में मगर यह नहीं है कि 'जादू' अल्लाह की क़ुदरत से बेनियाज़ होकर 'अल्लाह की पनाह' ख़ुद बे-नियाज़ है, ख़ुद अपने आप असर रखने वाले चीज़ है, यह अ़क़ीदा ख़ालिस कुफ़्र है।

2. इस्लामी फ़ुक़हा (विद्वानों) ने जादू के बारे में साफ़ किया है कि जादू के जिन आमाल में शैतान, गन्दी रूहें और ग़ैरअल्लाह से मदद चाही जाए और उनको हाजत रवा क़रार देकर मंत्रों के ज़रिए उनको क़ाबू में करने का काम किया जाए, तो वह शिर्क जैसा है और उस पर अ़मल करने वाला काफ़िर है। जिन अ़मलों में इनके अलावा दूसरे तरीक़े अख़्तियार किए जाएं और उनसे दूसरों को नुक़्सान पहुंचाया जाए उनका करने वाला हराम और बड़े गुनाह का मुर्तकिब है।

मोजज़ा और जादू में फ़र्क़

नबी और रसूल का असल मोजज़ा उसकी वह तालीम होती है, जो वे राहे हक़ से हटी हुई और भटकी हुई क़ौमों की हिदायत के लिए नुस्ख़ा-ए-कीमिया और दीनी और दुन्यवी फ़लाह व कामरानी के लिए बेनज़ीर क़ानून की शक्ल में पेश करता है, लेकिन आम इंसानी दुनिया की फ़ितरत इस पर क़ायम है कि वे सच्चाई और सदाक़त के लिए भी कुछ ऐसी चीज़ों के ख़्वाहिशमन्द होते हैं जो लाने वाले के रूहानी करिश्मों से ताल्लुक़ रखती हों और जिनके मुक़ाबले से तमाम दुन्यवी ताक़तें आ़जिज़ हो जाती हों, क्योंकि उनके इल्म की पहुंच

Copyright OfflineDeeniApp

किसी सच्चाई के लिए इसा का मेयार क़रार देती हैं।

इसलिए यह 'अल्लाह की सुन्नत' जारी रही है कि वे नबियों और रसूलों को दीने हक़ की तालीम व पैग़ाम के सथ एक या कुछ निशानियों (मोजज़ों) को भी अ़ता करता है और जब वे नुबूवत के दावे के साथ बग़ैर (सबब) के ऐसा 'निशान' दिखाता है, जिसका मुक़ाबला दुनिया की कोई ताक़त नहीं कर सकती तो उसका नाम 'मोजज़ा' होता है।

और इसीलिए यह भी 'अल्लाह की सुन्नत' है कि किसी नबी और रसूल को जो मोजज़ा या निशान दिया जाता है, वह उसी क़िस्म में से होता है, जिसमें उस क़ौम को सबसे पहले उस पैग़म्बर ने ख़िताब किया है, जिसे 'कमाल दर्जा' हासिल हो और वह उसकी तमाम हक़ीक़तों को अच्छी तरह जानता हो, ताकि उसको यह समझने में आसानी हो सके कि पैग़म्बर का यह निशान इंसानी और बशरी ताक़त से ऊंची ताक़त के साथ ताल्लुक़ रखता है और अगर तास्सुब और हठधर्मी रुकावट न हो तो वह बे-अख़्तियार यह इक़रार कर ले कि—

ईं सआ़दत बज़ोरे बाज़ू नेस्त ता न बख़्शद ख़ुदाए बख़्शंदा

और इस तरह हर फ़र्द-बशर पर अल्लाह की हुज्जत पूरी हो जाए।

पस मोजज़ा असल में सीधे-सीधे अल्लाह तआ़ला का काम है जो बिना किसी सबब के एक सच्चे की सच्चाई के लिए वजूद में आता है और वह किसी उसूल और क़ानून पर टिका हुआ नहीं होता कि एक आर्ट (फ़न) की तरह सीखा जा सके और नबी हर वक़्त उसके दिखाने की क़ुदरत रखता हो उस वक़्त तक कि मुख़ालिफ़ को सच्चाई के सामने चैलेंज के तौर पर उसको दिखाने की ज़रूरत पेश न आ जाए, सो जब वह अहम वक़्त आता है और 'नबी' अल्लाह से रुजू करता है तो अल्लाह की ओर से उसको कर दिखाने की ताक़त मिल जाती है, सेहर और जादू के ख़िलाफ़ कि वह एक 'कला' है कि जिसको उसके उसूलों और क़ानूनों की पाबन्दी के साथ हर कलाकार जादूगर हर वक़्त काम में ला सकता है। इसकी वज्हें अगरचे नज़रों से छिपी होती हैं, लेकिन फ़न के तमाम जानने वाले उसे जानते हैं, इसी लिए वे दूसरे इल्मों और फ़नों की तरह तर्तीब दिए हुए नहीं होते, जिनको मिस्रियों, चीनियों

Copyright OfflineDeeniApp

और हिन्दियों ने बहुत आगे बढ़ाया और कमाल दर्जे तक पहुंचा दिया।

यह मसले की इल्मी हैसियत है कि जिससे मोजज़े और जादू की हदें पूरी तरह अलग और नुमायां हो जाती हैं। रहा महसूस करने और देखने-दिखाने का मामला तो 'मोजज़े' और 'जादू' में यह फ़र्क है कि जादूगर की आम ज़िंदगी, डर, दहशत, कष्ट पहुंचाना और बद-अ़मली से जुड़ी होती है और लोग इस नज़र से डर खाते हैं या उसके सामने मर्ऊब हो जाते हैं, नबी और रसूल के ख़िलाफ़ कि उसकी पूरी ज़िंदगी सच्चाई, ख़ुलूस, अल्लाह की मख़्लूक़ की हमदर्दी व ग़मगुसारी और तक़्वा और पाकी से जुड़ी होती है और उसका किरदार बे-दाग़, साफ़ और रोशन होता है और वह मोजज़े को पेशा नहीं बनाता, बल्कि ख़ास अहम मौक़े पर सच्चाई और हक़ की हिमायत में उसे ज़ाहिर करता है और वह ऐसे वक़्त मोजज़ा दिखाता है जबकि दुश्मन भी उसकी पाकी, सच्चाई और किरदार की पाकीज़गी को पहले ही से मानते हैं, मगर उसकी दावत को शक की नज़र से मानते हैं या ज़िद, हठधर्मी और इंकार के पहलू से और फिर उससे मोजज़े की तलब करते हैं, साथ ही अगर जादू और मोजज़े का मुक़ाबला हो जाए तो मोजज़ा ग़ालिब रहेगा और ऊंचे से ऊंचा जादू भी मग़्लूब होगा और आजिज़ होगा और इसके ख़िलाफ़ महाल और नामुम्किन है। चुनांचे जादूगरों और नबियों और रसूलों के मुक़ाबले की तारीख़ इसकी गवाह है।

हासिल यह है कि मूसा को अ़सा और हाथ की सफ़ेदी के निशान (मोजज़े) इसलिए दिए गए कि उनके ज़माने में मिस्र सेहर और जादू का सेंटर था और जादू की कला चोटी पर और मिस्रियों ने तमाम दुनिया के मुक़ाबले में इसको कमाल दर्जे तक पहुंचा दिया था।

मरने के बाद की ज़िंदगी

क़ुरआन मजीद ने मरने के बाद की ज़िंदगी का आम क़ानून तो यह बताया है कि दुनिया की मौत के बाद फिर आख़िरत की दुनिया ही के लिए दोबारा ज़िंदगी मिलेगी, लेकिन ख़ास 'क़ानून' यह है कि कभी-कभी हिक्मत व मस्लहत के पेशेनज़र अल्लाह तआ़ला इस दुनिया ही में मुर्दा को ज़िंदगी

Copyright OfflineDeeniApp

बख़्श दिया करता है और नबियों की मोजज़ों वाली ज़िंदगी में ख़ुद क़ुरआनी गवाही के मुताबिक़ यह सच्चाई कई बार ज़ाहिर होकर सामने आ चुकी है। हज़रत मूसा की नुबूवत के ज़माने में बनी इसराईल के सत्तर सरदारों के दोबारा जी उठने के मौक़े पर यह सूरत सामने आई कि उनके नामाक़ूल और गुस्ताख़ी वाले इसरार पर 'रजआ' के अ़ज़ाब ने उनको मौत के घाट उतार दिया और फिर हज़रत मूसा की इज्ज़ वाली दुआ़ पर अल्लाह की रहमत की वुसअत ने तरस खाया और इन जान से तंग इंसानों को दोबारा ज़िंदगी बख़्श दी।

इसी तरह 'गाय के ज़िब्ह करने' के वाक़िए में मक़्तूल को दोबारा ज़िंदगी बख़्शी। इन वाक़ियों से मुताल्लिक़ हिक्मत व मस्लहत ख़ुद अल्लाह ही बेहतर जानते हैं। इंसानी समझ तो इतना ही कह सकती है कि इसका मक़्सद यह है कि मुतास्सिर होने वाले शुक्रगुज़ार हों और आगे इस क़िस्म की बेजा ज़िद को काम में न लाएं और अल्लाह के सच्चे फ़रमांबरदार बन्दे बनकर रहें। क़ुरआन के साफ़ और खुले बयान के बाद घटिया तावील ग़ैर-ज़रूरी है।

मोजज़ों का ज़्यादा होना

हज़रत मूसा ﷺ के नबी होने के ज़माने में मोजज़ों का ज़्यादा होना नज़र आता है, जिनको दो हिस्सों में बांटा जाता है—

1. क़ुलज़ुम के पार करने से पहले, और
2. क़ुलज़ुम के पार करने के बाद,

क़ुलज़ुम के पार करने से पहले

1. अ़सा (डंडा)
2. यदे बैज़ा (हाथ की सफ़ेदी)
3. सिनीन (अकाल)
4. फलों का नुक़्सान
5. तूफ़ान
6. जराद (टिड्डी दल)
7. क़ुम्मल
8. ज़फ़ादेअ (मेंढक)

Copyright OfflineDeeniApp

9. दम (ख़ून)

10. फ़लक़े बह्र (क़ुलज़ुम नदी का फट कर दो हिस्सों में हो जाना)

क़ुलज़ुम पार करने के बाद

11. मन्न व सलवा

13. ग़माम (बादलों का साया)

13. इन्फ़िजारे उयून (पत्थर से चश्मों का बह पड़ना)

14. नत्क़े जबल (पहाड़ का उखड़ कर सरों पर आ जाना) और

15. तौरात का नाज़िल होना

ऊपर के ज़्यादा-से-ज़्यादा मोजज़ों के सिलसिले में यह भूलना न चाहिए कि सदियों की ग़ुलामी की ज़िंदगी बसर करने और छोटी ख़िदमतों में मश्ग़ूल रहने की वजह से बनी इसराईल की नुमायां ख़ूबियों को घुन लग गया था और मिस्रियों में रहकर मज़हर परस्ती और अस्नाम परस्ती ने उनकी अक़्ल और हवास को इस दर्जा मुअ़त्तल कर दिया था कि वे क़दम-क़दम पर अल्लाह के एक होने और अल्लाह के हुक्मों में किसी करिश्मे का इन्तिज़ार करते रहते, इसके बग़ैर उनके दिल में यक़ीन व ईमान की कोई जगह न बनती थी।

पस उनकी हिदायत के लिए दो ही शक्लें हो सकती थीं—

एक यह कि उनको सिर्फ़ समझाने-बुझाने के मुख़्तलिफ़ तरीक़ों ही से हक़ के क़ुबूल करने पर तैयार किया जाता और पिछले नबियों की उम्मतों की तरह किसी ख़ास और अहम मौक़े पर आयतुल्लाह (अल्लाह की निशानी यानी मोजज़े का मुज़ाहरा पेश आता और दूसरी शक्ल यह थी कि उनकी सदियों की तबाह हुई इस हालत की इस्लाह के लिए रूहानी ताक़त का जल्द-जल्द मुज़ाहरा किया जाए और हक़ और सच्चाई की तालीम के साथ-साथ अल्लाह तआ़ला के तक्वीनी निशान (मोजज़े) इनके क़ुबूल करने और तसल्ली करने की इस्तेदाद को बार-बार ताक़त पहुंचाएं। पस इस क़ौम की पस्त ज़ेहनियत और तबाह हाली के पेशेनज़र अल्लाह की मस्लहत ने उनकी इस्लाह व तर्बियत के लिए यही दूसरी शक्ल अख़्तियार की। *'वल्लाहु अलीमुन हकीम०'* (अल्लाह ही जानने वाला और हिक्मत वाला है।)

Copyright OfflineDeeniApp